राष्ट्रीय दैनिक

प्रात·किरण

पटना एवं दिल्ली से प्रकाशित

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

हर खबर पर पकड़

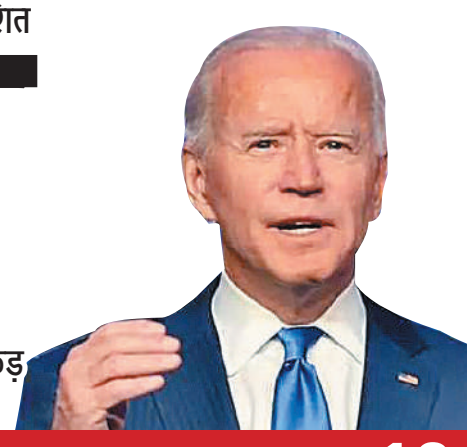

11 टी-20 विश्व कप में सर्वश्रेष्ठ तेज गेंदबाज...

अचानक हमास का नाम भूल गए बाइडन... 12

वर्ष : 11 | अंक : 267 | पटना, शुक्रवार, 09 फरवरी, 2024 | विक्रम संवत् 2080 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

अधिकतम तापमान 17°C
न्यूनतम तापमान 13°C

बाजार

सोना 64,625
चांदी 79,800
सेंसेक्स 71,428
निफ्टी 21,717

संक्षिप्त खबरें

पूर्व महाधिवक्ता शशांक शेखर सिंह भाजपा में शामिल

भोपाल। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की मध्यप्रदेश इकाई के अध्यक्ष विष्णुदत्त शर्मा और अन्य पार्टी नेताओं की मौजूदगी में आज यहां कांग्रेस नेता एवं राज्य के पूर्व महाधिवक्ता शशांक शेखर सिंह भाजपा में शामिल हो गए। प्रदेश संगठन के अनुसार प्रदेश भाजपा कार्यालय में उप मुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ला, पूर्व मंत्री नरोत्तम मिश्रा और जबलपुर महापौर जगतबहादुर अन्नू की उपस्थिति में श्री सिंह भाजपा में शामिल हुए। श्री शर्मा ने भगवा दुपट्टा पहनाकर श्री सिंह को पार्टी में औपचारिक तौर पर शामिल कराया।

हरदा में बारह पटाखा फैक्ट्रियाँ सील

हरदा। मध्यप्रदेश के हरदा में जिला प्रशासन ने पटाखा फैक्ट्री में विस्फोट से हुई जनहानि के दृष्टिगत यहाँ संचालित 12 पटाखा फैक्ट्ररियों को तत्काल प्रभाव से सील कर दिया है। आधिकारिक जानकारी के अनुसार जिला मुख्यालय के बैरागड क्षेत्र में स्थित पटाखा फैक्ट्री में मंगलवार को विस्फोट से हुई जनहानि के परिप्रेक्ष्य में जिला प्रशासन द्वारा जिले में संचालित सभी 12 पटाखा फैक्टरियों को शासन द्वारा जारी दिशा निदेर्शों के पालन एवं मापदंडों के अनुरूप न होने पर तत्काल प्रभाव से सील किया गया। इनमें जिले के ग्राम पीपलपानी, तहसील सिराली की दो, ग्राम कुंजरगावँ, तहसील हंडिया की तीन, ग्राम हंडिया की 1, ग्राम बैरागढ़, तहसील हरदा की चार, ग्राम रहटाखुर्द, तहसील हरदा की ती एवं ग्राम दूधकच्छ, तहसील हरदा की पटाखा फैक्ट्रियां शामिल हैं।

विपक्षी सरकारों के खिलाफ युद्ध छेड़ रहा केन्द्र : केजरीवाल

नईदिल्ली। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने बृहस्पतिवार को केंद्र सरकार पर निशाना साधते हुए उस पर विपक्षी दलों के नेतृत्व वाली राज्य सरकारों के खिलाफ युद्ध छेड़ने का आरोप लगाया। मुख्यमंत्री पिनराई विजयन के नेतृत्व में केरल के वाम लोकतांत्रिक मोर्चा के नेताओं और सांसदों ने बृहस्पतिवार को दिल्ली के जंतर-मंतर पर केंद्र सरकार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया। केजरीवाल ने विरोध प्रदर्शन में हिस्सा लिया। प्रदर्शन में केजरीवाल ने कहा, विपक्षी दल देश के 70 करोड़ लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं। भाजपा ने विपक्ष शासित राज्यों के खिलाफ जंग छेड़ रखी है। केंद्र सरकार विपक्षी सरकारों को परेशान करने के लिए हर हथकंडा अपना रही है। उन्होंने कहा, वह उन्हें निधि देने से वंचित कर रही है, राज्यपालों और उपराज्यपालों के माध्यम से काम में बाधा डाल रही है। वह विपक्षी नेताओं को गिरफ्तार करने के लिए केंद्रीय एजेंसियों का उपयोग करके उन्हें परेशान भी कर रही है। उन्होंने कहा कि प्रदर्शनकारी यहां अपने परिवारों के लिए भीख मांगने या कुछ मांगने नहीं आए हैं।

गजल सम्राट जगजीत के टूटे भवन से ईंट व मिटटी ले जा रहे उनके प्रशंसक

श्रीगंगानगर। गजल की दुनिया के सम्राट रहे जगजीत सिंह का जन्म राजस्थान के श्रीगंगानगर में 8 फरवरी 1941 को हुआ था। वर्तमान में भी जगजीत सिंह का नाम बेहद लोकप्रिय गजल गायकों में शुमार है। लोग आज भी उनकी गजल सुनकर मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। जगजीत सिंह को साल 2003 में भारत सरकार के द्वारा कला के क्षेत्र में पद्म भूषण से भी सम्मानित किया गया था। फरवरी 2014 में गजल सम्राट जगजीत सिंह के सम्मान व स्मृति में दो डाक टिकट भी जारी किए गए थे। उन्होंने शुरूआती शिक्षा श्रीगंगानगर के खालसा स्कूल से प्राप्त की, जिसके बाद पढ़ने के लिए वे जालंधर चले गए।

मुख्यमंत्री ने पटना एयरपोर्ट पर पत्रकारों से की बातचीत, पीएम से मुलाकात को सकारात्मक बताया

प्रदेश में विकास का काम जारी रहेगा चिंता करने की जरूरत नहीं : नीतीश

हम तो दिन-रात काम करने वाले हैं, आगे भी विकास का काम करते रहेंगे

- सब लोगों से काफी अच्छे ढंग से बातचीत हुई है
- बहुमत के सवाल पर मुख्यमंत्री ने कहा, सब ठीक है

प्रात : किरण

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कहा है कि हमलोग बिहार के विकास के लिए वर्ष 2005 से काम कर रहे हैं, तब से निरंतर बिहार में विकास के काम हो रहे हैं इसलिए चिंता करने की जरूरत नहीं है। मुख्यमंत्री गुरूवार को अपने दो दिवसीय दिल्ली दौरे से वापस पटना पहुंचे। इस दौरान पटना एयरपोर्ट पर पत्रकारों से बातचीत की। पत्रकारों द्वारा प्रधानमंत्री से मुलाकात के संबंध में पूछे गये सवाल पर मुख्यमंत्री ने कहा कि मुलाकात काफी अच्छा रहा, बहुत अच्छे ढंग से बातचीत हुई है। हमने अपनी पार्टी के सभी साथियों से भी पूरी बातचीत की है, सब लोगों से काफी अच्छे ढंग से बातचीत हुई है। बिहार विधान सभा में 12 फरवरी को होने वाले फ्लोर टेस्ट में एनडीए सरकार के बहुमत हासिल करने के सवाल पर मुख्यमंत्री ने कहा कि सब ठीक है। हम तो दिन-रात काम करने वाले हैं, आगे भी विकास का काम करते रहेंगे। वहीं, मुख्यमंत्री ने कहा कि मैं आपको पहले ही बता चुका हूं कि हम (भाजपा और जदयू) पहले भी एक साथ थे। बीच में दो बार मैं इधर-उधर गया था। लेकिन, अब एक बार फिर मैं उधर (एनडीए में) आ गया हूं। अब मैं स्थायी रूप से यहीं रहूंगा। इस अवसर पर पूर्व मंत्री एवं विधान पार्षद संजय कुमार झा भी उपस्थित थे।

सीएम ने आडवाणी से की मुलाकात, भारत रत्न मिलने पर दी बधाई

नई दिल्ली। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने बृहस्पतिवार को भाजपा के वयोवृद्ध नेता लाल कृष्ण आडवाणी से मुलाकात की और उन्हें भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न मिलने पर बधाई दी। विपक्षी इंडिया गठबंधन से नाता तोड़कर एक बार फिर से भाजपा के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन में शामिल होने के बाद अपनी पहली दिल्ली यात्रा के दौरान नीतीश कुमार ने बुधवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह और भाजपा के अध्यक्ष जे पी नड्डा से मुलाकात की थी। जनता दल यूनाइटेड के अध्यक्ष नीतीश कुमार ने 2013 के बाद से कई बार भाजपा के साथ संबंध टूटने के बावजूद हमेशा आडवाणी का बहुत सम्मान किया है और वह अक्सर आडवाणी और पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के साथ अपने संबंधों को याद करते रहे हैं। आडवाणी ने 1990 के दशक में नीतीश कुमार के लिए भाजपा का समर्थन जुटाने और उन्हें बिहार में राजग गठबंधन का चेहरा बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

राज्य सभा में सेवानिवृत हो रहे 68 सदस्यों के विदाई कार्यक्रम में बोलें पीएम

देश अमृत काल में समृद्धि की नई ऊंचाइयां छू रहा है, सभी दें योगदान : पीएम मोदी

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को राज्यसभा ने कहा कि देश अमृत काल में समृद्धि की नई ऊंचाइयां छू रहा है और इसे समाज तक ले जाने में सभी को योगदान करना चाहिए। श्री मोदी ने सदन में सेवानिवृत हो रहे 68 सदस्यों के विदाई के कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि राज्यसभा में प्रति दो वर्ष के बाद नए सदस्य आते हैं और पुराने विदा लेते हैं। यह सदन निरंतरता का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि यह सदन प्रति दो वर्ष के बाद नई ऊर्जा अर्जित करता है और अपने कार्यों का निर्वहन पूरा करता है। उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री और सेवानिवृत हो रहे डॉ मनमोहन सिंह का उल्लेख करते हुए कहा कि उनके जीवन से सभी सदस्यों को प्रेरणा लेनी चाहिए। एक सांसद के रूप में अपने कर्तव्यों का निर्माण करते हुए उन्होंने न केवल संसदीय कार्यों को पूरा किया है बल्कि लोकतंत्र को भी मजबूती दी है।

उन्होंने कहा कि देश अमृत काल के दौर में है और देश समृद्धि की नई ऊंचाइयों को छू रहा है। सेवानिवृत हो रहे सदस्यों को इस समृद्धि को समाज के प्रत्येक तबके तक ले जाने में मदद करनी चाहिए। इन सदस्यों के पास अनमोल अनुभव होता है जिसे वे समाज के कल्याण में प्रयोग कर सकते हैं। प्रधानमंत्री ने कोविड काल के दौरान सदन में विभिन्न प्रतिबंधों का उल्लेख करते हुए कहा कि सभी सदस्यों ने इसमें सहयोग किया और राष्ट्र सेवा को सर्वोपरि समझा। उन्होंने पिछले कुछ वर्षों में सदन की कई घटनाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि सदन में फैशन शो भी हुआ और काले कपड़े पहनने का अनुभव भी देखा। उन्होंने कहा है कि देश में नई समृद्धि आ रही है। हमारे यहां अच्छे काम के समय काला टीका लगाने की परंपरा है।

अमृत काल में विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खड़गे काला टीका लगाने का प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने कहा, मैं इसका स्वागत करता हूं। श्री मोदी ने संस्कृत के एक श्लोक का उल्लेख करते हुए कहा कि गुणी व्यक्तियों के साथ रहने से गुण बढ़ जाते हैं जबकि निर्गुण व्यक्तियों के साथ रहने से दोष बढ़ जाते हैं। नदियों का जल तभी तक पीने योग्य होता है जब तक वह बहता रहता है। इसलिए सदस्यों को निरंतर चलते रहने का प्रयास करना चाहिए समाज में अपना योगदान देते रहना चाहिए।

प्रधानमंत्री ने डॉ मनमोहन सिंह को बताया प्रेरणा : राज्यसभा ने गुरुवार को फरवरी और मई के बीच सेवानिवृत्त होने वाले सदन के 68 सदस्यों को उनका कार्यकाल पूरा होने पर विदाई दी। राज्यसभा में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सहित कई सदस्यों ने इन्हें अपने विदाई संदेश में शुभकामनाएं दीं। प्रधानमंत्री ने कहा कि वे आगे भी राष्ट्र सेवा में कार्य करते रहेंगे। यह सदस्य जाते हुए स्मृति की एक विरासत छोड़कर जा रहे हैं। इस दौरान प्रधानमंत्री ने पूर्व प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह के योगदान की सराहना की। उन्होंने कहा कि व्हील चेयर पर भी वे विपक्ष के लिए वोट करने आए थे। उन्हें पता था कि उनका पक्ष हार जाएगा लेकिन फिर भी उनके वोट देने से लोकतंत्र मजबूत हुआ है। उनका छह बार का राज्यसभा में योगदान हम सबको सीख देता है। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव, शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान, पर्यावरण मंत्री भूपेन्द्र यादव, स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मंडाविया और पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह सहित कई नेताओं का कार्यकाल पूरा होने जा रहा है।

छह राज्यसभा सीटों पर चुनाव के लिए अधिसूचना जारी, नामांकन शुरू

- नामांकन पत्र दाखिल करने की प्रक्रिया 15 फरवरी को समाप्त हो जाएगी

प्रात : किरण

पटना/एजेंसी। बिहार की छह राज्यसभा सीट पर चुनाव के लिए निर्वाचन आयोग ने बृहस्पतिवार को अधिसूचना जारी कर दी। इन छह सीटों पर सांसदों का कार्यकाल अगले महीने समाप्त हो रहा है। इसी के साथ राज्यसभा के द्विवार्षिक चुनाव के लिए नामांकन प्रक्रिया भी शुरू हो गई है। नामांकन पत्र दाखिल करने की प्रक्रिया 15 फरवरी को समाप्त हो जाएगी। इन आधा दर्जन सीट में से तीन-तीन सीट राज्य के सत्तारूढ़ राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन और महागठबंधन के पास हैं। जिन सांसदों का मौजूदा कार्यकाल समाप्त होने वाला है उनमें जदयू से वशिष्ठ नारायण सिंह और अनिल हेगड़े, भाजपा से सुशील कुमार मोदी, राजद से मनोज कुमार झा और अशफाक करीम और प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अखिलेश प्रसाद सिंह शामिल हैं। राज्यसभा सीट के लिए मतदान 27 फरवरी को होगा। स्थापित परंपरा के अनुसार मतदान सुबह नौ बजे से शाम चार बजे तक होगा, जबकि मतगणना उसी दिन शाम पांच बजे से होगी। भारतीय जनता पार्टी नीत राजग के तीन उम्मीदवार आसानी से राज्यसभा के लिए निर्वाचित हो सकते हैं। बिहार में भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष और उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने स्पष्ट कर दिया है कि उनकी पार्टी अपने बेहतर संख्या बल को देखते हुए इस बार दो उम्मीदवार मैदान में उतारेगी, जबकि सहयोगी जदयू को एक सीट जीतने में मदद करेगी। वर्ष 2018 के पिछले द्विवार्षिक चुनाव में तत्कालीन वरिष्ठ भागीदार जदयू को दो सीट मिली थीं, जबकि भाजपा को एक सीट मिली थी। भाजपा के आक्रामक रुख को लेकर जदूय के सूत्र फिलहाल मौन हैं और मुख्यमंत्री नीतीश के इशारे की प्रतीक्षा कर रहे हैं। समझा जा रहा है कि नीतीश ने अपने दिल्ली दौरे के दौरान राज्यसभा चुनाव को लेकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और अन्य नेताओं से चर्चा की थी। भाजपा खेमे में सभी की निगाहें दशकों से बिहार में पार्टी के सबसे चर्चित चेहरे सुशील कुमार मोदी पर होंगी, जिनसे जदयू प्रमुख के साथ उनकी कथित निकटता के कारण 2020 में उपमुख्यमंत्री का पद कथित तौर पर छीन लिया गया था। उन्हें पूर्व केंद्रीय मंत्री और लोक जनशक्ति पार्टी के संस्थापक राम विलास पासवान के निधन के बाद खाली हुई सीट से राज्यसभा में भेजा गया था।

खुद को ओबीसी बताकर लोगों को गुमराह कर रहे हैं पीएम : राहुल

प्रात : किरण

रायगढ़/एजेंसी। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने बृहस्पतिवार को भारतीय जनता पार्टी पर निशाना साधा और कहा कि सत्तारूढ़ पार्टी के दो सूत्रीय कार्यक्रम हैं -अन्याय को बढ़ावा देना और नफरत तथा हिंसा फैलाना। राहुल की भारत जोड़ो न्याय यात्रा ओडिशा से छत्तीसगढ़ पहुंची जहां उन्होंने रायगढ़ जिले के रेंगालपाली गांव में एक जनसभा को संबोधित किया। कांग्रेस नेता ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर भी निशाना साधा और दावा किया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का जन्म अन्य पिछड़ा वर्ग से ताल्लुक रखने वाले परिवार में नहीं हुआ और वह खुद को ओबीसी बताकर लोगों को गुमराह कर रहे हैं। उन्होंने कहा, भाजपा के दो सूत्रीय कार्यक्रम हैं अन्याय को बढ़ावा देना और नफरत तथा हिंसा फैलाना। देश में जाति आधारित गणना कराने की पार्टी की प्रतिबद्धता दोहराते हुए राहुल ने कहा,जब मोदी जी कहते हैं कि देश में केवल दो ही जातियां हैं-गरीब और अमीर तो फिर वह ओबीसी कहां से हो गए. ? मोदी जी का जन्म अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) से ताल्लुक रखने वाले परिवार में नहीं हुआ। मोदी जी की जाति घांची को 2000 में गुजरात की तत्कालीन भाजपा सरकार ने ओबीसी (सूची) में शामिल किया था। आपके प्रधानमंत्री ओबीसी नहीं हैं। वह अपनी पहचान ओबीसी के रूप में बताते रहे, लेकिन वह ओबीसी नहीं हैं बल्कि सामान्य श्रेणी से हैं।

प्रधानमंत्री पर राहुल गांधी की टिप्पणी निंदनीय : भाजपा

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। भारतीय जनता पार्टी ने कांग्रेस सांसद राहुल गांधी के उस बयान की निंदा की है, जिसमें राहुल ने प्रधानमंत्री पर जातीय टिप्पणी की थी। भाजपा के वरिष्ठ नेता व लोकसभा सांसद रविशंकर प्रसाद ने गुरुवार को संसद भवन परिसर में मीडिया से बातचीत करते हुए कहा कि राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री पर निजी टिप्पणी कर उन्हें अपमानित किया है। इससे पता चलता है कि कांग्रेस हताश हो चुकी है। उसके पास अब मुद्दे नहीं बचे हैं। प्रधानमंत्री को देश के सभी वर्गों ने स्वीकार किया है जबकि कांग्रेस को देश की जनता ने नकार दिया है। उल्लेखनीय है कि कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने भारत जोड़ो न्याय यात्रा के दौरान एक सभा में कहा कि प्रधानमंत्री मोदी सामान्य जाति से आते हैं। वह तेली जाति में पैदा हुए थे। इस जाति को गुजरात में वर्ष 2000 में ओबीसी में भाजपा ने शामिल किया था। इसलिए प्रधानमंत्री को जातीय जनगणना पर भरोसा नहीं है।

देश में बनाए गए 10 करोड़ से अधिक आयुष्मान भारत हेल्थ अकाउंट

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन के तहत अबतक 10 करोड़ से अधिक आयुष्मान भारत हेल्थ अकाउंट बनाए गए हैं। गुरुवार को स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय की तरफ से जानकारी दी गई है कि देशव्यापी स्वास्थ्य देखभाल को डिजिटाइज करने की पहल के तहत गुरुवार को आभा कार्ड की संख्या 10 करोड़ के पार हो गई है। आयुष्मान भारत हेल्थ अकाउंट, व्यक्तियों को यूनीक हेल्थ कार्ड प्रदान करता है। आभा कार्ड क्या है? आयुष्मान भारत हेल्थ अकाउंट कार्ड के नाम से भी जाना जाने वाला आभा कार्ड भारत सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली हेल्थकेयर पहचान है। यह आपके मोबाइल नंबर और आधार नंबर का उपयोग करके बनाई गई 14-अंकों की पहचान संख्या है। यह कार्ड आपके सभी चिकित्सा इतिहास के लिए एक डिजिटल हब है, जिसमें पिछले डायग्नोस्टिक रिपोर्ट शामिल

गाजीपुर बलिया एक्सप्रेस वे को आरा से जोड़ने की मांग

- परिवहन मंत्री गडकरी से मिले ऊर्जा मंत्री आर के सिंह

प्रात : किरण

आरा। केन्द्रीय ऊर्जा मंत्री आर के सिंह ने गाजीपुर बलिया एक्सप्रेस वे को आरा से जोड़ने के लिए रोड बनाने हेतु केंद्रीय सड़क एवं परिवहन मंत्री नितिन गडकरी एवं एनएचएआई के चेयरमैन से वार्ता की। जानकारी के मुताबिक यह प्रस्ताव पूरी तरह तैयार हो गया है जिसको जल्दी स्वीकृति मिल जाएगी। जिसके फलस्वरूप आरा से दिल्ली जाने में सुविधा होगी। इससे ना सिर्फ आरा वासियों को बल्कि पूरे बिहार वासियों को लाभ मिलेगा। मंत्री ने केंद्रीय रेलमंत्री अश्विनी वैष्णव से मिलकर आरा में रेल परियोजनाओं के बारे में चर्चा की। आरा-बलिया रेल लाइन का सर्वे पारित हो चुका है। इस रेल लाइन के बनने से पूर्वी उत्तर प्रदेश से कनेक्टिविटी और मजबूत तथा आसान हो जाएगी। कुछ और रेलवे सम्बन्धी प्रस्ताव स्वीकृति के क्रम में है। ऊर्जा मंत्री ने जहाजरानी मंत्री सबानंद सोनोवाल से मुलाकात कर महुली घाट और सिन्हा घाट पर जेटी लगाये जाने की मांग की। जहाजरानी मंत्री ने महुली घाट तथा सिन्हा घाट पर जेटी लगाये जाने की मांग की। इसके अलावा महुली घाट पर पुराने पान्टून को बदलकर, नया आधुनिक फोल्डेबल पान्टून लगाये जाने की स्वीकृति भी हुई है। महुली घाट तथा सिन्हा घाट पर रिवर फ्रॉट डेवलपमेंट हेतु केंद्रीय जल शक्ति मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत से मुलाकात कर केन्द्रीय ऊर्जा मंत्री ने अनुरोध किया।

कांग्रेस ने जारी किया ब्लैक पेपर, सरकार की विफलताओं को छिपाने का लगाया आरोप

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। कांग्रेस ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार के खिलाफ बृहस्पतिवार को ब्लैक पेपर जारी किया जिसमें महंगाई, बेरोजगारी, सामाजिक न्याय, किसान और कई अन्य विषयों पर सरकार की विफलताओं का उल्लेख किया गया है। पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने यह ब्लैक पेपर जारी किया। पार्टी ने इसे 10 साल, अन्याय काल नाम दिया है। उन्होंने सरकार और प्रधानमंत्री मोदी पर उनकी विफलतायें छिपाने का आरोप लगाया और कहा कि ऐसे में इस सरकार के खिलाफ ब्लैक पेपर लाने का फैसला किया गया। कांग्रेस ने यह ब्लैक पेपर ऐसे समय जारी किया है जब सरकार संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन के 10 साल के कार्यकाल पर एक श्वेत पत्र जारी करने की घोषणा की है। कांग्रेस अध्यक्ष ने संवाददाताओं से कहा, प्रधानमंत्री मोदी जब भी संसद में अपनी बात रखते हैं तो अपनी विफलताओं को छिपाते हैं। वहीं, जब हम सरकार की असफलताओं के बारे में बोलते हैं, तब उसे महत्व नहीं दिया जाता है। इसलिए हम ब्लैक पेपर निकालकर जनता को सरकार की विफलताओं के बारे में बताना चाहते हैं। उन्होंने दावा किया कि देश में सबसे बड़ा मुद्दा बेरोजगारी है, लेकिन मोदी सरकार इसकी बात कभी नहीं करती। खरगे ने कहा कि सरकार हमेशा अपने 10 साल के कार्यकाल की तुलना संप्रग सरकार से करती है, लेकिन पंडित जवाहरलाल नेहरू और कांग्रेस की उपलब्धियों के बारे में कभी नहीं बताती। उन्होंने सरकार पर विपक्षी पार्टियों के शासन वाले राज्यों के साथ भेदभाव का आरोप लगाया। खरगे ने सरकार पर रोजगार के मोर्चे पर विफल रहने का आरोप लगाया और कहा, दो करोड़ नौकरियों देना, किसानों को एमएसपी सुनिश्चित करना मोदी की गारंटी थी। वह इन्हें पूरा नहीं कर सके और अब नई गारंटी लेकर आ गए हैं।

समारोह — **राष्ट्रपति ने राष्ट्रपति भवन में विविधता का अमृत महोत्सव का किया उद्घाटन**

पूर्वोत्तर बहुमूल्य प्राकृतिक सुंदरता, प्रतिभाशाली लोगों से समृद्ध है : मुर्मू

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने बृहस्पतिवार को कहा कि पूर्वोत्तर बहुमूल्य प्राकृतिक सुंदरता से भरपूर है और वहां के लोगों में अद्भुत प्रतिभा है जो उनके नृत्य, संगीत, वेशभूषा, हस्तशिल्प और व्यंजनों में दिखाई देती है। राष्ट्रपति भवन में विविधता का अमृत महोत्सव का उद्घाटन करते हुए राष्ट्रपति मुर्मू ने कहा कि पूर्वोत्तर में भारतीय संस्कृति के कई खूबसूरत और विविध रूप देखने को मिलते हैं। मुर्मू ने कहा कि यह बहुत खुशी की बात है कि विविधता का अमृत महोत्सव का पहला संस्करण पूर्वोत्तर के उत्सव के साथ शुरू किया जा रहा है। राष्ट्रपति भवन द्वारा जारी एक बयान में मुर्मू के हवाले से कहा गया, पूर्वोत्तर को बहुमूल्य प्राकृतिक सुंदरता का आशीर्वाद प्राप्त है। वहां के लोगों में अद्भुत प्रतिभा है जो नृत्य, संगीत, वेशभूषा, हस्तशिल्प और व्यंजनों में दिखाई देती है। राष्ट्रपति ने कहा कि भारत की सांस्कृतिक विविधता ही उसकी ताकत है। मुर्मू ने कहा, यह हमारी सौम्य शक्ति है। इस विविधता का जश्न मनाने से हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और उसमें निहित एकता का प्रदर्शन और अनुभव दोनों होगा। उन्होंने विश्वास जताया कि इस महोत्सव में बड़ी संख्या में लोग आएंगे और पूर्वोत्तर की सांस्कृतिक ऊर्जा का अनुभव करेंगे। भारत की समृद्ध विविधता का जश्न मनाने और प्रदर्शित करने के लिए राष्ट्रपति भवन में विविधता का अमृत महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। इस महोत्सव को सात विशिष्ट संस्करणों-पूर्वोत्तर, दक्षिण, उत्तर, पूर्व, पश्चिम, मध्य क्षेत्र और केंद्र शासित प्रदेश के रूप में बांटा गया है। इस महोत्सव का पहला संस्करण उत्तर-पूर्व पर केंद्रित है। यह महोत्सव असम, अरुणाचल प्रदेश, नगालैंड, मणिपुर, त्रिपुरा, मिजोरम, मेघालय और सिक्किम की सुंदरता, समृद्ध विरासत और जीवंत संस्कृतियों को प्रदर्शित करता है। यह महोत्सव आम जनता के लिए 8 से 11 फरवरी तक सुबह 10 बजे से रात 8 बजे तक खुला रहेगा।

संक्षिप्त खबरें

मुख्य पार्षद प्रतिनिधि टुनटुन यादव ने वार्डों का किया निरीक्षण

फतुहा। गुरुवार को नगर परिषद क्षेत्र के मुख्य पार्षद प्रतिनिधि टुनटुन यादव अपने समर्थकों के साथ वार्ड नंबर 06 वार्ड नंबर 07, वार्ड नंबर 09 और वार्ड नंबर 10 का भ्रमण किया। भ्रमण के दौरान वार्डों में नवनिर्मित सड़क, निर्माण हो रहे सड़क का जायजा लिया और जहां सड़क का निर्माण होना है उन्हें चिन्हित किया गया। इस दौरान टुनटुन यादव ने वार्ड के लोगों से मिलकर उनका हाल-चाल भी जाना। लोगों ने उन्हें खूब सराहा और आशीर्वाद देते हुए कहा कि फतुहा नगर परिषद क्षेत्र आपके कार्यकाल में काफी विकसित हो रहा है। वहीं मुख्य पार्षद प्रतिनिधि टुनटुन यादव ने कहा कि कई वार्डों में करोड़ों की लागत से सड़क और नाले का निर्माण कराया गया है।

हथकड़ी के साथ चोर हुआ फरार

दानापुर। नगर के खगौल थाना क्षेत्र के अंतर्गत मोबाइल चोरी के मामले में गिरफ्तार बंदी जेल जाने के दौरान दानापुर अस्पताल मोड़ के पास पुलिस को झांसा देकर हथकड़ी के साथ फरार हो गया। घटना के बाद बंदी को लेकर दोनो सिपाही खगौल पहुंच इसकी जानकारी दी। बंदी के फरार होने की खबर मिलते ही पुलिस छापेमारी में जुटी गयी। बताया जाता है कि खगौल पुलिस ने मोबाइल चोरी के मामले में इमामगंज निवासी कुंदन कुमार को गिरफ्तार रेलवे स्टेशन के पास से किया था। उसके पास से मोबाइल एवं एक बाइक बरामद किया गया था। जिसमें पुलिस ने उसे गुरुवार को न्यायालय भेजा गया था। न्यायिक से उसे दानापुर उपकारा भेजा गया। जहां से मेडिकल रिपोर्ट के लिए अनुमंडलीय अस्पताल लेकर खगौल पुलिस पहुंची थी। अस्पताल में चिकित्सक ने खगौल अस्पताल का रिपोर्ट लाने को कहा। जिसके बाद कुदंन को लेकर खगौल थाना की दो पुलिस कर्मी लेकर खगौल जाने लगे इसी क्रम में ऑटो से कुंदन कुमार रस्सी काट हथकड़ी के साथ हुआ फरार।

मजिस्ट्रेट व बल की रही तैनाती

पटना सिटी (प्राकि)। प्रबंधक कमेटी, तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब की बैठक गुरुवार को सुरक्षा-व्यवस्था के बीच हुई। इस दौरान कमेटी के महासचिव इंद्रजीत सिंह के आग्रह पर एसडीओ गुंजन सिंह ने बैठक के लिए दो मजिस्ट्रेट और पुलिस बल की प्रतिनियुक्ति की थी। इसमें पथ निर्माण विभाग के सहायक अभियंता रजनधारी सिंह और पटना सदर के सहकारिता प्रसार पदाधिकारी श्रीमती सीमा बतौर मजिस्ट्रेट थीं। वहीं चौक थाना के थानाध्यक्ष शशि कुमार राणा और एसआई सुदेश्वर पासवान पुलिस बल के साथ विधि-व्यवस्था संधारण के लिए मौजूद थे। कमेटी की बैठक तय समय से शुरू होकर अपराह्न करीब चार बजे समाप्त हुई।

अमावस्या पर दादी जी का किया गया मंगल पाठ, भजनों भी गाया

पटना सिटी। श्री दादी जी भक्त मंडल एवं श्री नारायणी महिला मंडल के संयुक्त तत्वावधान में अमावस्या महोत्सव का आयोजन मिरचाई गली स्थित श्री राणी सती दादी मंदिर में हुआ। आचार्य मुकेश शर्मा खाटूवाले की देखरेख में श्री दादी जी की पूजा-अर्चना की गई। इस दौरान श्री दादी जी का भव्य आलौकिक श्रृंगार किया गया था। 101 महिलाओं के द्वारा राजस्थानी परिधानों में सामूहिक मंगल पाठ किया गया।

घर का ताला तोड़ जीतू लाल लेन में चोरी, मामला दर्ज

पटना सिटी। चौक थाना क्षेत्र के जीत लाल लेन में बंद घर का ताला तोड़ चोरों ने चोरी की घटना को अंजाम दिया है। चोरी की घटना प्रमोद मिश्रा के घर में हुईहै। वह श्री जल्ला हनुमान मंदिर, बेगमपुर परिसर में नैवेद्यम की दुकान चलाते हैं। घर के सभी सदस्य घर में ताला बंद कर शादी समारोह में भाग लेने के लिए गए हुए थे। गुरुवार को जब वह सब वापस लौटे, तो घर का ताला टूटा हुआ था। जब वह सब घर में प्रवेश किए, तो देखा कि सभी कमरे और गोदरेज अलमारी का ताला टूटा हुआ था। सामान भी बिखरा पड़ा हुआ था। मकान मालिक के अनुसार गोदरेज अलमीरा में नकद सहित सोने-चांदी के जेवर, कीमती बर्तन, टीवी, महंगा कपड़ा आदि चोरी कर ली गई है। बताया जाता है कि नगद करीब डेढ़ लाख रुपया रखा हुआ था। चोरी की पूरी घटना सीसीटीवी में कैद हो गई है।

तख्तश्री कमेटी का चुनाव टला, बैठक में वोटरलिस्ट को अनुमोदन नहीं

एक माह में चुनाव प्राधिकार को देंगे सूची, तैयारी में त्रुटियां बता किया अस्वीकृत

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

प्रबंधक कमेटी, तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब का चुनाव एक बार फिर टल गया। इसके पीछे का कारण तैयार मतदाता सूची का गुरुवार को हुई बैठक में अनुमोदित नहीं किया जाना रहा। बैठक में बताया गया कि जो भी वोटर लिस्ट बना है, उसमें गंभीर त्रुटियां हैं। इस कारण से कमेटी ने उसे अस्वीकृत कर दिया है। अब नए सिरे से एक माह में फ्रेश वोटर लिस्ट बनाने के बाद बिहार राज्य चुनाव प्राधिकार को सौंपा जाएगा, ताकि वह चुनाव करा सके। इसके पूर्व बैठक की अध्यक्षता जगजोत सिंह सोही की अध्यक्षता में हुई। महासचिव इंद्रजीत सिंह ने बैठक के एजेंडा को सामने रखा। बैठक में 10 में से नौ सदस्य मौजूद थे। इसमें अध्यक्ष जगजोत सिंह, वरीय उपाध्यक्ष लखविंदर सिंह, कनीय उपाध्यक्ष गुरविंदर सिंह, महासचिव इंद्रजीत सिंह, सचिव हरबंश सिंह के अलावा सदस्य राजा सिंह, डॉ गुरमीत सिंह, महेंद्रपाल सिंह ढिल्लन और हरपाल सिंह जौहल थे। बैठक में सदस्य गोविंद सिंह लोंगोवाल शामिल नहीं हुए। वहीं कमेटी का एक गुट चरणजीत सिंह को, जबकि दूसरा गुट हरपाल सिंह जौहल को सदस्य मानता है। इसे लेकर भी विवाद कायम है। बैठक के बाद कनीय उपाध्यक्ष गुरविंदर सिंह की मौजूदगी में सदस्य डॉ गुरमीत सिंह ने कहा कि अब तक जो भी लिस्ट बना है, उसमें गंभीर त्रुटियां रही हैं। इस कारण से उसे बैठक में अस्वीकृत कर दिया गया है। जब उनसे यह सवाल किया गया कि जब मतदाता सूची बनाया जा रहा था, तो पांच निर्वाचन क्षेत्र से निर्वाचित पदाधिकारी या सदस्य के साथ चुनाव लड़ने वाले संभावित प्रत्याशियों को भी सूची तैयार करने की जिम्मेदारी दी गई थी। इसके बाद कमेटी के पदाधिकारी ने निर्वाचन क्षेत्र में लोगों को भेज कर जांच भी कराई। यदि वोटर लिस्ट में गंभीर त्रुटियां थी, तो इस बीच इस बारे में आवाज क्यों नहीं उठाया गया। इस पर डॉ गुरमीत सिंह का कहना था कि जिस निर्वाचन क्षेत्र के जो प्रतिनिधि हैं और जो चुनाव लड़ने वाले हैं, उन्हें ही लिस्ट बनाने की जिम्मेदारी सौंप दी गई। यही गलत था। यह पूछे जाने पर कि जब यह गलत था, तो आखिर इतने माह से इस पर सवाल क्यों नहीं उठाया गया। इस पर उनका कहना था कि त्रुटि का निवारण कर संबंधित पांच निर्वाचन क्षेत्र में दूसरे निर्वाचन क्षेत्र के पदाधिकारी, सदस्यों या स्वतंत्र संगत को भेज कर सूची बनवाई जाएगी। कमेटी के चुनाव में उसी को वोटर बनाया जाएगा, जो अमृतधारी हैं। अनेक मामले ऐसे भी हैं, जिसमें पति अमृतधारी है, तो पत्नी नहीं है। उसके बाल-बच्चे अमृतधारी नहीं हैं, मगर उनका नाम मतदाता सूची में है। उन्होंने बताया कि अन्य फुटकर में चर्चा हुई कि छह अगस्त, 23 को जो बैठक हुई थी, उसकी संपुष्टि की गई। यह संशोधन किया गया कि कमेटी ने जो 1,200 की बढ़ोतरी महंगाई को लेकर की थी, उसे अध्यक्ष और महासचिव ने भुगतान किया था। बाद में दो हजार पास किया गया था, उसे समाप्त कर दिया गया है और 1,200 ही उन सबों को दिया जाएगा। एक चर्चा बाड़े की गली स्थित स्कूल को कंगन घाट में बन रहे भवन में शिफ्ट करने और स्कूल की जगह रिहाइश बनाने पर भी चर्चा की गई। साथ ही तख्तश्री पटना साहिब के आसपास यदि कोई जमीन बिक रही हो, तो उसे खरीदने के बारे में भी निर्णय लिया गया है। हालांकि बैठक के समाप्त होते ही अध्यक्ष जगजोत सिंह जरूरी काम बताते हुए मीडिया से बात किए बिना चल दिए। कनीय उपाध्यक्ष भी मीडिया से मुखातिब नहीं हुए। वहीं वरीय उपाध्यक्ष, महासचिव और सचिव बैठक हॉल से बाहर निकलते हुए कहा कि उन सबों ने बैठक का बहिष्कार कर दिया है।

8 माह से वोटर लिस्ट तैयार, कोरम के अभाव में संपुष्टि नहीं

प्रबंधक कमेटी, तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब की बैठक समाप्त होने के बाद तीन पदाधिकारी महासचिव के कक्ष में बैठे। इस दौरान महासचिव इंद्रजीत सिंह, सचिव हरबंश सिंह और वरीय उपाध्यक्ष लखविंदर सिंह मौजूद थे। प्रेस मीडिया से बात करते हुए तीनों ने कहा कि गुरुवार को हुई बैठक में चुनाव को टालने का बहुमत प्राप्त लोगों के द्वारा प्रयास किया गया। वे तीनों पदाधिकारी चुनाव कराने के पक्ष में हैं। पिछले आठ माह से अधिक समय से वोटर लिस्ट बन कर तैयार है। इसमें हर क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने वाले और प्रत्याशी को साथ लेकर वोटर लिस्ट बनाया गया है। दावा-आपत्ति में भी सबों के राय-विचार से काम किया गया है। पटना उच्च न्यायालय और बिहार राज्य चुनाव प्राधिकार के पत्र के आलोक में अध्यक्ष की सहमति से एकमात्र एजेंडा वोटर लिस्ट के अनुमोदन पर गुरुवार को बैठक हुई। जब तैयार मतदाता सूची को पास करने की बात चली, तो कुछ सदस्यों की आपत्ति आ गई। ऐसे सदस्यों का कहना था कि वोटर लिस्ट सही नहीं बना है। अब इसे नए सिरे से बनाने की बात कही गई है। इससे साफ है कि चुनाव को कुछ सदस्यगण लंबे समय तक टालने की साजिश कर रहे हैं, ताकि वे सत्ता की कुर्सी से चिपक मलाई काटते रहें। हलका संख्या एक से तीन, उत्तरी बिहार एवं दक्षिणी बिहार की पूरी मतदाता सूची पारदर्शिता के साथ दावा-आपत्ति का निष्पादन करते हुए तैयार किया गया था। दरअसल उन्हें पांच सदस्यों के कोरम पूरा करने में परेशानी हो रही है। इसी का बेजा लाभ दूसरा गुट उठा रहा है। इससे साफ है कि चुनाव को लंबे समय तक टालने की साजिश की जा रही है। इस संबंध में तीनों पदाधिकारी के द्वारा कहा गया कि वह सब एक-दो दिनों में आगे की रणनीति तय करते हुए पटना हाईकोर्ट और चुनाव प्राधिकार को भी स्थितियों से अवगत कराने का काम करेंगे। मीडिया के समक्ष इस बाबत घोषणा भी करेंगे।

तैयार वोटरलिस्ट

हलका-1 :	1584
हलका-2 :	885
हलका-3 :	1247
साउथ बिहार :	139
नार्थ बिहार :	43
कुल	3898

सरस्वती पूजा को लेकर शांति समिति की बैठक की गई

प्रात : किरण संवाददाता

दानापुर ।व शाहपुर थाना के प्रांगण में शांतिपूर्ण सरस्वती पूजा सम्पन्न कराने को लेकर दोनों थाने में शांति समिति के बैठक का आयोजन किया गया। थानाध्यक्ष पूनम कुमारी व मुकेश कुमार आनंद के अध्यक्षता में आयोजित बैठक में सदस्यो ने अपने विचार व सुझाव दिया थानाध्यक्ष पूनम कुमारी ने बताया की सरस्वती पूजा का लाइसेंस लेना आई आवश्यक है जो लोग लाइसेंस नहीं लेंगे उन्हें पूजा बैठाने की अनुमति नहीं दी जाएगी। सभी सदस्यो ने शांतिपूर्ण सरस्वती पूजा सम्पन्न कराने को लेकर सहयोग की बात कही। थानाध्यक्ष ने बताया कि आपके सुझाव पर विशेष रूप से ध्यान दिया जायेगा। आपका सहयोग जरूरी है। उन्होने लोगो से अफवाह पर ध्यान नही देने एवं कोई भी सूचना हो तो देने की बात कही। ताकि समय रहते समस्या को दूर किया जाये। पूजा के दौरान अश्लील गाना पर प्रतिबंध रहेगा। विधा की देवी का आप सभी पूजा करे एवं शांतिपूर्ण त्योहार मनाये पुलिस प्रशासन आपके साथ है। बैठक में मुखिया राजेन्द्र बेलदार, समाजसेवी बृज कुमार, मनीन्द्र राय, कन्हाई राय, पार्षद प्रतिनिधि मनोज मास्टर, निरंजन कुमार, नरेश कुमार समेत पूजा समिति के सदस्य उपस्थित थे।

शिविर में मिला चिकित्सकीय लाभ

पटना सिटी (प्राकि)। राष्ट्रीय शहरी स्वास्थ्य मिशन के तहत शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, आलमगंज की ओर से मस्त शिविर का आयोजन गुरुवार को किया गया। वार्ड 53 के डंका इमली स्थित राजकीय मध्य विद्यालय मिरदाहा टोली में शिविर निःशुल्क लगा था। इसमें बीपी, शुगर जांच की सुविधा एवं परिवार नियोजन के बारे में भी चिकित्सकीय लाभ लेने आने वालों को बताया गया। शिविर का उद्घाटन वार्ड पार्षद किरण मेहता ने करते हुए कहा कि इस तरह का शिविर हमेशा महीने में कम से कम दो बार आयोजित होना चाहिए, ताकि आम गरीब लोगों का भी उचित इलाज हो सके। सभी मरीजों को जेनरल फिजिशियन डॉ गौसिया अहसन ने उचित परामर्श दिया। शिविर में मेडिकल टीम ने 137 लोगों का स्वास्थ्य जांच कर मुफ्त दवा का भी दिया गया। इसमें सफाई निरीक्षक गौतम कुमार, चुनचुन कुमार आदि उपस्थित थे।

तख्त साहिब में निर्माण स्थल की मिट्टी धंसी, जख्मी खतरे से बाहर

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब परिसर में संगतों के लिए आवास का निर्माण किया जा रहा है। बन रहे यात्री निवास के बेसमेंट की ढलाई के बाद बीम खड़ा कर दिया गया था। इसके आगे का काम चल रहा था। अचानक से निर्माण कार्य के पश्चिम की ओर मिट्टी धंस गई। इस घटना में एक श्रमिक गिर गया। शोर होते ही लोग जुटे। कमेटी की हो रही मीटिंग के दौरान मौजूद चौक थाना के थानाध्यक्ष शशि कुमार राणा और एसआई सुदेश्वर पासवान भी पहुंचे। थोड़ी सी मिट्टी हटाने के बाद ही श्रमिक को बाहर निकाला गया। मौके पर मौजूद एंबुलेंस पर कमेटी कार्यालय के मैनेजर हरजीत सिंह एवं अन्य उसे इलाज के लिए अगमकुआं-पहाड़ी रोड स्थित निजी नर्सिंग होम ले गए। यहां उसका इलाज चल रहा है। वह खतरे से बाहर बताया जाता है। उसकी पहचान उत्तर प्रदेश के लखीमपुर खीरी के चितलहवा का रहने वाला रामू के रूप में की गई। संत समागम में पंजाब के सुलतानपुर लोदी से पहुंची सुमित कौर घटना के बाद बदहवास दिखाई दी। उसने बताया कि वह पास में ही थी कि अचानक मिट्टी धंसने से दो लोग गिर गए।

पूजा के दो दिनों में करें प्रतिमा का विसर्जन, उदंडता अक्षम्य

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

छात्रावास में रहने वालों का डिटेल दें, विसर्जन कृत्रिम तालाब में

इस बार बसंत पंचमी पर सरस्वती पूजा 14 फरवरी को होनी है। पूजा को शांतिपूर्वक संपन्न कराने के लिए अनुमंडलीय शांति समिति की बैठक गुरुवार को अपराह्न में हुई। इसमें सिटी एसपी पूर्वी भरत सोनी, एसडीओ गुंजन सिंह और एएसपी सरथ आरएस ने भाग लिया। बैठक के दौरान पुलिस प्रशासन के अधिकारियों ने स्पष्ट तौर पर कहा कि पूजा के दो दिनों में हर हाल में स्थापित की गई भगवती सरस्वती की प्रतिमा का विसर्जन हर हाल में कर देना है।

सभी छात्रावास, लॉज एवं पूजा समिति को बारी-बारी से जानकारी लेते हुए चेतावनी दी गई की विसर्जन जुलूस में उदंडता कतई बर्दाश्त नहीं की जाएगी। ऐसा करने वालों पर तत्काल कानूनी कार्रवाई की जाएगी। हर पूजा समिति को लाइसेंस लेना होगा और उसमें दिए गए निर्देश का अनुपालन करते हुए निर्धारित तिथि, समय एवं मार्ग से नजदीकी गंगा घाटों अथवा की कृत्रिम तालाब में प्रतिमा का विसर्जन किया जाएगा। लाइसेंस को आवेदन के साथ पूजा समिति के सदस्यों का आधार कार्ड व फोटो भी लगा कर संबंधित थाना में जमा करेंगे। सड़क एवं गली के रास्ते में पंडाल बनाना, मूर्ति स्थापित करना एवं डीजे बजाने पर पूरी तरह से रोक है।

लाउडस्पीकर रात 10 बजे से लेकर सुबह छह बजे के बीच पूरी तरह से प्रतिबंधित रहेगा। सरस्वती पूजा के नाम पर जबरन चंदा वसूली करने वालों की सूचना मिलने पर एफआईआर दर्ज कर कार्रवाई की जाएगी। सैदपुर छात्रावास सहित अन्य छात्रावास में रहने वाले छात्रों को आधार कार्ड, फोटो, पहचान पत्र के साथ जिस जिला के वे रहने वाले हैं, वहां का स्थाई पता भी देना होगा। बैठक में सभी थाना के थानाध्यक्ष के अलावा शांति समिति के सदस्यों में वार्ड पार्षद बैजू लाल दास, गणेश कुमार, संजय अलबेला, रमेश रजक, मोहम्मद जावेद, बाबू भाई, मनोज शर्मा, मुकेश ठाकुर, मो शाहिद, रामजी योगेश, हेदायत अहमद, डॉ राजीव गंगौल, राजेश कुमार शुक्ला टिल्लू, मुन्ना सरकार, संजय मालाकार, धर्मेंद्र प्रसाद मुन्ना, अंजू सिंह, मो फिरोज हसन, बसी अख्तर, अंजुम आलम, प्रमोद मिश्रा, राजा हसन आदि मौजूद थे।

ओबीसी आरक्षण का विरोधी रही है कांग्रेस : प्रभाकर मिश्र

पटना। भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता प्रभाकर कुमार मिश्र ने कहा कि कांग्रेस ने आरक्षण के मसले पर सिर्फ हवाबाजी की है। कांग्रेस कभी नहीं चाहती कि पिछड़े वर्ग को आरक्षण मिले। यह सिर्फ कांग्रेस की आज की बात नहीं है, नेहरू भी आरक्षण देने के पक्ष में नहीं थे। बाबा साहेब डॉ भीमराव आंबेडकर नहीं होते, तो आरक्षण लागू नहीं होता। श्री मिश्र ने गुरुवार को प्रेस विज्ञप्ति जारी कर कहा कि कांग्रेस के लोग तो बाबा साहेब को भारत रत्न देने को भी तैयार नहीं थे। भाजपा के सहयोग से सरकार बनी, तो बाबा साहेब को भारत रत्न दिया गया। कांग्रेस ने दलितों और पिछड़ों को हमेशा राजनीति में हाशिये पर रखा और उचित भागीदारी नहीं दी। कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे सीताराम केसरी के साथ कांग्रेस ने कैसा सलूक किया।

दो जविप्र के यहां से 102 राशन कार्ड में फर्जी यूनिट

वार्ड 70 के पार्षद ने गलती पकड़ कार्रवाई को डीएम व एसडीओ को भेजा

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

नगर निगम के वार्ड संख्या 70 के दो जनवितरण प्रणाली की दुकान में 102 राशन कार्ड में फर्जी पाया गया है। यह आधार से नहीं जुड़ा है। कार्डधारी को जितने परिवार के सदस्य का नाम का आधार कार्ड जमा है, उसका राशन उसे देता है। बाकी जिसका आधार जमा नहीं है, उसका राशन दुकानदार कालाबाजारी कर देता है। जैसे ही कार्डधारी के द्वारा इस संबंध में शिकायत पार्षद विनोद कुमार को की गई। उन्होंने इसे गंभीरता से लिया। इसके बाद पार्षद ने व्यक्तिगत रूप से जाकर दो जनवितरण प्रणाली की दुकान की जांच की। इस दौरान गलतियां पाई गईं। 102 राशन कार्ड में फर्जी यूनिट है। उन सबों का राशन संबंधित जनवितरण दुकानदार के द्वारा निकाल लिया जाता है। राशन कार्ड में परिवार का नाम सीडिंग नहीं है। जिस परिवार का राशन कार्ड में आधार सीडिंग नहीं है, उनके दूसरे राशन कार्ड में अंकित है या जो मृत व्यक्ति है, जबकि राशन कार्डधारी को जितना आधार नंबर सीडिंग है, उतना ही राशन दुकानदार ग्राहकों को देता है। बाकी राशन दुकानदार के द्वारा हड़प लिया जाता है। कुछ राशन कार्ड में दूसरे परिवार के नाम को भी सीडिंग कर दिया गया है। यह पूरी तरह से फर्जी है। उन सभी फर्जी यूनिट को दुकानदार राशन की फर्जी निकासी कर ले रहा है। इसके कारण सरकार का काफी खाद्यान्न राशन दुकानदार कालाबाजारी कर रहे हैं। वार्ड पार्षद विनोद कुमार ने इस संबंध में डीएम और पटना सिटी के एसडीओ को पत्र भेजा है। साथ ही उसे पत्र के साथ 102 राशन कार्ड की छाया प्रति भी संलग्न करते हुए कार्रवाई किए जाने की बात कही है। पार्षद विनोद कुमार का कहना है कि उनके वार्ड में अभी सिर्फ दो दुकानदार के यहां का राशन कार्ड की जांच की गई है। अन्य दुकानदारों के यहां भी जांच किए जाने के बाद और भी फर्जी राशन कार्ड और यूनिट उजागर होगा।

नीतीश कुमार जिधर भी रहे हमेशा अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा की: सलीम परवेज

पटना। बिहार राज्य मदरसा शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष सलीम परवेज ने कहा है कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार जिस गठबंधन में रहे, उन्होंने अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा की और अल्पसंख्यकों के अधिकारों के साथ कोई समझौता नहीं किया.उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने अल्पसंख्यकों के लिए जितना किया है, उतना किसी ने नहीं किया। उन्होंने कहा कि अल्पसंख्यकों खासकर मुसलमानों को नीतीश कुमार के साथ मजबूती से खड़ा रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि राज्य के विकास के लिए नीतीश कुमार ने जो निर्णय लिया है, वह सराहनीय है। उन्होंने कहा कि इससे पहले भी नीतीश कुमार ने एनडीए के साथ रहते हुए भी अल्पसंख्यकों के कल्याण और विकास के लिए कई उल्लेखनीय काम किए हैं और यह आगे भी जारी रहेगा।

झलक दिखला जा के प्रतिभागी सागर को वोट कर विजेता बनाने का संकल्प

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

जिस स्कूल में पढ़ा वहां के शिक्षक व सहपाठियों में जोश

सोनी इंटरटेनमेंट चैनल पर चलने वाला कार्यक्रम झलक दिखला जा के प्रमुख प्रतिभागी और इस विद्यालय का छात्र सागर पारिख के समर्थन को कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें उसकी मां श्रीमती हेतल पारिख को भी विशेष रूप से आमंत्रित किया गया था। कार्यक्रम में विद्यालय के शिक्षक एवं शिक्षिकाओं सहित छात्र-छात्राओं ने उसे सर्मथन देने को वोट देने का संकल्प लिया।उनसबों ने पटना, बिहार एवं भारतवासी से भी यह आग्रह किया कि हम सब मिलकर सागर को सोनी लिव ऐप पर जाकर वोट करके जिताएं। सागर की मां हेतल पारिख ने कहा कि उसके बेटे सागर को सांस्कृतिक कार्यक्रम में आगे बढ़ने की प्रेरणा इसी विद्यालय से मिली। उन्होंने कहा कि वह बचपन में काफी शर्मिला था। इसी स्कूल में पहली बार वह श्री कृष्ण की भूमिका में अभिनय किया था। उसी भूमिका से धीरे-धीरे वह आगे बढ़ कर आज इस मुकाम तक पहुंचा है। विद्यालय के उपनिदेशक अभिषेक पैट्रिक ने कहा कि जब अपना बच्चा राष्ट्रीय स्तर के किसी मंच पर पहुंचता है, तो दिलीप खुशी होती है। वे सब अपने मोबाइल पर सोनी लिव ऐप डाउनलोड करें और उसके समर्थन में वोट करें। एक बार में आप 50 वोट दे सकते हैं। साथ ही अपने रिश्तेदार एवं मित्रों से भी इसके लिए आग्रह करें, जिससे वोट उसके समर्थन में अधिक जाए और वह इस कार्यक्रम का विजेता बने।

पटना एम्स में स्वच्छता और संक्रमण नियंत्रण को बढ़ावा देने के लिए पहल कायाकल्प आयोजित

केंद्रीय कायाकल्प टीम ने स्वास्थ्य सुविधा की निगरानी और मूल्यांकन किया

प्रात :किरण संवाददाता

पटना। एम्स में स्वच्छता और संक्रमण नियंत्रण प्रथाओं को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार की पहल कायाकल्प 2023-2024 का केंद्रीय बाह्य मूल्यांकन 7 और 8 फरवरी को आयोजित किया गया। डॉ. दिनेश पॉल, पूर्व सलाहकार, एनटीएजीआई, एनआईएचएफडब्ल्यू, ने उस टीम का नेतृत्व किया जिसमें डॉ. धर्मेंद्र कुमार, डीएमएस, एम्स रायबरेली और डॉ. कंचन तनेजा, विशेषज्ञ, डीजीएचएस, दिल्ली शामिल थे। केंद्रीय कायाकल्प टीम ने एम्स पटना के अपने दो दिवसीय दौरे के दौरान स्वास्थ्य सुविधा की निगरानी और मूल्यांकन किया। टीम ने चिकित्सा अधीक्षक और चिकित्सा अधिकारियों, अस्पताल के अन्य स्टाफ सदस्यों के साथ बातचीत की। टीम ने विभिन्न विभागों का भी दौरा किया और विभागाध्यक्षों, नर्सों, सुरक्षा और स्वच्छता सेवाओं के प्रमुखों के साथ इंटरैक्टिव सत्र आयोजित किए और मरीजों की प्रतिक्रिया और उनके कई सुझावों पर गौर किया, जो गुणवत्तापूर्ण अस्पताल प्रबंधन, नैदानिक प्रथाओं, संक्रमण नियंत्रण उपाय, स्वच्छता प्रक्रियाएं और रोगी-केंद्रित उच्च गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य देखभाल प्रावधान पर थे।टीम ने मोटे तौर पर सात विषयगत क्षेत्रों का मूल्यांकन किया जिसमें शामिल हैं: अपशिष्ट प्रबंधन, स्वच्छता और साफ-सफाई, संक्रमण नियंत्रण प्रथाएँ इत्यादि। इसमें मरीजों को चौबीसों घंटे सेवाएं प्रदान करने और स्वच्छता मानकों को बनाए रखने के लिए काम करने के अनुभव का भी आकलन किया गया। टीम ने संसाधनों की उपलब्धता और अनुपलब्धता, अस्पताल की सीमा सीमांकन, , जैव-अस्पताल का अपशिष्ट प्रबंधन, प्रयोगशाला सुविधाएं आदि अस्पताल के कर्मचारियों द्वारा अपनाई गई अच्छी प्रथाओं की भी जांच की। टीम ने अभिलेखों का अवलोकन कर मूल्यांकन किया। अस्पताल प्रशासन विभाग प्रमुख-सह-डीएमएस डॉ. सुजीत सिन्हा नोडल एम्स पटना में कायाकल्प के नोडल अधिकारी हैं, जिन्होंने डॉ. जी के पाल, कार्यकारी निदेशक एम्स पटना के गतिशील नेतृत्व में कार्य और डॉ अनुप कुमार ,चिकित्सा अधीक्षक,एम्स पटना की देखरेख में दौरे के विभिन्न पहलुओं का समन्वय और देखरेख किया।

संत समागम पर सजा विशेष दीवान, शबद कीर्तन व अरदास

पटना सिटी (प्राकि)। संत बाबा भाग सिंह, बाबा त्रिलोचन सिंह, बाबा करतार सिंह व संत बाबा गुरचरण सिंह की स्मृति पर गुरुवार तख्तश्री हरिमंदिर जी पटना साहिब में संत समागम हुआ। इस दौरान विशेष दरबार साहिब में सजा। इसके पूर्व 29 जनवरी से लड़ियों में चल रहे श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अखंड पाठ का समापन हुआ। इसके उपरांत कपूरथला पंजाब के संत बाबा अवतार सिंह की प्रधानगी व बाबा जसपाल सिंह के संचालन में सजे विशेष दीवान में कथावाचक ज्ञानी गगनदीप सिंह और ज्ञानी दलजीत सिंह ने संतों की महिमा पर कथा कही। रागी जत्थों में बंगला साहिब गुरुद्वारा दिल्ली के रागी भाई कुलतार सिंह, भाई अरविंद सिंह निर्गुण, भाई हरभजन सिंह, भाई ज्ञान सिंह, भाई जगत सिंह, भाई नविंदर सिंह व बिक्रम सिंह ने शबद कीर्तन पेश किया।

विशेष दीवान का समापन तख्त साहिब के जत्थेदार ज्ञानी बलदेव सिंह व अतिरिक्त मुख्य ग्रंथी ज्ञानी दिलीप सिंह ने विश्व शांति व भाईचारे की लिए अरदास, हुकुमनामा व शस्त्र दर्शन करा कर किया।

केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने किया ई-लूना का अनावरण

पटना। इलेक्ट्रिक वाहनों के निमार्ता काइनेटिक ग्रीन ने एक कार्यक्रम में गर्व से बहुप्रतीक्षित ई-लूना पेश किया है, जो उन्नत तकनीक और सुविधाओं के साथ एक स्टाइलिश, बहु-उपयोगी इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहन है। इस नए इलेक्ट्रिक संस्करण का अनावरण नई दिल्ली में सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी के के साथ भारी उद्योग मंत्रालय के अतिरिक्त सचिव डॉ. हनीफ कुरैशी द्वारा किया गया। काइनेटिक ग्रुप के अध्यक्ष डॉ. अरुण फिरोदिया और काइनेटिक ग्रीन की संस्थापक और सीईओ सुलज्जा फिरोदिया मोटवानी ने इस महत्वपूर्ण अवसर को बहुत महत्व दिया। ई-लूना नवाचार का प्रतिनिधित्व करता है क्योंकि इसे व्यक्तिगत आवागमन और छोटे व्यवसायों के लिए विभिन्न अनुप्रयोगों को पूरा करने के लिए डिजाइन किया गया है।

एफएलएन किट का उद्देश्य बच्चों में बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान को बढ़ावा देना : अर्चना कुमारी

प्रात :किरण संवाददाता

पटना। राजकीय प्राथमिक अभ्यासशाला रामपुर जलालपुर के 79 बच्चों को विधालय में एक कार्यक्रम के दौरान एफ एल एन किट का वितरण मुख्य अतिथि तथा पीटीईसी रामपुर जलालपुर की वरीय व्याख्याता अर्चना कुमारी के द्वारा किया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि पीटीईसी की वरीय व्याख्याता अर्चना कुमारी ने कहा कि सरकार द्वारा एफ एल एन किट को शुरू करने का मुख्य उद्देश्य राज्य के प्राथमिक विद्यालयों के छात्र छात्राओं को शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करना है। शिक्षा विभाग के अपर मुख्य सचिव के के पाठक ने प्राथमिक विद्यालय के वर्ग 1 से लेकर तीन तक के बच्चों में बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान को बढ़ावा देने के लिए FLN किट का वितरण करने का निर्देश दिया है। जिसके तहत आज बच्चों को FLN किट दिया गया है। जिसमें इंस्ट्रूमेंट बॉक्स, कॉपी, पेन, पेंसिल, इरेजर, शार्पनर, ड्रॉइंग बुक आदि को स्कूल बैग में डालकर दिया गया है। उन्होंने कहा कि प्राथमिक विद्यालय बच्चों के सर्वांगीण विकास की प्राथमिक इकाई होते हैं। यहां मिलने वाली शिक्षा और विधालय के शैक्षणिक माहौल पर बच्चों का संपूर्ण विकास निर्भर करता है। प्राथमिक स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों का दिमाग गीली मिट्टी के समान होता है। इससे वैसी ही मूरत बनाई जा सकती है जैसा शिक्षक चाहें। पढ़ाई के समय बच्चों के लिए पढ़ाई की छोटी-छोटी चीजें बहुत अधिक महत्व रखती हैं। ऐसे में यह स्कूल बैग तथा उसमें रखा सामान बच्चों को पढ़ाई में मददगार होगा।

इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता विधालय के प्रधानाध्यापक गोपाल प्रसाद ने किया।इस दौरान विधालय के शिक्षक शुभम कुमार, ज्योति सिंह,मनीषा कुमारी सहित विधालय की सचिव सोनम देवी तथा पीटीईसी रामपुर के एडमिन कंसल्टेंट सोनू सुमन उपस्थित थे।

भाजपा गठबंधन जरूर करती है लेकिन बदलती नहीं : सम्राट

धन्यवाद सम्मान सह संकल्प सभा में भाजपा ने सूबे के सभी 40 सीटें जीतने का लिया संकल्प

- प्रधानमंत्री के 400 के लक्ष्य को पूरा करेगी जनता : विजय
- आज भारत का कद दुनिया में बढ़ा है : प्रेम कुमार

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

प्रदेश भाजपा द्वारा गुरूवार को श्रीकृष्ण मेमोरियल हॉल में आयोजित धन्यवाद, सम्मान सह संकल्प सभा का आयोजन किया गया। इस मौके पर उपस्थित कार्यकताओं ने अपने स्थान पर खड़े होकर एक मिनट तक ताली बजाकर पूर्व उप प्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी और जननायक कपूर्री ठाकुर को भारत रत्न दिए जाने के लिए प्रधानमंत्री को धन्यवाद दिया। इस कार्यक्रम में बिहार सरकार में उप मुख्यमंत्री बने सम्राट चौधरी, विजय कुमार सिन्हा और मंत्री बने प्रेम कुमार को सम्मानित किया गया तथा 2024 में बिहार के सभी 40 की 40 सीटें जीतने का संकल्प भी लिया गया। इस अवसर पर भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सह उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने कहा कि भाजपा मंडल का भी समर्थन करती है कमंडल का भी समर्थन करती है। उन्होंने कहा कि अगर आज हम सरकार में शामिल हैं तो इसका क्रेडिट कार्यकताओं को जाता है। उन्होंने कहा कि भाजपा गठबंधन जरूर करती है लेकिन बदलती नहीं है और गठबंधन धर्म का पालन भी करती है। भाजपा को कमिटमेंट वाली पार्टी बताते हुए उन्होंने कहा कि भाजपा अपना संकल्प पूरा करती है। श्री चौधरी ने आगे कहा कि एनडीए सरकार का कमिटमेंट नौकरी देने का भी है लेकिन आज इसका क्रेडिट दूसरे लोग लेने में लगे है। आगे उन्होंने कहा कि अति पिछड़े को मुख्यधारा में जोड़ने वाला कोई व्यक्ति था तो वे केवल पूर्व मुख्यमंत्री कपूर्री ठाकुर थे। उन्होंने दावा करते हुए कहा कि मंडल कमीशन लागू करने में भी भाजपा का समर्थन था। भाजपा मंडल के साथ है तो कमंडल के साथ भी है। उप मुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा ने कहा कि सांस्कृतिक विरासत को बचाने के लिए महापुरुष लालकृष्ण आडवाणी ने यात्रा प्रारंभ की थी जबकि कपूर्री जी सादगी, नम्रता, सरलता, ईमानदारी थे। प्रधानमंत्री मोदी जी ने दोनों को भारत रत्न देकर करोड़ों लोगों को सम्मानित किया। उन्होंने कहा कि देव दुर्लभ कार्यकर्ता भाजपा में ही हो सकते हैं। श्री सिन्हा ने कहा कि प्रधानमंत्री के 400 के लक्ष्य को देव दुर्लभ जनता अवश्य पूरा करेगी। इस मौके पर मंत्री प्रेम कुमार ने कहा कि आज प्रधानमंत्री के नेतृत्व में देश का डंका पूरी दुनिया में बज रहा है। उन्होंने कहा कि सही अर्थों में यह सम्मान भाजपा कार्यकताओं का है। भाजपा के कार्यकर्ता ही पार्टी को आज यहां तक पहुंचाया हैं। इस कार्यक्रम का संचालन प्रदेश महामंत्री जगन्नाथ ठाकुर और राजेश वर्मा ने किया। इस कार्यक्रम में प्रदेश प्रभारी विनोद तावड़े भी उपस्थित रहे।

इस समारोह को नंद किशोर यादव, मंगल पांडेय, तार किशोर प्रसाद, रेणु देवी, हरि सहनी, शाहनवाज हुसैन, जनक राम, संजीव चौरसिया, अरुण सिन्हा, मिथिलेश तिवारी, जिवेश मिश्रा, नवल किशोर यादव, ललन मंडल, अनिल शर्मा, राजेंद्र गुप्ता सहित बड़ी संख्या में नेता और कार्यकर्ता उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में महामंत्री शिवेश राम ने धन्यवाद ज्ञापन किया। इससे पहले प्रदेश कार्यालय से हजारों की संख्या में बाइक पर सवार कार्यकर्ता जुलूस की शक्ल में श्री कृष्ण मेमोरियल हॉल पहुंचे और कार्यकताओं ने दोनो उप मुख्यमंत्रियों सम्राट चौधरी, विजय सिन्हा तथा मंत्री प्रेम कुमार का स्वागत किया।

राष्ट्रव्यापी जय जवान अभियान : 3 चरणों में 20 मार्च तक चलेगा

अग्निपथ योजना ने युवाओं के सपनों को चकनाचूर कर दिया : कांग्रेस

- मोदी सरकार ने 1.5 लाख युवाओं को धोखा देने का किया काम
- राष्ट्रव्यापी अभियान-जय जवान : अन्याय के विरुद्ध न्याय का युद्ध के माध्यम से युवा न्याय सुनिश्चित करेगी

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

अग्निपथ योजना के जरिए, मोदी सरकार ने 1.5 लाख युवाओं के सपनों को चकनाचूर कर दिया, जिन्हें नियमित भर्ती के तहत कठिन मानसिक और शारीरिक परीक्षण के बाद सैन्य बलों में भर्ती होनी थी भाजपा ने करोड़ों युवाओं को धोखा दिया है, बेरोजगारी 45 साल के उच्चतम स्तर पर है। उक्त बातें गुरूवार को प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय सदाकत आश्रम में आयोजित प्रेस वार्ता के दौरान अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की प्रवक्ता रितु चौधरी ने कही। आगे उन्होंने बताया कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस 31 जनवरी को बिहार में राहुल गांधी द्वारा शुरू किए गए एक राष्ट्रव्यापी अभियान-जय जवानः अन्याय के विरुद्ध न्याय का युद्ध के माध्यम से युवा न्याय सुनिश्चित करेगी। यह अभियान 1.5 लाख युवाओं की दुर्दशा पर प्रकाश डालता है, जिन्हें कठोर चयन प्रक्रिया से गुजरने के बाद 2019 और 2022 के बीच एक नियमित भर्ती अभियान में हमारी 3 गौरवशाली सैन्य बलों भारतीय सेना, भारतीय नौसेना और भारतीय वायु सेना में स्वीकार किया गया था, लेकिन उन्हें सारी प्रक्रियाओं के बाद भी भर्ती से वंचित कर दिया गया, क्योंकि मोदी सरकार ने अचानक सशस्त्र बलों पर अग्निपथ योजना थोप दी। जय जवान अभियान की दो महत्वपूर्ण मांगें हैं-अग्निपथ योजना लागू होने पर 1.5 लाख युवाओं से क्रूरतापूर्वक छीनी गई नौकरियां वापस करें। सैन्य बलों के लिए पिछली भर्ती प्रणाली को बहाल करें। राष्ट्रव्यापी जय जवान अभियान 3 चरणों में आयोजित किया जा रहा है और 31 जनवरी से शुरू हुआ यह अभियान 20 मार्च तक चलेगा।

राष्ट्रव्यापी जय जवान अभियान 3 चरणों में :

पहला चरण-जन संपर्क, लक्ष्यः 30 लाख परिवारों तक पहुंचना, समय अवधिः 1 फरवरी से 28 फरवरी तक। दूसरा चरण - सत्याग्रह, लक्ष्यः अधिक से अधिक युवाओं और उनके परिवारों तक पहुंचना, जानकारी इकट्ठा करना और उन्हें चल रहे अभियान के बारे में जागरूक करके शामिल करना। समय अवधिः 5 मार्च से 10 मार्च तक। सभी प्रखंडों व शहरों में धरना देना है और एक समन्वय समिति का गठन करना है। तीसरा चरण- न्याय यात्रा। लक्ष्यः सभी जिलों में 50 किलोमीटर तक पदयात्रा निकालने का लक्ष्य है। समय अवधिः 17 मार्च से 20 मार्च तक।

मिस्ड कॉल दें - 9999812024 हम से जुड़ें। जय जवान अभियान युवा न्याय का भाग है। हमारे बेरोजगार युवाओं को न्याय प्रदान करना और उनके सपनों और आकांक्षाओं को पूरा करना भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का बड़ा लक्ष्य है।

सक्षमता परीक्षा के नाम पर शिक्षकों को प्रताड़ित नहीं किया जाए : एजाज

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

राजद के प्रवक्ता एजाज अहमद ने कहा कि नियोजित शिक्षकों को राज्यकर्मी का दर्जा देने में महागठबंधन सरकार में जो फैसले और घोषणा किए गए थे, उसी के अनुसार ही परीक्षा लेकर शिक्षकों को राज्यकर्मी का दर्जा दिया जाए, और सक्षमता परीक्षा के नाम पर शिक्षकों को प्रताड़ित नहीं किया जाए। आगे कहा कि बिहार में जबसे एनडीए की सरकार बनी है उसके बाद से ही भाजपा के दबाव में ऐसा माहौल बनाया जा रहा है। यह बात सभी को मालूम है कि भारतीय जनता पार्टी यह नहीं चाहती कि शिक्षकों को राज्यकर्मी का दर्जा मिले। शिक्षकों को सुशील मोदी की वो बातें याद होगी,जब उन्होंने कहा था कि भगवान भी आ जाए तब भी शिक्षकों को राज्यकर्मी का दर्जा नहीं मिल सकता है। और आज उन्हीं बातों को कहीं ना कहीं लागू करने के लिए प्रयास चल रहा है। एजाज ने आगे कहा कि राष्ट्रीय जनता दल तेजस्वी के संकल्पों के अनुसार महागठबंधन सरकार के फैसले और घोषणा के अनुसार शिक्षकों को परीक्षा के आधार पर ही राज्यकर्मी का दर्जा देने के संकल्प को पूरा करने के लिए कटिबद्ध है। इन्होंने यह भी कहा कि जिस तरह की नियमावली बनाई गई है यह कहीं ना कहीं शिक्षकों के भविष्य के साथ खिलवाड़ है। और जो शिक्षक 10 से 15 साल नौकरी कर चुके हैं, उनको निकाले जाने की बात किसी भी दृष्टिकोण से उचित नहीं है सरकार अपने नाकामियों को छुपाने के लिए अफसरों को माध्यम बना रही है।

परिवारवादियों को भी आ रही है लोकतंत्र की याद : जदयू

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

राजद पर पलटवार करते हुए जदयू के राष्ट्रीय प्रवक्ता राजीव रंजन ने कहा है कि सत्ता के रहते हुए जनता, संविधान और लोकतंत्र का मजाक उड़ा कर रख देने वाले परिवारवादियों को लोकतंत्र की दुहाई देते देखना हास्यास्पद है। इन्हें लगता है कि लोकतंत्र की माला जपने इनके प्रमुख परिवारों का भला हो जाएगा और इनके युवराज सत्ता में सेट हो जायेंगे। उन्हें जानना चाहिए कि अब जनता जागरूक हो चुकी है। उन्हें अच्छे से पता है कि परिवारवादियों के लिए लोकतंत्र वह झुनझुना है जिसे बजा कर वह आज तक अपना उल्लू सीधा करते आये हैं। जदयू प्रवक्ता ने कहा कि लोकतंत्र के खतरे में होने का दावा करने वाले इन परिवारवादियों ने इमरजेंसी का दौर भी देखा है। उस समय सरकार के खिलाफ आंदोलन करना तो दूर बोलने तक की मनाही थी। खुद राजद प्रमुख लालू यादव खुद इन्हीं वजहों से जेल जाना पड़ा था. लेकिन आज यह लोग न केवल प्रधानमन्त्री व मुख्यमंत्री के खिलाफ जमकर अपशब्दों का प्रयोग करते हैं बल्कि सरकार पर सीना ठोक कर झूठे आरोप भी लगाते हैं। इनके नेताओं को बताना चाहिए कि यदि देश में तानाशाही है तो वह इतनी आजादी से ऐसे अमर्यादित काम कर पाते? हकीकत में इनके नेताओं की निगाह में लोकतंत्र तभी सुरक्षित रह सकता है जब देश की बागडोर इनके प्रमुख खानदान के हाथों में हो और उन्हें जमीन के बदले नौकरी देने और अन्य भ्रष्टाचार करने की आजादी मिले। उन्होंने कहा कि वास्तव में इन लोगों को तो लोकतंत्र जैसे पवित्र शब्द का नाम लेने तक अधिकार तक नहीं है. यदि उनकी लोकतंत्र में आस्था रहती तो सबसे पहले यह लोग अपने से कहीं छोटे युवराजों की पालकी उठाने से मना कर देते और अपनी पार्टियों से परिवारवाद को उखाड़ फेकते। लेकिन जितनी प्रतिबद्धता से यह लोग परिवार की परिक्रमा करने में अपना सम्मान ढूंढते हैं उससे साफ पता चलता है कि इनमें गुलामी मानसिकता कूट-कूट कर भरी है और गुलाम कभी भी लोकतंत्र के रक्षक नहीं हो सकते हैं।

राहुल गांधी खुद बताए उनकी जात क्या है : ऋतुराज

पटना। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी द्वारा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जाति के ऊपर दिए बयान पर भाजपा के राष्ट्रीय मंत्री ऋतुराज सिन्हा ने प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि जिनके घर शीशे के बने होते है उन्हे दूसरे के घर पर पत्थर नही फेकना चाहिए पर इतनी समझ राहुल जी को आ जाती तो शायद कांग्रेस का यह हाल नही होता । खैर राहुल जी स्वयं देश की जनता को बता दे कि वे खुद किस जाति से आते है? श्री सिन्हा ने कहा की अगर जनता राहुल गांधी जी के जात पर प्रश्न उठाने लगेंगे तो फिर वे क्या जवाब देंगे? जात तो छोड़िए अगर जनता यह पूछ ले कि आपके पिताजी किस जात तो छोड़िए किस धर्म के थे, वे किस धर्म के है तो राहुल जी की स्थिति वैसे ही हो जायेगी जैसा आज सभी राज्यों में कांग्रेस की स्थिति है।हमारे बिहार में एक कहावत है ह्न बिना पेंदी के लोटा ह्न। यह कहावत बिल्कुल फिट बैठती है उनके ऊपर। श्री सिन्हा ने कहा कि देश की जनता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को आज से नही बल्कि काफी पहले से अच्छी तरह से जानती है कि वे देश के गुदरी के लाल है। बच्चा बच्चा यह जानता है कि वे वैश्य समाज से आते है और अगर राहुल जी भूल गए है तो उन्हें याद दिलाने की जरूरत है कि चायवाला से सफर शुरू कर आज वे भारत की जनता के आशीर्वाद से देश के प्रधानमंत्री के पद पर है। इसके बाद भी अगर उनकी यादशात कमजोर है तो वे 2024 के लोकसभा चुनाव के बाद तीसरी बार उन्हें प्रधानमंत्री बनते देख ले।

विशेष राज्य के दर्जा को लेकर प्रदेशवासी आशावादी : शिवानंद

प्रात : किरण संवाददाता

देशपटना। राजद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष शिवानंद तिवारी ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से नीतीश कुमार की मुलाकात पर प्रतिक्रिया दी है। श्री तिवारी ने कहा है कि मुख्यमंत्री कुमार बुधवार को दिल्ली में प्रधानमंत्री से मिले। बिहारियों के मन में उत्सुकता है कि प्रधानमंत्री से बिहार के संदर्भ में उनकी क्या बातचीत हुई। बिहार के लोगों को उम्मीद है कि मुख्यमंत्री जी ने कम से कम दो मुद्दों को प्रधानमंत्री जी के समक्ष जरूर उठाया होगा। श्री तिवारी ने आगे कहा कि पिछले महीने कपूर्री जी को भारत रत्न दिए जाने पर मुख्यमंत्री जी ने बहुत खुशी का इजहार किया था। साथ ही उन्होंने कहा था कि अब राष्ट्रीय स्तर पर भी कपूर्री फॉर्मूला की तरह अति पिछड़ों को केंद्रीय सरकार की नौकरियों में अलग से आरक्षण दिया जाना चाहिए। इसलिए अति पिछड़ों को पूरी उम्मीद है कि मुख्यमंत्री जी ने उनके आरक्षण के मुद्दे को जरूर प्रधानमंत्री जी के समक्ष उठाया होगा। बिहार को विकसित राज्य बनाने के लिए इसे विशेष राज्य का दर्जा चाहिए। मुख्यमंत्री की यह पुरानी माँग है। विशेष राज्य के दर्जा की माँग को बिहार की जनता का भी समर्थन प्राप्त है। श्री तिवारी ने आगे कहा कि बिहार की जनता मान कर चल रही है कि मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री से मुलाकात में बिहार को विशेष राज्य के दर्जा का सवाल जरूर उठाया होगा। श्री तिवारी ने कहा कि बिहार के लोगों की अपेक्षा है कि प्रधानमंत्री जी से अपनी बात का ब्योरा मुख्यमंत्री बिहार की जनता के साथ जरूर साझा करेंगे।

जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर श्री आदिनाथ भगवान का मनाया गया मोक्ष कल्याण

पटना। जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर श्री आदिनाथ भगवान के मोक्ष कल्याण के अवसर पर पटना के आदिनाथ दिगम्बर जैन चैत्यालय मुरादपुर, मीठापुर, कदमकुआं, गुलजारबाग दिगम्बर जैन मंदिरो में निर्माण लाडू चढ़ाया गया। मंदिरों में सर्वप्रथम भगवान आदिनाथ का अभिषेक किया गया। इसके बाद भगवान की शांतिधारा की गई। शांतिधारा के बाद भगवान का पूजन किया गया। पूजन के बाद भगवान के मोक्ष कल्याणक के अवसर पर लाडू चढ़ाया गया। मुरादपुर में आज भगवान का अभिषेक करने वाले में सुबोध जैन फंटी, प्रदीप जैन पहाड़िया, अनिल गंगवाल, राजकुमार गंगवाल, संजय संजय जैन पहारिया, शुभम पहाड़िया, गुलजारबाग में सोनू जैन, अतुल जैन, शशी जैन, सुबोध जैन, रिचा जैन तथा अन्य थे। आज मोक्ष कल्याणक के अवसर पर अधिक संख्या में पुरुष तथा महिलाएं पूजा में शामिल थी। एम पी जैन ने बताया कि जैन धर्म की मान्यता के अनुसार मोक्ष कल्याणक में तीर्थंकर शरीर, कर्म आदि से मुक्त होकर सिद्ध हो जाते हैं और उनका पुनः संसार में आवागमन नहीं होता है। मनुष्य जीवन के लिए संसार से मुक्ति सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि होती है। मोक्ष कल्याणक के माध्यम से भगवान आदिनाथ ने हजारों वर्ष पूर्व आज ही के दिन मोक्ष पद प्राप्त किया था।

ऑपरेशन समय पालन के तहत चेन पुलिंग करने में178 हिरासत में

- महिला डिब्बे में यात्रा करने वाले 431 पुरुष यात्री पकड़े गये प्रदीप

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

ऑपरेशन समय पालन के तहत फरवरी के पहले सप्ताह में रेलवे सुरक्षा बल की टीम द्वारा पूर्व मध्य रेल के विभिन्न रेलखंडों में बिना उचित कारण के चेन पुलिंग करने के आरोप में 178 लोगों को हिरासत में लिया गया। इन लोगों के विरूद्ध रेल अधिनियम की धारा 141 के तहत कार्रवाई की गई। ऑपरेशन समय पालन के तहत इन 07 दिनों में सर्वाधिक 100 लोग दानापुर मंडल में पकड़े गये जबकि सोनपुर समस्तीपुर मंडल में 35, सोनपुर मंडल में 16, पं. दीन दयाल उपाध्याय मंडल में 15 तथा धनबाद मंडल में 12 लोगों को हिरासत में लिया गया। इसी तरह महिलाओं की सुरक्षा के मद्देनजर ऑपरेशन महिला सुरक्षा के तहत महिला कोच में यात्रा करने वाले पुरुष यात्रियों के खिलाफ भी धर-पकड़ अभियान चलाया गया। ऑपरेशन महिला सुरक्षा मे तहत फरवरी के पहले सप्ताह में रेलवे सुरक्षा बल की टीम द्वारा पूर्व मध्य रेल के विभिन्न रेलखंडों पर महिला कोच में यात्रा करने के आरोप में रेल अधिनियम की धारा 162 के तहत 431 पुरुष यात्रियों को हिरासत में लिया गया। इनमें सर्वाधिक 276 लोग दानापुर मंडल में जबकि पं. दीन दयाल उपाध्याय मंडल में 96, सोनपुर मंडल में 44, समस्तीपुर मंडल में 13 एवं धनबाद मंडल में 02 पुरुष यात्रियों को हिरासत में लिया गया। गौर हो कि बिना पर्याप्त कारण अवैध रूप से चेन पुलिंग करके रेल गाड़ियों को जहां-तहां रोकने वालों के खिलाफ नियमित कार्रवाई की जाती रही है। इसी क्रम पूर्व मध्य रेल के सुरक्षा बलों द्वारा ऑपरेशन ह्यसमय पालन के तहत ऐसे लोगों पर कड़ी निगरानी रखी जा रही है ताकि ट्रेनें अनावश्यक रूप से विलंब ना हो।

इलेक्ट्रिक मोटर वाहनों की खरीद पर दी जाएगी छूट

- राज्य में इलेक्टिक वाहनों को किया जाएगा प्रोत्साहित : सचिव

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

इलेक्ट्रिक वाहनों के खरीद पर मोटरवाहन कर में छूट का लाभ राज्य में अब शुरू हो गया है। इलेक्ट्रिक वाहनों की खरीद पर रजिस्ट्रेशन के समय ही डीलर पॉइंट पर मोटर वाहन कर में 50 से 75 प्रतिशत की छूट दी जाएगी। इसके लिए कर छूट संबंधी सॉफ्टवेयर को एनआईसी के पोर्टल पर लाइव किया गया है। परिवहन सचिव संजय कुमार अग्रवाल ने बताया कि बिहार इलेक्ट्रिक वाहन नीति 2023 के तहत दोपहिया, तीनपहिया, चारपहिया वाहन, हल्के-भारी इलेक्ट्रिक मोटर वाहनों की खरीद पर छूट दी जायेगी। परिवहन सचिव संजय कुमार अग्रवाल ने बताया कि इस नीति के लागू होने से राज्य में अधिक से अधिक इलेक्ट्रिक वाहनों का परिचालन होगा, जिससे परिवेशीय वायु गुणवता में सुधार होगी एवं वाहनजनित प्रदूषण को नियंत्रित किया जा सकेगा। राज्य सरकार का लक्ष्य है कि 2028 तक राज्य में क्रय और निबंधन होने वाले नए वाहनों में से 15 प्रतिशत इलेक्ट्रिक वाहन हो। इस नीति के तहत राज्य में इलेक्टिक वाहनों को प्रोत्साहित किया जायेगा। बिहार राज्य में क्रय एवं निबंधित प्रथम 10 हजार दोपहिया एवं प्रथम 1 हजार चारपहिया इलेक्ट्रिक वाहनों पर मोटरवाहन कर में 75 प्रतिशत की छूट दी जायेगी।

इसके बाद 50 प्रतिशत की छूट का लाभ मिलेगा। इसके साथ ही क्रय प्रोत्साहन राशि का भी लाभ दिया जायेगा। इलेक्ट्रिक दोपहिया प्रति वाहन 10 हजार रुपये अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति एवं 7500 रुपये प्रति वाहन अन्य वर्ग के लिए देय होगा। वहीं इलेक्ट्रिक चारपहिया के लिए 1.50 लाख रुपये प्रति वाहन अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के लिए तथा 1.25 लाख रुपये प्रति वाहन अन्य वर्ग के लिए देय होगा। तीनपहिया इलेक्ट्रिक वाहन (यात्रीवाहक एवं मालवाहक) के बिहार राज्य में क्रय एवं निबंधन पर मोटरवाहन कर में 50 प्रतिशत की छूट दी जायेगी। वहीं भारी मोटरवाहन (बस तथा मालवाहक) के लिए मोटरवाहन कर में 75 प्रतिशत की छूट अधिसूचना प्रकाशन की तिथि से इस नीति के प्रभाव रहने की अवधि के शुरूआत के दो वर्षों में दी जायेगी। दो वर्षों के बाद मोटरवाहन कर में 50 प्रतिशत की छूट दी जायेगी। इलेक्ट्रिक वाहनों के क्रय एवं निबंधन पर नगरीय एवं अन्य प्राधिकार द्वारा सभी व्यक्तिगत इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए अनुदानित दर पर पार्किंग की सुविधा प्रदान की जायेगी। प्रत्येक नगर/शहर द्वारा सिटी पार्किंग प्लान तैयार कर अनुदानित दर पर इलेक्ट्रिक वाहनों का ऑन स्ट्रीट पार्किंग एवं चार्जिंग स्टेशन का प्रावधान किया जायेगा।

विधायकों में टूट को लेकर सियासी हलचल तेज, बयानबाजी जोरो पर

पटना। एनडीए गठबंधन सरकार के विश्वासमत से पहले प्रदेश में सियासी हलचल तेज है। राजनीतिक दलों के बीच आरोप प्रत्यारोप का दौर जारी है। एक दूसरे पर साजिश रचने का आरोप लगा रहा हैं। जानकारी के अनुसार फ्लोर टेस्ट के पहले विधायकों को प्रलोभन दिया जा रहा है। वहीं इसी कड़ी में सीएम नीतीश के खास मंत्री श्रवण कुमार ने कहा है कि, उनके विधायकों को प्रलोभन दिया जा रहा था, जिसकी जानकारी पार्टी को है। साथ ही उन्होंने कहा कि, जो लोग इधर-उधर करने में लगे हैं उनकी पहचान हो गई है। ऐसे सभी लोगों पर कार्रवाई की जाएगी। जदयू के विधायकों को प्रलोभन दिया जा रहा है इस बयान पर राजद ने तीखी प्रतिक्रिया देते हुए कहा है कि, जदयू पर जनता कार्रवाई करेगी। जदयू वाले बंदर घुड़की ना दें सबको पैजामें की लंबाई मालूम है। दरअसल, राष्ट्रीय जनता दल के मुख्य प्रवक्ता शक्ति यादव ने जदयू के बयान पर पलटवार करते हुए कहा कि, राजद को तोड़ने के लिए जदयू और बीजेपी ने साजिश रची थी। जदयू-बीजेपी ने मिलकर राजद को तोड़ा था, जिसके विरोध में पार्टी के द्वारा राज्यसभा मार्च किया गया था। तोड़ना और खरीदना बीजेपी-जदयू की पुरानी परंपरा है।

कृषि मेला में 17 हजार से अधिक किसानों एवं आमजनों ने किया भ्रमण

राज्यस्तरीय 04 दिवसीय कृषि यांत्रिकरण मेला का आयोजन गाँधी मैदान में

- मेला में कई विभागों एवं संस्थानों द्वारा लगाया गया स्टॉल
- आईआईटी पटना के द्वारा अनुसंधान के माध्यम से तैयार एक मशीन का प्रत्यक्षण
- किसान पाठशाला का आयोजन
- कृषि यंत्रों की बिक्री पर 91.56 लाख रुपए का अनुदान

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

कृषि विभाग द्वारा सीआईआई के सहयोग से 08-11 फरवरी तक गाँधी मैदान में आयोजित राज्यस्तरीय कृषि यांत्रिकरण मेला (एग्रो बिहार, 2024) का आयोजन किया गया है। कृषि विभाग के सचिव संजय कुमार अग्रवाल द्वारा सभी स्टॉल एवं मेला परिसर का भ्रमण किया।

प्रचार वाहनों को 04 शहरों के लिए हरी झण्डी दिखाकर किया रवाना

विभागीय सचिव ने मेला परिसर से छत पर बागवानी योजना के वृहत प्रचार-प्रसार हेतु 04 प्रचार वाहनों को हरी झण्डी दिखाकर पटना, गया, मुजफ्फरपुर एवं भागलपुर शहरों के लिए रवाना किया। उन्होंने कहा कि इन 04 शहरी क्षेत्र में आमजन मकान के छत पर 300/600 वर्गफीट खुले क्षेत्र में फार्मिंग वेड के लिए प्रति इकाई 37,500 रुपए एवं गमले की योजना के लिए प्रति इकाई (30 गमले) के लिए 7,500 रुपए का लाभ ले सकते है। इस अवसर पर कृषि निदेशक डॉ आलोक रंजन घोष, निदेशक, उद्यान अभिषेक कुमार, अपर सचिव शैलेन्द्र कुमार सहित अन्य पदाधिकारीगण उपस्थित थे।

मेला में 17000 से अधिक किसानों एवं आमजनों ने किया भ्रमण

इस मेला में आज पहले दिन आत्मा योजना के माध्यम से पटना एवं मगध प्रमण्डल के सभी जिलों से 5230 किसानों सहित राज्य के विभिन्न जिलों से 17837 किसानों ने अतिआधुनिक एवं उपयोगी कृषि यंत्रों की प्रदर्शनी का अवलोकन तथा जानकारी प्राप्त की। राज्यस्तरीय इस यांत्रिकरण मेला में देश के विभिन्न यंत्र निमार्ता, प्रतिष्ठानों तथा आईआईटी पटना सहित सरकारी एवं अर्द्धसरकारी संस्थानों के कुल 140 से अधिक स्टॉल लगाये गये हैं।

मेला में कई विभागों एवं संस्थानों द्वारा लगाया गया स्टॉल

इस मेला में कृषि यंत्रों के अतिरिक्त उद्यान, बिहार राज्य बीज निगम, पौधा संरक्षण, भूमि संरक्षण, बामेती, डिजिटल क्रॉप सर्वे, बिहार कृषि विश्वविद्यालय, डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, प्रसंस्कृत कृषि उत्पादों आदि का प्रदर्शन एवं बिक्री किया जा रहा है। साथ ही, एग्रो प्रोसेसिंग यंत्रों की भी बिक्री एवं प्रदर्शन किया जा रहा है।

किसान पाठशाला का आयोजन

साथ ही, मेला परिसर में प्रत्येक दिन किसान पाठशाला का आयोजन भी किया जा रहा है। इस क्रम में आज प्रतिभागीय किसानों को कृषि वैज्ञानिकों एवं विभागीय पदाधिकारियों द्वारा कृषि यांत्रिकरण योजना की जानकारी के साथ-साथ उपयोगी कृषि यंत्रों (बुआई से कटाई तक) का उपयोग, परिचालन एवं रख-रखाव एवं फसल अवशेष प्रबंधन के उपयोगी यंत्रों की भी जानकारी दी गई।

कृषि यंत्रों की बिक्री पर 91.56 लाख रुपए का अनुदान

आज इस मेला में 212 कृषि यंत्रों एवं 06 कृषि यंत्र बैंकों के लिए सरकार द्वारा कुल 91.56 लाख रुपए का अनुदान दिया गया। इन कृषि यंत्रों का बाजार मूल्य लगभग 1.74 करोड़ रुपए है।

बिहार सरकार

विद्युत कार्यपालक अभियंता का कार्यालय, विद्युत कार्य प्रमंडल सं0–2, पटना भवन निर्माण विभाग।

अल्पकालीन कोटेशन आमंत्रण सूचना सं0–34 वर्ष–2023–24

विद्युत कार्य प्रमंडल सं0–2, भवन निर्माण विभाग, पटना के कार्यालय में सरकारी कार्यो का निष्पादन हेतु निम्नलिखित कम्पनी Lenovo, Del,Hp आदि का Computer, UPS आदि की आवश्यकता है। उक्त कार्य हेतु प्रतिष्ठित कम्पनी से सीलबंद कोटेशन दिनांक–20.02.2024 को अपराह्न 3:00 बजे तक अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय में आमत्रित की जाती है। सभी प्राप्त सील बंद कोटेशन दिनांक–20.02.2024 के अपराह्न 3:30 बजे तक कोटेशनदाताओं अथवा उनके प्रतिनिधि के समक्ष खोली जाएगी।

कोटेशन प्राप्ति का स्थान (1) विद्युत कार्यपालक अभियंता, विद्युत कार्य प्रमंडल सं0–2, भवन निर्माण विभाग, पटना, (2) विद्युत अधीक्षण अभियंता, विद्युत कार्य अंचल दक्षिण बिहार, भवन निर्माण विभाग, पटना का कार्यालय होगा।

COMPUTER DETAILS OF

Sl. No	Particulars	Qty	Unit	Rate.	Amount
1	Desktop Cosi3 8GB Ram 256SSD Keyboard, Mouse, 18'5 LED Monitor.	1	Each		
2	600VA UPS for 30 Min backup.	1	Each		
3	Quick Heal 3 User Antivirus Software	1	Each		
4	64 GB Pen Drive	5	Each		

विस्तृत जानकारी www.state.bihar.gov.in/prdbihar पर देखी जा सकती है।

विद्युत कार्यपालक अभियंता,
विद्युत कार्य प्रमंडल सं0–2, पटना।

PR- 17023 (B C D) 2023-24

बिहार में शराब का व्यापार, बिक्री एवं सेवन अवैध है।
संबंधित शिकायत इस नंबर पर दर्ज करायें आपकी जानकारी गुप्त रखी जाएगी।
टॉल फ्री नं– 15545 या 1800 345 6268

आवश्यकता

(1) बिहार सरकार द्वारा स्वीकृत नियत वेतन में अनुपेश्वर संस्कृत प्राथमिक सह मध्य विद्यालय, सेमरिया ओझा पट्टी, भोजपुर में 03 सहायक शिक्षक की आवश्यकता है। जिसमें 03 सहायक शिक्षक, कोटि-UR(F), EBC & SC, योग्यता-मध्यमा/मैट्रिक का है। विज्ञापन प्रकाशन से 15 दिनों के अंदर विद्यालय सचिव के पदनाम से आवेदन पत्र निर्बंधित डाक के माध्यम से आमंत्रित किये जाते हैं। आवेदन पूर्ण विवरण के साथ स्वीकार किये जायेंगे।

(2) उम्र सीमा : आवेदन प्राप्ति की अंतिम तिथि को सहायक शिक्षक पद के अभ्यर्थियों की न्यूनतम उम्र 21 वर्ष होना अनिवार्य है। अधिकतम आयु सीमा वही होगी, जो राज्य सरकार (सामान्य प्रशासन विभाग) द्वारा निर्धारित होगा।

(3) आरक्षित कोटि के उम्मीदवार आवेदन के साथ जाति प्रमाण पत्र की स्वअभिप्रमाणित प्रति अवश्य संलग्न करेंगें अन्यथा आरक्षण का दावा मान्य नहीं होगा।

(4) आवेदन के साथ शैक्षणिक योग्यता प्रमाण पत्र की स्वअभिप्रमाणित प्रति अवश्य संलग्न करेंगे।

(5) अंतर्वीक्षा की सूचना अलग से विद्यालय सचिव द्वारा दी जायेगी। अंतर्वीक्षा में सम्मिलित होने के लिए यात्रा भत्ता देय नहीं होगा।

(6) सहायक शिक्षक पद पर नियुक्ति हेतु आवश्यक शैक्षणिक योग्यता होना अनिवार्य होगा।

(7) नियुक्ति को सम्पूर्ण प्रक्रिया बिहार राज्य अराजकीय प्रस्वीकृत संस्कृत (मध्यमा स्तर तक) के शिक्षकों की सेवा शर्त नियमावली-2015 के अनुरूप होगी।

सचिव
अनुपेश्वर संस्कृत प्राथमिक सह-मध्य विद्यालय, सेमरिया ओझा पट्टी, भोजपुर

संक्षिप्त खबरें

कांटी थर्मल के युवा इंजीनियर ने की आत्महत्या

मुजफ्फरपुर । कांटी थर्मल पावर प्लांट में कार्यरत एक इंजीनियर का शव बुधवार को संदिग्ध हालात में प्लांट के डैम से बरामद किया गया है ।थर्मल पावर प्लांट के डैम से इंजीनियर का शव मिलने से प्लांट में हड़कंप मच गया। मामले की सूचना के बाद एनटीपीसी के कर्मी और अधिकारी मौके पर पहुंचे। जिसके बाद मामले की सूचना एनटीपीसी प्रबंधन ने स्थानीय कांटी थाना को दी गई। मृतक इंजीनियर आंध्र प्रदेश राज्य का रहने वाला है। उसका नाम मधकर रेडी बताया गया है ।उसकी जेब से छुट्टी से संबंधित एक आवेदन पत्र भी पुलिस ने बरामद किया है। कांटी थाना की पुलिस मामले की जांच में जुटी हुई है ।घटना की सूचना कांटी पुलिस के द्वारा मृतक इंजीनियर के परिजनों को दी गई है ।मिली जानकारी के अनुसार मृतक इंजीनियर मधुकर रेड्डी आंध्र प्रदेश के रहने वाले थे। वे एनटीपीसी प्लांट के आवासीय परिसर में अकेले रह रहे थे। जिससे घटना के संबंध में फिलहाल कोई पुख्ता जानकारी नहीं मिल पाई है। मृत इंजीनियर के शव को पोस्टमार्टम के लिए एसकेएमसीएच भेज दिया गया है।

तेज पछिया हवा ने फिर बढ़ाई कनकनी

मुजफ्फरपुर। पिछले दो दिनों से जहां दिन में धूप निकलने से लोगों को ठंड से थोड़ी राहत मिली थी ,वहीं तेज पछिया हवा ने एक बार फिर कनकनी बढ़ा दी है। आज न्यूनतम तापमान घट कर 9 डिग्री सेल्सियस पर पहुंच गया ।जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केंद्र डॉ० राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा द्वारा जारी आज के मौसम के बारे में बताया गया है कि आज का अधिकतम तापमान 21.4डिग्री सेल्सियस रहा जो सामान्य से 3.1डिग्री सेल्सियस कम है ।आज का न्यूनतम तापमान सामान्य से2.5डिग्री कम होकर 9डिग्री सेल्सियस पर पहुंच गया। सुबह मे सापेक्ष आर्द्रता 90प्रतिशत और दोपहर बाद घटकर 50प्रतिशत हो गई। पछिया हवा की गति आज 25.2किमी प्रति घंटा रही।

विदेशी शराब बरामद, गड्ढा खोद कर ट्रंक में रखी हुई थी शराब

मुजफ्फरपुर। जिले के गायघाट थाना क्षेत्र के बेरुआ गांव से पुलिस ने भारी मात्रा में विदेशी शराब बरामद किया है। बरामद शराब की पेटियां व बोतल आम के बगीचे के झाड़ियों में गड्ढा खोदकर गारी गई ट्रंक में रखी गई थी। एएलटीएफ पदाधिकारी श्रीकांत चौरसिया ने बताया कि बुधवार की देर रात गुप्त सूचना मिली की बेरुआ गांव के दिलीप सिंह के बगीचे में भारी मात्रा में विदेशी शराब छुपाकर रखी गई है। जब मौके पर पहुंची पुलिस ने खोजबीन किया तो कई जगहों पर मिट्टी में गारी गई ट्रंक व ड्रम मिला। खोदकर निकालने पर विभिन्न ब्रांड की शराब की बोतलें भरी हुई थी। और ऊपर से पेड़ पौधे के टहनियों से छुपाई गई थी। उन्होंने की गड्ढा देखने से यह प्रतीत हो रहा था कि काफी दिनों से इस बगीचे में शराब का धंधा चल रहा था। बरामद किया गया शराब की मात्रा 678 लीटर है। उन्होंने बताया कि पुलिस आगे की कार्रवाई कर रही है।

उप प्रमुख के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा को होगी बैठक

विभूतिपुर, समस्तीपुर। विभूतिपुर प्रखंड उप प्रमुख सुजीत कुमार चौधरी के विरुद्ध विश्वास पर चर्चा हेतु प्रखंड परिसर स्थित पंचायत समिति भवन के प्रांगण में 12 फरवरी को 1:30 बजे से बैठक होगी। उक्त बातें की जानकारी पत्र निर्गत करते हुए कार्यपालक पदाधिकारी सह विभूतिपुर प्रखंड विकास पदाधिकारी चंद्र मोहन पासवान ने दी है। उन्होंने बैठक में चर्चा हेतु प्रखंड के सभी 42 पंचायत समिति सदस्यों को पत्र के माध्यम से जानकारी देते हुए बैठक में भाग लेने की अपील किया है। बता दें कि प्रखंड प्रमुख पर अविश्वास प्रस्ताव पारित होने के बाद उप प्रमुख सुजीत कुमार चौधरी के विरुद्ध 1 फरवरी को 14 पंचायत समिति सदस्यों ने अविश्वास प्रस्ताव लाते हुए विशेष बैठक बुलाने की मांग की थी। केंद्रीय कार्यकारिणी की वर्चुअल मीटिंग सम्पन्न

मोबाईल जेनरल स्टोर्स दुकान में हुई हजारों की चोरी

कल्याणपुर, समस्तीपुर। कल्याणपुर थाना क्षेत्र के मिजार्पुर चौक पर बुधवार की रात अज्ञात चोरों के द्वारा चार विभिन्न दुकानों में ताला तोड़कर चोरी की घटना को अंजाम दिया गया है। जानकारी के अनुसार मिजार्पुर गांव निवासी संतोष कुमार के मोबाइल दुकान के एलेस्टर तोड़कर हजारों रुपए चोरी की घटना का अंजाम दिया। तो वहीं वीरेंद्र कुमार के जनरल स्टोर के दुकान में भी चोरी की घटना को अंजाम दिया गया इसके बाद जीतू साह के मुर्गा की दुकान में एवं छोटू कुमार के मछली की दुकान में ताला तोड़कर चोरी की घटना को अंजाम दिया है। वहीं थाना अध्यक्ष राजन कुमार ने इस घटना से अनभिज्ञता जाहिर की है।

नाबालिग लड़की को हत्या करने वाले तीन परिजन आरोपित अपराधी गिरफ्तार

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा दरभंगा कमतौल थाना अंतर्गत ऑनर किलिंग से संबंधित कांड का सफल उद्वेदन एवं कांड में संलिप्त अप्राथमिकी अभियुक्त महेशी दास,पिता-स्व0 बाबूजी दास,श्याम दास,पिता-महे शी दास,शत्रुघन दास,पिता-स्व0 बाबूजी दास,तीन अपराधकर्मियों की गिरफ्तारी सहित शेष दो अभियुक्त सोहारत दास,पिता सठरू दास,ओजित दास,पिता केवल दास की गिरफ्तारी हेतु छापामारी की जा रही है मृतिका का चांदी का चैन और पायल,हत्या में प्रयुक्त हथियार कुल्हाड़ी,लोहे का सरिया,जमीन पर गिरा खून सना मिट्टी,श्याम दास का खून लगा कपड़ा,मृतिका का दांत,ओपो कंपनी का मोबाइल जप्त कर बरामद किया गया उक्त बातों की जानकारी नगर पुलिस अधीक्षक शुभम आर्य ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर कहा दरभंगा जिला अन्तर्गत कमतौल थाना क्षेत्र के मंगरथु निवासी महेशी दास के पुत्र आवदक श्याम दास,द्वारा 04.फरवरी को एक आवेदन समर्पित किया गया,जिसमें उनके द्वारा अज्ञात अपराधकर्मी के द्वारा 02.फरवरी को गायब पुत्री को किसी अज्ञात अपराधकर्मी के द्वारा पुआल में जला कर हत्या कर देने का आरोप लगाया गया था।आवेदन के आलोक में कमतौल थाना काण्ड संख्या 23/2024,दर्ज किया गया। इस सन्दर्भ में दरभंगा वरीय पुलिस अधीक्षक के निदेर्शानुसार दरभंगा नगर पुलिस अधीक्षक के नेतृत्व में अनुमण्डल पुलिस पदाधिकारी अमित कुमार द्वारा पुलिस निरीक्षक कमतौल अंचल,थानाध्यक्ष कमतौल के साथ एक टीम का गठन किया गया तथा एफ०एस०एल० टीम एवं तकनीकि शाखा की मदद से तत्पश्चात्काण्ड का सफल उदभेदन किया गया।अनुसंधान के क्रम में ज्ञात हुआ कि मृतका का किसी के साथ प्रेम प्रसंगा था,जिस कारण उसके परिजनों द्वारा उसे समझाया बुझाया गया। परन्तु वह परिजनों का बात मानने से इंकार कर दी।तत्पश्चात लड़की के पिता श्याम दास द्वारा अपने पिता महेशी दास,और भाई शत्रुघन दास के साथ बात चीत कर 03.फरवरी को अपने साला सोहारत दास,पिता-सठरू दास अजीतत दास,पिता-केवल दास के साथ मिलकर अपनी पुत्री का पहले गला दबा कर हत्या कर दिया और फिर उसके शव को कुल्हाड़ी से काट कर टुकड़े-टुकड़े कर एक प्लास्टिक की बोरी में बाँध दिया,फिर उस प्लास्टिक की बोरी को सुतली की बोरी में पैक कर घर से करीब 100 मीटर दूर चुल्हाई महतो पिता-लक्ष्मी महतो के पुआल में रखकर आग लगा दिया। फिर बाद में राख में से शव निकालने के बाद श्याम दास के द्वारा थाना में केस दर्ज कराया गया। शव के पास से मृतिका का चाँदी का चेन और पायल बरामद हुआ है। घटना के उदभेदन के बाद अभियुक्त के घर से हत्या करने वाला हथियार,कुल्हाड़ी,लोहे का सरिया,जमीन पर गिरा खून सना मिट्टी,श्याम दास का खून लगा कपड़ा एवं मृतिका का दांत बरामद हुआ है। साथ ही ओपो० कम्पनी का मोबाईल जप्त किया गया है।

जिलाधिकारी के समक्ष 13सूत्री मांगों को लेकर रसोइयों ने किया प्रदर्शन

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। बिहार राज्य रसोइया संघ की ओर से आज अपनी 13 सूत्री मांगों को लेकर जिलाधिकारी के समक्ष प्रदर्शन किया गया। हरीसभा चौक स्थित भाकपा माले कार्यालय से रसोइयों ने जिलाधिकारी कार्यालय के सामने धरना स्थल पर अपनी मांगों के समर्थन में नारे लगाते हुए पहुंचे और धरना स्थल पर सभा आयोजित की गई। सभा को संबोधित करते हुए बिहार राज्य विद्यालय रसोईया संघ की प्रदेश महासचिव और एक्टू की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सरोज चौबे ने कहा कि मोदी सरकार पूरी तरह मजदूरों के खिलाफ काम करते हुए कॉपोरेट के पक्ष में खड़ी हो गई है । केन्द्र सरकार की ओर से रसोइयों के मानदेय में कोई वृद्धि नहीं की गई है। बिहार सरकार भी वार्ता में दिये आश्वासन से पीछे हट गयी है ।रसोइयों को न्यूनतम मजदूरी से कम पर मात्र 1650 प्रति माह दिया जा रहा है। वह भी साल में सिर्फ 10 महीने का ही मानदेय भुगतान किया जाता है। उन्होंने कहा ,अगर सरकार रसोइयों की मांगों को नहीं मानेगी तो 21 फरवरी को बिहार विधानसभा के समक्ष विरोध प्रदर्शन किया जाएगा ।इसके साथ ही 16 फरवरी को पूरे देश में केंद्रीय ट्रेड यूनियनों के आह्वान पर हड़ताल होगी। मुख्यमंत्री को संबोधित 13सूत्री मांग पत्र जिलाधिकारी को सौंपा गया। जिसमें सरकार से रसोइयों के लिए न्यूनतम 10000 तत्काल मानदेय निर्धारित करने ,रसोइयों को सरकारी कर्मी का दर्जा देने ,केंद्रीयकृत किचन को खारिज कर एन जी ओ को मध्यान भोजन योजना से बाहर करेने,रसोइयों को ड्रेस के रूप में साल में दो जोड़ा सूती साड़ी ,ब्लाउज, पेटीकोट देने , रसोइयों के लिए सामाजिक सुरक्षा स्कीम के तहत 3000 पेंशन तय करने , दुर्घटना बीमा और स्वास्थ्य बीमा का लाभ दिए जाने की मांग शामिल हैं। इस अवसर पर बिहार राज्य विद्यालय रसोईया संघ के राज्य महासचिव, सरोज चौबे, ऐक्टू जिला सचिव, मनोज यादव, रसोईया संघ के नेता तैयब अंसारी,लीला देवी, रेणु देवी, राजू यादव, महाकांत झा, आदि ने प्रदर्शनकारियों को संबोधित किया।

भारतीय संस्कृति और वैश्विक चेतना के बड़े गीतकार थे जानकीवल्लभ : संजय पंकज

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री वसंत के उल्लास,मानवीय मूल्यों, भारतीय संस्कृति और वैश्विक चेतना के बड़े कवि -गीतकार थे। उन्होंने की कालजयी कृतियों का सृजन किया ।ये बातें वरिष्ठ कवि , साहित्यकार संजय पंकज ने कही ।वे बुधवार को आचार्य शास्त्री की याद में उनके आवास निराला निकेतन में आयोजित महा वाणी स्मरण कार्यक्रम में महा कवि के प्रति अपना भावोद्गार प्रकट कर रहे थे। उन्होंने कहा , शास्त्री जी अपने लेखन में आत्मा को उतार देते थे। कवि कहते ही जिस रूप और वैभव का बोध होता है ,वह आचार्यश्री में परिलक्षित था। संजय पंकज ने कई संस्मरणों को सुनाते हुए शास्त्री जी के प्रिय गीत - केसर कुमकुम का लहका दिगंत है, गंध की अनंत वेदना वसंत है - की प्रभावशाली प्रस्तुति की और कहा कि आचार्य जी मौसम के पारखी थे और ऋतुओं को केंद्र में रखकर उन्होंने जो गीत लिखा उसमें प्रेम, सौंदर्य और प्रकृति अपने उत्कर्ष पर है। कई भाषाओं पर समान अधिकार था उनका और वे धारा प्रवाह बोलते थे तो सुनने वाले वाणी के अद्भुत सम्मोहन स अभिभूत होते थे। बेला पत्रिका की ओर से आयोजित गोष्ठी का शुभारंभ आचार्यश्री की प्रतिमा पर माल्यार्पण तथा पुष्पांजलि अर्पित करने के बाद हुआ। विविध भावों से भरी हुई रचनाओं का उपस्थित कवियों ने पाठ किया। युवा कवयित्री डॉ अनु ने सुमधुर स्वर में - तुझमें तेरी तलाश कर लूं,,शायद कहीं तुम मिल जाओ - गीत सुना कर वातावरण को प्रेमिल कर दिया। वरिष्ठ गीतकार अंजनी कुमार पाठक ने सुनाया - राम सुमिर ले प्राणी रे, तेरी तर जाएगी जिंदगानी रे, आशा सिन्हा ने -भगवान राम वापस आए- सुनाया तो लगा कि राममय परिसर हो गया। डॉ हरि किशोर सिंह ने - मां पापा की प्यारी हो तुम, तो नरेंद्र मिश्रा ने - अरे यह अनुपम देश हमारा - सुनाकर संबंध और देश प्रेम से जोड़ दिया। सत्येंद्र कुमार सत्येन का गीत - टिकुलिया तरके बिंदिया, तो रामवृक्ष राम चकपुरी की कविता - समाज फूट-फूट कर रो रहा, कोई आंसू पोंछने वाला नहीं मिला, अरुण कुमार तुलसी की गजल - दरिया को है क्या समंदर से वास्ता, मिलने के जुनून में खोज ही लेता रास्ता, अखिलेश्वर सिंह का गीत - कूक कभी कोयल की, डॉ पुष्पा प्रसाद की कविता - पीली सरसों की अंगड़ाई, अमलतास के झुमको ने दी दस्तक वसंत की - अपनी अपनी भावनाओं तथा प्रस्तुति के साथ रचनाएं सबके मन का स्पर्श करती रहीं। गीतकार उमेश राज ने अपने गीत - पतझड़ बसंत लाया, मन में उमंग छाया - सस्वर सुनाकर वसंत का पुरजोर स्वागत किया। स्वागत संबोधन अंजनी कुमार पाठक ने, संचालन उमेश राज ने तथा धन्यवाद ज्ञापन मोहन प्रसाद ने किया। मोहन प्रसाद ने अपने धन्यवाद में कहा कि निराला निकेतन को हम सब प्रणाम करने और आचार्य जी का आशीष लेने के लिए इस साहित्य तीर्थ में आते हैं।

नरक निवारण चतुर्दशी के अवसर पर जलाभिषेक करने वाले श्रद्धालुओं कि उमड़ी भीड़

प्रात : किरण संवाददाता

कुशेश्वरस्थान : दरभंगा मिथिलांचल के प्रसिद्ध तीर्थ स्थल कुशेश्वरस्थान शिव मंदिर में नरक निवारण चतुर्दशी के अवसर पर गुरुवार को जलाभिषेक करने वाले श्रद्धालुओं के भीड़ उमड़ पड़ी। लगभग 12-15 हजार से अधिक श्रद्धालुओं ने मंदिर में कुशेश्वर नाथ महादेव को जलाभिषेक कर पूजा अर्चना किया और अपने परिजनों के सुख समृद्धि का कामना किया। सुबह से ही नरक निवारण चतुर्दशी व्रत धारण करने वाले महिला एवं पुरुष श्रद्धालुओं के मंदिर में जलाभिषेक करने का सिलसिला जो शुरू हुआ वह शाम तक चलता रहा। मंदिर में शांति पूर्वक सम्पन्न कराने के लिए पुलिस प्रशासन ने मंदिर एवं शिव गंगा घाट पर चौकीदार को प्रतिनियुक्त किया था। इस दौरान कुशेश्वरस्थान शिव नगरी में दिन भर हर हर महादेव एवं बोल बम की जय घोष से वातावरण गुंजायमान हो रहा था। पंडित आचार्य राज नारायण झा ने बताया कि नरक निवारण चतुर्दशी व्रत में दिन भर निर्जल उपवास रख कर शाम में आकाश के तारे देखकर फल खाकर व्रत का पारण कर व्रती अन्न जल ग्रहण करने का विधान है। उन्होंने कहा कि ऐसी मान्यता है कि इस व्रत में दिन भर उपवास कर भोलेनाथ का पूजा अर्चना करने से लोगों को नरक से मुक्ति मिलती है।

सिहवाडा थानाध्यक्ष पद पर मनोज कुमार ने किया योगदान

प्रात : किरण संवाददाता

सिंहवाड़ा संवाददाता दरभंगा वरीय पुलिस अधीक्षक जगुनाथ रेड्डी जला रेड्डी से प्राप्त आदेश पर पुलिस अवर निरीक्षक मनोज कुमार ने बुधवार को सिंहवाडा थानाध्यक्ष पद पर योगदान दिया है। थाना अध्यक्ष ने क्षेत्र का भ्रमण के अपने अधिनस्थ पदाधिकारियों व स्थानीय चौकीदारों से सभी पंचायत व इलाके का फीडबैक लेकर प्रशासनिक चौकसी का निर्देश दिया है। क्षेत्र में शराब कारोबारी, भूमाफियाओं, अपराधियों, आसामाजिक तत्वों को किसी भी सूरत में बक्शा नही जाएगा। फ्रेंडली पुलिसिंग व्यवस्था सिमरी में नजर आएगी। एनएच पर पेट्रोलिंग के साथ अवैध काम करने वाले लोगों पर विशेष निगरानी रखी जाएगी । मौके पर पहुंचे कई लोगो ने थाना अध्यक्ष का पाग चादर से सम्मानित किया। इस दौरान दरभंगा मुजफ्फरपुर फोरलेन पर ट्रैफि क व्यवस्था के साथ के हाल के दिनों में अपराधिक घटनाओं की जानकारी ली है ।शराब कारोबारी, भू माफिया व अल्कोहल सेवन करने वाले पर पैनी नजर रखने को कहा है। ग्रामीण पुलिस को सूचना तंत्र मजबूत करने को कहा है ।फोरलेन पथ व संवेदनशील स्थल पर नियमित गश्त करने व असमाजिक तत्वों पर विशेष नजर रखने की बात कही है। विधि व्यवस्था व अपराधिक घटना को नियंत्रण कर क्षेत्र में सामाजिक सदभाव कायम रखना नव थानाध्यक्ष की पहली प्राथमिकता होगी।

पहल कार्यक्रम के तहत नौवीं से बारहवीं पास छात्रों को प्रतियोगिता परीक्षा हेतु निःशुल्क कक्षा आयोजित

विभूतिपुर, प्रात : किरण संवाददाता

कामेश्वर नारायण सिंह राजकीय पोलिटेकनिक किशनपुर टभका समस्तीपुर में ह्यपहलह्न कार्यक्रम के अंतर्गत नौवीं से बारहवीं पास छात्रों को प्रतियोगिता परीक्षा हेतु निःशुल्क कक्षा शुरू किया गया है। यह निःशुल्क कक्षा सामाजिक सुधार एवं छात्राओं का तकनीकी शिक्षा के लिए प्रेरित करने हेतु किया गया है। आसपास के क्षेत्रों में अध्ययन कर रहे कक्षा 9वीं, 10वीं, 11वीं, 12वीं, एवं 12वीं पास किए हुए तथा अन्य स्थानीय छात्र-छात्राओं को प्रतियोगीता परीक्षाओं हेतु भौतिकी, रसायन, गणित, के साथ अंग्रेजी बिषयों में निःशुल्क कक्षाएं आयोजित कर मार्गदर्शन प्रदान किया जाएगा। संस्थान के प्राचार्य डॉ असीम कुमार ठाकुर एवं नोडल पदाधिकारी डॉ मो. कैसर हाशमी (व्याख्याता, भौतकी) के अनुसार इस कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभावान छात्रों को पोलिटेकनिक प्रवेश परीक्षा, जेईई मेन्स, जेईई एडवांस एवं अन्य प्रतियोगिता परीक्षाओं हेतु तैयारी करवाना है। इससे आर्थिक रूप से कमजोर छात्र-छात्राओं को प्रतियोगी परीक्षओं की तैयारी करने में राजकीय पोलिटेकनिक के व्याख्याताओं से मार्गदर्शन प्राप्त होगा। इच्छुक छात्र-छात्रा, कार्यलय में प्रातः 10 बजे से संध्या 4 बजे तक संपर्क कर अपना नामांकन पहल कार्यक्रम में करवा सकते है, और योजना का लाभ उठा सकते है।

मलंगिया के युवक को जयपुर मे सड़क दुर्घटना मे मौत,गांव मे पसरा मातम

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी जिले के रहिका थाना क्षेत्र के मलंगिया गांव में उस समय मातम छा गया जिस समय जयपुर के कोट पुतली थाना पुलिस ने मोबाईल के माध्यम से सुचना दिया की जीतेन्द्र कुमार यादव के साथ सड़क हादसा हो गया खबर सुनते ही परिवार के लोग अवाक रह गए और गांव मे मातमी सन्नाटा पसर गया। मलंगिया गांव के अयोधी यादव के 21वर्षीय पुत्र जीतेन्द्र कुमार यादव अपने परिवार के भरण पोषण को लेकर दिल्ली मे मजदूरी करने गए हुए थे ।परिजनों ने जानकारी देते हुए बताये की परिवार का एकलौता कमाने वाला था घर मे एक छोटा भाई सिकेंद्र कुमार उम्र लगभग 15वर्ष और विधवा माँ है मृतक युवक के एक वर्ष पूर्व ही सर से पिता का साया उठ गया था।और एक माह पूर्व ही पिता का पहला वर्षी कर के परिवार का भरण पोषण के लिए दिल्ली मजदूरी करने गया था।और दिल्ली मे रहकर किसी ट्रांसपोर्ट कंपनी का ट्रक चलता था और दिनांक 06फरवरी 2024को समय लगभग 02बजे दिन में राजस्थान के जयपुर मे कोट पुतली थाना अंतर्गत कल्याणपुरा खुर्द पुलिया के पास ठल्ह पर वाहन रोककर चक्का से गिट्टी निकाल रहा था उसी दरमियान पीछे साइड से तेज रफ़्तार से आ रही पिकअप ने जोरदार ठोंकर मार दिया जिससे घटना स्थल पर ही मौत हो गया उक्त जानकारी संबंधित कोट पुतली थाना पुलिस के द्वारा बताया गया ।वही परिवार के लोगो का रो रो कर बुरा हाल है ।मृतक के चचेरा भाई धर्मेंद्र यादव का कहना है की शव को पोस्टमार्टम होने के बाद सुपुर्द कर दिया गया है और शव को लेकर गांव के लिए निकल चुके है ।गांव में परिजन रोते बिलखते आस लगाए बैठे थे कि जैसे ही शव एंबुलेंस से गांव पहुंचे की की पूरे गांव व परिजन का रो रो कर बिलखने लगी।अंतिम संस्कार कर दिया गया।

सशस्त्र सीमा बल के द्वारा नागरिक निशुल्क मानव चिकित्सा शिविर लगाया गया

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी मेडिकल सिविक एक्शन कार्यक्रम अयोजित 48वीं वाहिनी सशस्त्र सीमा बल जयनगर के कार्यक्षेत्र की बाह्य सीमा चौकी जानकीनगर के जिम्मे दारी इलाके में गोविंद सिंह भंडारी कमांडेंट 48वीं वाहिनी जयनगर के निदेर्शानुसार प्राथमिक विद्यालय जानकीनगर में नागरीक कल्याण कार्यक्रम के अंतर्गत चिकित्साधिकारी ड़ा जुगल डेका चिकित्सा पदाधिकारी की मौजूदगी में निशुल्क मानव चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में 48वीं वाहिनी के चिकित्सा कर्मियों द्वारा जानकीनगर एवं आस पास के गावों के नागरिको को स्वास्थ्य संबंधी जानकारियाँ दी गयी तथा निशुल्क इलाज किया गया और आवश्यक औषधियों का निशुल्क वितरण किया गया । इस कार्यक्रमों में कुल 83 स्थानीय लोग लाभान्वित हुए । डॉक्टर जुगल डेक(चिकित्सा पदाधिकारी द्वारा वहा उपस्थित सभी लोगो को खान-पान पर विशेष ध्यान देने का सुझाव दिया तथा समय समय पर शारीरिक जांच करवाते रहने का भी सुझाव दिया। सशस्त्र सीमा बल अनवरत रूप से जन सरोकार के तथा आम जनता के हित के लिए सदैव प्रयत्नशील रही है।

कोर्ट के निर्देश पर घटना के 9 महीने बाद पुलिस ने दर्ज किया एफआईआर

- कई महीने चक्कर काटने के बाद भी पुलिस ने दर्ज नहीं किया था एफआईआर, एसपी से भी लगायी थी गुहार

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

समस्तीपुर एनएसयूआई जिलाध्यक्ष अभिनव अंशु पर हुए जानलेवा हमला मामले में पीड़ित के द्वारा आवेदन दिए जाने के बावजूद भी मुफ्फसिल पुलिस के द्वारा मामला दर्ज नहीं किया गया था। इसके बाद पीड़ित पक्ष न्यायालय के शरण में गए थे। जिसके बाद कोर्ट नालसी के बाद मुफ्फसिल पुलिस ने आखिरकार घटना के लगभग 9 महीने बाद एफआईआर दर्ज किया है। इसमें मुफ्फसिल थाना क्षेत्र के वार्ड नंबर 19 जितवारपुर निजामत के सत्यनारायण राय के पुत्र सुमित कुमार, जितवारपुर हसनपुर वार्ड नंबर 15 के स्व. दीप राय के पुत्र संजय कुमार, मुफ्फसिल ठान क्षेत्र के हसनपुर के पप्पू राय के पुत्र आनंद कुमार एवं समस्तीपुर कॉलेज समस्तीपुर के तत्कालीन प्रधानाचार्य डॉ सत्यन कुमार के विरुद्ध मामला दर्ज किया गए है। लेकिन एफआईआर दर्द हुए कई दिन बीतने के बावजूद भी पुलिस के द्वारा अभियुक्तों की गिरफ्तारी नहीं की गई है। बता दें कि पिछले साल 17 मई को पीड़ित के अनुसार एनएसयूआई जिलाध्यक्ष अभिनव अंशु के द्वारा समस्तीपुर कॉलेज समस्तीपुर के तत्कालीन प्रिंसिपल इंचार्ज पर उनके ऊपर जानलेवा हमले की साजिश रचने व दो अन्य नामजद एवं आठ अज्ञात के विरुद्ध मारपीट करने और जानलेवा हमला कर हाथ तोड़ देने का आरोप लगाते हुए थाने में आवेदन देकर प्राथमिकी दर्ज करने की गुहार लगाई गई थी। वहीं, कई महीने बीत जाने के बावजूद भी पुलिस के द्वारा मामला दर्ज नहीं किए जाने पर समस्तीपुर एसपी से भी गुहार लगाई गई थी। लेकिन बावजूद इसके घटना के कई महीने बीत जाने के बाद भी एफआईआर दर्ज नहीं हो पाया था। इसके बाद न्यायालय की शरण में जाने पर कोर्ट नालसी पर मुफ्फसिल पुलिस ने एफआईआर दर्ज किया। वहीं इस संबंध में मुफ्फसिल थानाध्यक्ष पिंकी प्रसाद ने बताया कि यह मामला उनके संज्ञान में अभी नहीं है। इसकी जानकारी ली जा रही है।

आल नवोदय विद्यालय समिति स्टाफ एसोसिएशन के केंद्रीय कार्यकारिणी की वर्चुअल मीटिंग सम्पन्न

- शिक्षक सह सदनाध्यक्ष को सिर्फ शिक्षक ही रहने दिया जाये

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

अनवस्सा के राष्ट्रीय कार्यकारिणी परिषद की वर्चुअल मीटिंग राष्ट्रीय महासचिव सुबोध कुमार यादव की अध्यक्षता में आयोजित की गई।

नवोदय कर्मियों के दर्जनों जायज मांगों से सामिति के उच्चाधिकारियों व शिक्षा मंत्रालय को अवगत कराने व ससमय निदान को लेकर आयोजित इस वर्चुअल बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि देश के विभिन्न नवोदय विद्यालयों में नियुक्त हो रहे वार्डन को हाउस के सभी बच्चों की देखरेख हेतु अकॉउंटेबल बनाया जाए।

शिक्षक सह सदनाध्यक्ष को सिर्फ शिक्षक ही रहने दिया जाये जिससे कि अकैडमिक की गुणवत्ता बनी रहे। 2004 के पहले से नियुक्त नवोदय कर्मियों के पुरानी पेंसन का मामला वित्त मंत्रालय में विचाराधीन है। इससे भी वित्तमंत्री और प्रधान मंत्री से शीघ्र निदान हेतु एक डेलीगेशन अगले सप्ताह मिलेंगे। टीजीटी से पीजीटी में रेगुलर प्रमोशन, नान टीचिंग स्टाफ को 10 प्रतिशत विशेष भत्ता, मेस कर्मियों के लिए दूसरा शिफ्ट के कर्मचारियों की व्यवस्था, एलेक्ट्रिशियन के लिए एक सहयोगी।

शिक्षकों के लिए एमएसीपी, अनवस्सा को पूर्ण मान्यता, नए कर्मचारियों के लिए एनपीएस की जगह ओपीएस आदि की लंबित मांगों पर विमर्श किया गया। बैठक को संबोधित करने वालों मेंसम्पूर्ण देश के 15 राज्यों से महासचिव सुबोध कुमार यादव, उप महासचिव अरुण कुमार साह, मृदुल चक्रबर्ती, मत्तारेड्डी, ब्रजमोहन मीना, हरीश वर्मा, बिहार के अध्यक्ष डॉ मनिंदर कुमार, महेंद्र कुमार, अरुण कुमार गौर, आरएस तोमर, पीके मोहराना, अरिकिल्ला मलेश, बिभूति रंजन मिश्रा, एसके अनंत, श्री भास्कराचारी, शम्भू प्रसाद, मोहम्मद हसनैन, रविन्द्र कुमार और केजी प्रतिभा रहे। संगठन के मजबूती और हर प्रदेशों में एसइसी का गठन पर बल दिया गया।

जनता पार्टी का गांव चलो अभियान की शुरूआत हेतु निगरानी टीम का गठन हुआ

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी खजौली विधानसभा के जयनगर मंडल में भारतीय जनता पार्टी का गाँव चलो अभियान की शुरूआत हेतु पांच सदस्यीय निगरानी टीम का गठन किया गया। जिसमें मुख्य रुप से किशुन देव सहनी राम कुमार सिंह सुरेश प्रसाद योगेंद्र शाह मनोज कुमार सिंह को बूथ सशक्तिकरण हेतु प्रवासी कार्यकर्ता के प्रवास चिंतक बनाया गया।इस कार्यक्रम की सफलता को लेकर भाजपा के ग्रामीण मंडल अध्यक्ष सह विधायक प्रतिनिधि उद्धव कूंवर ने कहा कि इस अभियान में 7 लाख गाँव में एवं नगरों के सभी बूथों पर एक कार्यकर्ता को 24 घंटे का समय लगाना है। अपने स्थान से दूसरे स्थान पर जाने वाले कार्यकर्ता को हम प्रवासी कार्यकर्ता कहेंगे।उद्धव कूंवर ने कहा कि दिनांक 10/02/24 को खजौली विधानसभा के विधायक अरूण शंकर प्रसाद जयनगर बस्ती मे गांव चलो अभियान के निमित्त स्वयं रात्रि प्रवास पर रहेंगे।उद्धव कूंवर ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली भारतीय जनता पार्टी की सरकार के द्वारा विगत 10 वर्षों में गरीब कल्याण महिला सशक्तिकरण अन्तर्वाह्य सुरक्षा सांस्कृतिक उत्थान एवं विश्व में भारत के गौरव में वृद्धि सहित विकास के सभी आयामों पर अतुलनीय कार्य हुआ है। सभी सफलतम योजनाओं को लेकर टोले मोहल्लों में प्रवास के जरिये बूथ पर प्रवास किया जाएगा। नगर मंडल अध्यक्ष सुरज गुप्ता ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी की गरीब कल्याण के प्रति विकास दृष्टि एवं केंद्र सरकार के द्वारा संपन्न हुए विकास कार्यों को जन-जन तक ले जाकर जनता का विश्वास अर्जित करते हुए 2024 के लोकसभा चुनाव में पुन समर्थन जुटाना है।

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें
@Pratahkiran www.pratahkiran.com

राष्ट्रीय दैनिक प्रात:किरण
पटना, शुक्रवार, 09 फरवरी, 2024

संक्षिप्त खबरें

हथियार के साथ एक नाबालिग गिरफ्तार

सहरसा जिला के सौरबाजार थाना क्षेत्र के समदा ग्राम में एक विधि विवादित किशोर की श्रेणी में आने वाले 17 वर्षीय युवक को 01 लोडेड देशी कट्टा के साथ निरुद्ध किया गया। कांड दर्ज कर विधि सम्मत कार्रवाई की जा रही है।

आग लगने से घर जलकर राख दो मवेशी गंभीर रूप से जख्मी

सोनवर्षा राज/सहरसा। प्रखंड के सोनवर्षा अंचल क्षेत्र के सहसौल पंचायत अन्तर्गत वार्ड नंबर 6 कुवंरगंज टोला में बुधवार की दोपहर अज्ञात कारणों से अचानक आग लगने से एक मवेशी का घर जहाँ जलकर राख हो गया।वहीं दो मवेशी बुरी तरह से झुलस गई।घटना के बाबत मिली जानकारी अनुसार कुवंरगंज टोला निवासी प्रमोद सादा के बने मवेशी घर में बुधवार दोपहर अज्ञात कारणों से अचानक आग लग गई जिसमें घर जल गया।वहीं घर में बंधे दो मवेशी बुरी तरह झुलस गए।जबकि ग्रामीणों की मदद से आग पर किसी तरह काबू पाया गया।नहीं तो एक बहुत बड़ी घटना घट सकती थी।घटना के बाद पिडित परिवार के सामने विकट समस्या उत्पन्न हो गई है। पिडित के जीविकोपार्जन का मुख्य स्रोत पशु पालन ही था।

सरस्वती पूजा करने वाले को लेना होगा लाइसेंस

विभूतिपुर, समस्तीपुर। विभूतिपुर प्रखंड अंतर्गत सरस्वती पूजा करने वाले को पूजा का लाइसेंस लेना होगा। जिसके लिए 10 फरवरी तक विहित प्रपत्र भरकर पूजा लाइसेंस के लिए आवेदन किया जाएगा। साथ ही पूजा करने वाले को निर्देशित किया गया है कि वे रात्रि के 10 बजे से सुबह 6 बजे तक ध्वनि विस्तारक यंत्र का उपयोग न करें। साथ ही मंदिर, मस्जिद, अस्पताल, विद्यालय के समीप लाउडस्पीकर नही बजाएंगे। विसर्जन जूलुस के लिए रूट चार्ट और समय निर्धारित रखे। जूलुस में कोई भी व्यक्ति नशा में नही रहेंगे। नियम का पालन करते हुए पूजा व विसर्जन करेंगे। नियम का पालन नही करनेवाले पर कार्यवाई की जाएगी।

स्वच्छता पर्यवेक्षक एवं स्वच्छता कर्मी करेंगे अनिश्चित कालीन हड़ताल

प्रात: किरण, संवाददाता

मधेपुरा जिले के जज हट सवेला पंचायत के मनरेगा भवन में स्वच्छता पर्यवेक्षक एवं स्वच्छता कर्मी संघ का बैठक आयोजित किया गया। जिसके अध्यक्षता जिला अध्यक्ष यासिर हामीद ने की। जिसमें मधेपुरा जिले के सभी प्रखंड के स्वच्छता पर्यवेक्षक एवं स्वच्छता कर्मी मौजूद रहे वहीं बैठक में गोप गुट के संयुक्त सचिव सत्येन्द्र कुमार एवं गोप गुट के अध्यक्ष विनोद कुमार विमल मौजूद रहे।

बैठक में जिला अध्यक्ष यासिर हामीद द्वारा कार्यक्रम की जानकारी सभी उपस्थित पर्यवेक्षक व स्वच्छता कर्मी के संयुक्त रूप से विस्तार से कार्यक्रम में हो रही कठिनाइयों का उल्लेख किया गया। जिसमें मुख्य मुद्दा स्वच्छता पर्यवेक्षक व स्वच्छता कर्मी के मानदेय भुगतान की गारंटी सुनिश्चित करना, कचरा प्रबंधन के अंतर्गत वसूली करने वाला यूजर चार्ज की जवाबदेही से मुक्त करने, सरकार इस चार्ज को राजस्व वसूली सहित अन्य पंचायत के कर्मी को नियुक्त कर्मियों से करना सुनिश्चित करने, मानदेय का न्यूनतम मजदूरी (दैनिक) से कम ना किया जाए एवं सेवा काल 60 साल के लिए किया जाए। इन सभी को लेकर स्वच्छता पर्यवेक्षक व स्वच्छता कर्मी के समर्थन में 16 फरवरी से संभावित धरना प्रदर्शन व अनिश्चितकालीन हड़ताल का निर्णय लिया गया।साथ-साथ सफल बनाने का निर्णय लिया गया।

बैठक के अंत में महासंघ गोप गुट अध्यक्ष व सचिव की उपस्थिति में अतिथियों द्वारा पूर्ण सहयोग करने का आश्वासन दिया गया। उनके द्वारा कहा गया कि संघर्ष करें हम आपकी आवाज राज्य स्तर तक पहुंचाएंगे वही बैठक में विषयक संबंध में आग्रह किया गया है कि संघ के सदस्यों की संख्या अपने अधिकारों एवं हक के लिए महासंघ के वसूलों स्वीकारते हुए मार्गदर्शन के में संघर्ष के लिए तत्पर हैं।

मौके पर स्वच्छता पर्यवेक्षक अभिषेक कुमार,राहुल कुमार , रणधीर रमण,विनोद शाह , संजय कुमार,मोहम्मद सिराज, दिलीप कुमार राम,सुमन कुमार,बमबम कुमार ठाकुर,आकाश कुमार,मोहम्मद गुलफान आलम ,निरंजन कुमार,सद्दाम आलम ,बमबम कुमार, मोहम्मद नफीस,रामजीवन कुमार, मोहम्मद सद्दाम हुसैन, राहुल कुमार यादव,संजय कुमार टू, पिंटू कुमार ,रोशन कुमार,पारस कुमार,अजय कुमार,रंजन शाह, राजेश कुमार ,गुरुदेव मुखिया,दिवाकर झा,जवाहर कुमार,दिलीप कुमार,मोहम्मद फिरोज आलम,शंकर कुमार पोद्दार,संजय कुमार, गोल्डन कुमार श,कुंदन कुमार,मंटू कुमार मंडल,रुकेश कुमार,राजेश कुमार मौजूद रहे।

कोडिन युक्त कफ सिरप के साथ एक गिरफ्तार भेजा गया जेल

प्रात: किरण, संवाददाता

सलखुआ/सहरसा। पुलिस को गुप्त सूचना प्राप्त हुई की सलखुआ थाना क्षेत्र के राजेश कुमार, पिता-दिनेश यादव ग्राम-मांठा, थाना-सलखुआ, जिला-सहरसा के द्वारा अपने घर कोडिन युक्त कॅफ सिरप रखकर कय विकय किया जा रहा है। उक्त सूचना के सत्यापन एवं कार्रवाई हेतु सलखुआ पुलिस के द्वारा पुलिस वाहन से सशस्त्र बल के साथ ग्राम मांठा स्थित राजेश कुमार के घर कर घेराबंदी किया गया। घेराबंदी करने के उपरांत 01 व्यक्ति उक्त घर से प्लास्टि का थैला लेकर भागने लगा जिसे पुलिस बल के सहायोग से पकड़ा गया। पकड़ाये व्यक्ति के पास से प्लास्टिक के थैला में 19 पीस कोडिन युक्त कफ सिरप पाया गया तथा उक्त व्यक्ति का नाम पता पूछने पर राजेश कुमार, पिता-दिनेश यादव ग्राम मांठा, थाना-सुलखुआ, जिला-सहरसा बतलाया गया। अग्रिम कार्रवाई की जा रही है।

"आराधना" सरस्वती पूजा को लेकर सभी जगह शुरू की जा रही है तैयारियां

प्रात: किरण, संवाददाता

सहरसा। जिले में सभी जगह सरस्वती पूजा को लेकर तैयारियां शुरू की जा रही है। प्रत्यके वर्ष सरस्वती पूजा माघ महीने के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को मनाई जाती है. इस दिन विद्या की देवी मां सरस्वती की पूजा-आराधना की जाती है। देश भर में स्कूल, कॉलेजों, शैक्षणिक संस्थानों में सरस्वती जी की पूजा लोग विधि-विधान से करते हैं. वसंत पंचमी के दिन ही मां सरस्वती की जयंती पड़ती है, इसलिए भी इसे सरस्वती पूजा कहते हैं. तो चलिए जानते हैं इस वर्ष कब मनाई जाएगी सरस्वती पूजा, क्या है शुभ मुहूर्त और पूजा विधि सरस्वती पूजा इस साल 14 फरवरी को मनाई जाएगी. इस दिन विद्या और ज्ञान की देवी मां सरस्वती की पूजा लोग विधि अनुसार करते हैं। हिंदू धर्म में वसंत पंचमी का विशेष महत्व है. इस दिन ज्ञान और विद्या की देवी मां सरस्वती की पूजा की जाती है. मान्यता है कि वसंत पंचमी के दिन ही देवी मां सरस्वती का जन्म हुआ था, इसलिए यह शुभ दिन उन्हें समर्पित है. सरस्वती पूजा हर साल माघ महीने के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को बहुत ही धूमधाम से मनाई जाती है. सभी स्कूल, कॉलेजों में मां सरस्वती की पूजा-उपासना पूरे विधि-विधान से होती है. वसंत पंचमी के दिन ही मां सरस्वती की जयंती पड़ती है। इसलिए भी इसे सरस्वती पूजा से जाना जाता है. जान लेते हैं इस साल कब की जाएगी फरवरी के महीने में विद्या की देवी माता सरस्वती की पूजा, क्या है शुभ मुहूर्त और पूजा विधि सरस्वती पूजा करनी चाहिए। इस वर्ष माघ माह के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि 13 तारीख को शुरू हो होगी। जिसका समय दिन के दो बजकर 41 मिनट है. यह 14 फरवरी को लगभग 12 बजकर 10 मिनट के करीब समाप्त हो जाएगा। सरस्वती पूजा 2024 का शुभ मुहूर्त पंडित कहते हैं कि 14 फरवरी के दिन सरस्वती पूजा करने का शुभ मुहूर्त सुबह 10 बजकर 30 मिनट से लेकर दोपहर 1 बजकर 30 मिनट तक रहेगा। इस दौरान आप मां सरस्वती की पूजा-पाठ विधि अनुसार करेंगे तो आपको विशेष लाभ प्राप्त होगा। सरस्वती पूजा की विधि वसंत पंचमी के शुभ मौके पर पीले वस्त्र धारण करना चाहिए। उस दिन सुबह उठकर स्नान करें. पीला वस्त्र पहनें यदि इस रंग का कपड़ा नहीं है तो आप सफेद रंग का वस्त्र भी पहन सकते हैं,अपने पूजा स्थल की साफ-सफाई करें, वहां चौकी रखें और पीले रंग का वस्त्र बिछाएं, देवी सरस्वती को पीले रंग का वस्त्र पहनाकर, उस चौकी पर स्थापित करेंगे। उनके समक्ष सरस्वती पूजा करने का संकल्प लें, पीले रंग का फूल अर्पित करें,माला पहनाएं. अब अक्षत, पीले रंग की रोली, चंदन आदि चढ़ाएं. धूप, दीप, अगरबत्ती जलाएं. पीले रंग की मिठाई से भोग जाएंगे। अब सरस्वती वंदना और मंत्रों का उच्चारण करते हुए मां सरस्वती जी की पूजा करें. अंत में हवन करें, इस दौरान ह्यमूर्ति कार भी तरह तरह के अंदाज में पेंट करने की बात समझ रहे है ओम श्री सरस्वत्यै नमः: स्वहाह्व मंत्र का जाप करें और फिर आरती करें, हाथ जोड़कर सरस्वती जी से प्रार्थना करें कि वो आपको ज्ञान, बुद्धि 6 निर्णय ले सके।

महादलित बस्ती के बच्चे अभी भी शिक्षा से कोशो दूर

प्रात: किरण, संवाददाता

सौर बाजार/सहरसा। ऐसा भी एक गांव है जहां के बच्चे शिक्षा से अभी भी कोसो दूर है। गांव में बच्चे को पढ़ने के लिए सरकारी स्कूल नहीं है। जिसके कारण वहां के अधिकतर बच्चे निरक्षर होते जा रहे हैं। शिक्षा के बिना कई नौनिहालों का जीवन बर्बाद होने के कगार पर है। बात करते हैं जिले के सौरबाजार प्रखंड के कढ़ैया पंचायत के वार्ड नम्बर 12 जीवनियां टोला महादलित बस्ती की जहां शिक्षा की घोर अभाव है। बता दें कि सरकारी स्कूल है भी तो गांव के बगल सुहथ और कचरा गांव में लेकिन नामांकन के बाबजूद भी दूरी के कारण जीवनियां टोल के बच्चे उस स्कूल में पढ़ने के लिए नहीं जाते हैं। वहीं बच्चे के अभिभावकों ने कहा कि कुछ बच्चों का नमांकन बगल के स्कूल में भी है लेकिन दूरी के कारण और स्कूल में गुणवत्ता पूर्ण खाना नहीं मिलने के कारण बच्चे स्कूल जाने से कतराते हैं। इसलिए वहां के स्थानीय लोगों ने सरकार से नौनिहालों को पढ़ने के लिए गांव में ही स्कूल की मांग की है। बताते चलें कि अधिकारियों के द्वारा विभिन्न स्कूलों में शिक्षा संवाद का भी आयोजन किया गया ताकि शिक्षा से संबंधित अन्य समस्याएं भी दूर हो सके लेकिन इस महत्वपूर्ण समस्या से वहां के अधिकारी भी अंजान बने रहे।

आगमानंद महाराज ने कहा कि माता की कृपा तीन विधियों से प्राप्त किया जा सकता है

प्रात: किरण, संवाददाता

पतरघट/सहरसा। जम्हरा काली स्थान में आयोजित दो दिवसीय काली कथा एवं रामकथा का बुधवार को भक्तिमय माहौल में प्रारंभ हुआ। श्री रामचंद्राचार्य परमहंस स्वामी आगमानंद जी महाराज द्वारा पहले सत्र में उन्होंने मां काली की विशेष पूजा की। तथा दूसरे सत्र का शुभारंभ आचार्य ब्रजमोहन सिंह लाल बाबा ने किया। उन्होंने कहा कि स्वामी आगमानंद जी से यहां के लोग लगातार उनसे दीक्षा ले रहे हैं। मां काली की कथा के दौरान स्वामी आगमानंद जी महाराज ने कहा कि माता की कृपा तीन विधियों से प्राप्त किया जा सकता है। जिनमें पूजा अर्चना, आराधना और साधना प्रमुख हैं। जिसके द्वारा वे फल-फूल-जल जो कुछ भी अर्पित करते हैं। उन्हें माता का आशीर्वाद मिलता है। आराधना में जप और पाठ किया जाता है। साधना विधि में किसी गुरु की कृपा प्राप्त कर उनकी संगत में भक्तों को माता का आशीर्वाद प्राप्त होता है। भक्तों को माता की पूजा में भय नहीं रखना चाहिए। लेकिन सतर्कता जरूर रखी जानी चाहिए। मां काली बहुत ही जल्द अपनी कृपा भक्तों पर बरसातीं हैं। भक्त आसानी से उन्हें प्रसन्न कर सकते हैं। बस उन्हें मन में आस्था, विश्वास और समर्पण रखने की आवश्यकता है। उक्त दो दिवसीय धार्मिक कार्यक्रम की सफलता में स्थानीय ग्रामीण जुटे थें।

विद्यालय में चारदिवारी होने से पठन पाठन एवं विधि-व्यवस्था में सुधार होगी

प्रात: किरण, संवाददाता

पतरघट/सहरसा। प्रखंड क्षेत्र के मध्य विद्यालय ठाढ़ी प्रांगण की चहारदिवारी का गुरुवार को बीडीओ रचना भारती एवं मुखिया रीना देवी ने शिलान्यास किया। महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना के तहत 12,64902 की लागत से बनने वाली चहारदीवारी का बीडीओ रचना भारतीय एवं मुखिया रीना देवी ने शिलान्यास किया। बीडीओ ने कहा कि उक्त चहारदीवारी निर्माण कार्य समय पूर्ण हो जाने से विद्यालय में पठन पाठन एवं विधि-व्यवस्था में सुधार होगी। वहीं मनरेगा पीओ मुकेश कुमार ने कहा चहारदीवारी निर्माण कार्य की गुणवत्ता उनके प्राथमिकी में है। चहारदीवारी निर्माण कार्य मनरेगा कर्मियों के देखरेख में होगी। वही ग्रामीणों का कहना है कि चार दिवारी नहीं रहने के कारण से यहां पर पठन-पाठन में कठिनाई उत्पन्न होते रहते हैं। मौके पर पीटीए सत्यनारायण कुमार, पीआरएस अखिलेश प्रसाद, आवास सहायक बबलू कुमार, मुखिया प्रतिनिधि मंटू यादव, अरविंद यादव, दिनेश यादव, संतोष यादव, रामचन्द्र यादव, बबलू, संजय ,कार्तिक, बिट्टू ,मुरारी ,शत्रुघ्न, हरेराम, सहित ग्रामीण मौजूद थें।

कोडिनयुक्त कफ सीरप के साथ एक तस्कर गिरफ्तार ,भेजा गया जेल

प्रात: किरण, संवाददाता

आलमनगर, मधेपुरा आलमनगर थाना पुलिस द्वारा 71 बोतल कोडिनयुक्त कफ सीरप के साथ एक तस्कर को गिरफ्तार किया गया। इस बाबत आलमनगर थाना अध्यक्ष अखिलेश कुमार ने बताया कि सुचना मिली कि आलमनगर नगर पंचायत के शंकरी टोला में अवेध कफ सीरप बेचा जा रहा है। सुचना मिलते ही गश्ती पर गये पुलिस पदाधिकारी कृष्ण कुमार सिंह को छापामारी करने का निर्देश दिया गया।छापामारी दल ने शंकर मंडल पिता महेन्द्र मंडल के जाँच पड़ताल की गई जहाँ दो जगह से 71 बोतल कोडिनयुक्त कफ सीरप बरामद किया गया एवं शंकर मंडल को गिरफ्तार किया गया। जिस पर प्राथमिकी दर्ज कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।

रॉडिक कंसल्टेंट्स द्वारा महिला सशक्तीकरण की तरफ प्रभावी कदम

प्रात: किरण, संवाददाता

जमुई, बिहार, रॉडिक कंसल्टेंट्स ने जमुई, बिहार में महिला सशक्तिकरण और कौशल विकास गतिविधि को प्रायोजित करके सामुदायिक कल्याण की दिशा में एक मजबूत पहल की है। एक कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी के रूप में, कंपनी बिहार के सबसे पिछड़े जिलों में से एक जमुई में महिलाओं के प्रशिक्षण के लिए विभिन्न केंद्र स्थापित करने में वित्तीय सहायता कर रही है, जहां वंचित समुदायों की महिलाओं को सिलाई और कढ़ाई में मुफ्त प्रशिक्षण दिया जा रहा है। प्रशिक्षण कार्यक्रम जमुई के सोनो में एक पंजीकृत गैर सरकारी संगठन लोक सेवक संस्थान द्वारा संचालित किए जाते हैं। यह कार्यक्रम 20-30 आयु वर्ग की आदिवासी महिलाओं को सिलाई और कढ़ाई कौशल प्रदान करने पर केंद्रित है। यह प्रशिक्षण पहल एक सतत कार्यक्रम है जिसका उद्घाटन नवंबर माह में किया गया था। अपने दूसरे चरण में फ्डऊक्क्ठ की वित्तीय मदद ने तीन शिक्षण केंद्र खोलने में सहायता की है, जल्द ही चौथा केंद्र खोलने की योजना बनाई जा रही है। प्रशिक्षण कार्यक्रम में नामांकित महिलाओं की कुल संख्या 90 की प्रभावशाली संख्या तक पहुंच गई है, जो स्थानीय समुदाय के व्यापक उत्साह और भागीदारी को दशार्ती है। कौशल विकास पर रॉडिक का जोर देश के महिला विकास और महिलाओं के लिए स्वरोजगार मिशन और सामुदायिक विकास के साथ संरेखित है, जो देश के पिछड़े क्षेत्रों में रहने वाले उपेक्षित लोगों के लिए आर्थिक विकास और विकास के समान अवसर पैदा करता है। जमुई में लोक सेवक संस्थान द्वारा आयोजित प्रशिक्षण सत्रों को प्रायोजित करके, कंपनी का लक्ष्य इन क्षेत्रों में हाशिए पर रहने वाली महिलाओं की स्थिति का उत्थान करना है। विविध पृष्ठभूमि की महिलाओं ने सिलाई और कढ़ाई कौशल हासिल करने में उल्लेखनीय प्रगति प्रदर्शित की। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम कौशल विकास और सामुदायिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देने में कॉर्पोरेट पहल के सकारात्मक प्रभाव को रेखांकित करता है। अपनी सामुदायिक विकास पहलों के अलावा, एक इंजीनियरिंग और डिजिटल नवाचार सलाहकार के रूप में रोडिक ने बिहार के दूरदराज के इलाकों में स्वास्थ्य देखभाल डिजिटलीकरण में भी महत्वपूर्ण प्रगति की है, जहां स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुंच राज्य के लिए एक चुनौती रही है। इसके अलावा, कंपनी ने विभिन्न अन्य गतिविधियों के माध्यम से महिलाओं के विकास की दिशा में पहल की है।

राशन कार्ड के लंबित आवेदनों की समय से जांच कर प्रक्रिया करें पूरी:उप विकास आयुक्त

प्रात: किरण, संवाददाता

- प्रवासी श्रमिकों का बनेगा राशन कार्ड
- उपविकास आयुक्त ने की समीक्षात्मक बैठक

मधेपुरा राज्य खाद्य निगम, सहकारिता,मध्याह्न भोजन व आपूर्ति योजना की समीक्षा बैठक डीआरडीए परिसर स्थित झल्लू बाबू सभागार में गुरुवार को उप विकास आयुक्त अवधेश कुमार आनंद की अध्यक्षता में हुई।

समीक्षा बैठक में उप विकास आयुक्त ने सार्वजनिक वितरण प्रणाली विक्रेता की नई नियुक्ति हेतु स्थापना उप समाहर्त्ता को प्रेषित कि गई कोटिवार तैयार आदर्श आरक्षण रोस्टर को विभागीय नियमानुसार जांचकर,सत्यापन करते हुए जिलाधिकारी से अनुमोदन प्राप्त कर जिला आपूर्ति कार्यालय को वापस करने को कहा।

प्रवासी श्रमिकों का बनेगा राशन कार्ड : समीक्षा के क्रम में डीडीसी ने कहा कि महानगरों में काम करने वाले श्रमिक जिनका राशन कार्ड नहीं बना हुआ है। ऐसे सभी प्रवासी श्रमिकों का राशन कार्ड बनाया जाना है। ऐसे श्रमिकों का सत्यापन कर उनसे आवेदन प्राप्त कर नियमानुसार उन प्रवासी श्रमिक का राशन कार्ड निर्गत किया जाए।

कार्ड बनने के बाद लाभूकों को उचित मात्रा में ससमय गुणवतापूर्ण खाद्यान्न मुहैया कराया जाए।

पीडीएस दुकानों का नियमित हो निरीक्षण : उपविकास आयुक्त ने कहा कि खाद्यान्न वितरण प्रतिशत में प्रगति लाने के साथ ही लंबित राशन कार्ड आवेदनों को समय सीमा में निष्पादित किया जाए। वहीं लंबित आधार सीडिंग कार्यों का विभाग द्वारा निर्धारित समय सीमा के अन्दर पूर्ण करें। इसके अलावे असक्रिय राशन कार्ड के विरूद्ध नियमानुसार कार्रवाई करें। नियमित रूप से पीडीएस दूकान का निरीक्षण करने का निर्देश संबंधित पदाधिकारियों को दिया गया।

धान क्रय के लक्ष्य को करें पूरा : बिहारीगज, मुरलीगंज व आलमनगर टीपीडीएस गोदाम का पहुंचपथ अविलंब पूर्ण कराने, खाद्यान्न का ससमय उठाव एवं वितरण करने हेतु जिला प्रबंधक को निर्देश डीडीसी ने बैठक में दिया।

उन्होंने कहा कि धान अधिप्राप्ति (वर्ष-2023-24), निर्धारित लक्ष्य के अनुरूप पूर्ण करने, सीएमआर की अधिप्राप्ति ससमय करने, सहकारी समितियों में गोदाम निमार्ण को अविलंब पूर्ण कराने, मुख्यमंत्री हरित कृषि सयंत्र योजना का भौतिक सत्यापन करने, के संबंध में समीक्षा कर जिला सहकारिता पदाधिकारी को आवश्यक निदेश दिया गया। पीएम पोषण योजना की समीक्षा कर जिला कार्यक्रम पदाधिकारी, मध्याह्न भोजन को आवश्यक निर्देश दिया गया।

बैठक में जिला आपूर्ति पदाधिकारी शंकर शरण, अनुमंडल पदाधिकारी उदाकिशुनगंज एसजेड हसन, अनुमंडल पदाधिकारी धीरज कुमार सिन्हा, जिला प्रबंधक राज्य खाद्य निगम सुनील कुमार, जिला सहकारिता पदाधिकारी प्रशांत कुमार सहित अन्य मौजूद थे।

छह वर्षिय नातिन के साथ चचेरे नाना ने किया दुष्कर्म

प्रात: किरण, संवाददाता

सोनवर्षा राज/सहरसा। प्रखंड क्षेत्र के बसनहीं थाना क्षेत्र स्थित सहशौल पंचायत के गरेड़ी टोला में रिश्ते के नाना द्वारा अपनी छह वर्षिय नातिन के साथ दुष्कर्म करने का जघन्य मामला सामने आया हैं।दुष्कर्म के दौरान बच्ची को लहुलहान देख दुष्कर्मी उसे छोड़ गांव से फरार हो गया।घटना की जानकारी मिलते ही पिड़ीत बच्ची के वृद्ध नाना द्वारा उसका ईलाज एक नीजी क्लिनिक में करवाया गया हैं।घटना के बाबत मिली जानकारी अनुसार गरेडी.टोला निवासी राजेन्द्र मंडल की छह वर्षिय नातिन सोमवार की शाम अपने दरवाजे पर खेल रही थी।इस दौरान उसके नाना सहशौल बाजार तथा नानी व मां पास के अपने मकई के खेत में कमौनी करने गई हुई थी।दरवाजे पर अकेले खेल रही बच्ची को देख बगल के चचेरे नाना 55 वर्षिय मनोज पाल ने उसे पैसे देकर अपने सुने घर में ले जाकर दुष्कर्म करने लगा।इस दौरान बच्ची को दर्द से छटपटाते और लहुलहान होते देख वो बच्ची को छोड़कर खेत में कमौनी कर रही उसकी मां के पास जाकर कहा कि तुम्हारी बेटी को कूछ हो गया है।पिड़ित बच्ची की मां अपनी बेटी को लहुलहान देखी तब उसने अपने वृद्ध पिता को बुलाकर बच्ची को लेकर सोनवषार्राज स्थित एक नीजी क्लिनिक में भर्ती करवाया।जहां बच्ची का इलाज किया गया।मंगलवार सारे दिन मामले की ग्रामीणों द्वारा पंचायत के माध्यम से सलटाने का प्रयास किया गया।लेकिन आरोपी के गांव से भाग जाने की वजह से बात नहीं बनी।पीड़ित बच्ची के नाना ने बताया की उसके सभी पूत्र व बच्ची के पिता परदेश में है जो गूरूवार को घर पहूंचेगे तब वो सब थाना जाएगें। इस संबंध में जानकारी के लिए बसनहीं थाना अध्यक्ष से संपर्क करने का प्रयास किया तो थाना अध्यक्ष का मोबाइल ऑफ आया ।

भैंस को पीट पीट कर हत्या करने वाले एक अपराधी गिरफ्तार, भेजा जेल

पतरघट/सहरसा। रात्री में अज्ञात अपराधकर्मियों द्वारा भैंस चोरी करने के क्रम में भैंस को अज्ञात अपराधकर्मियों द्वारा पीट-पीट कर एवं गला दबाकर हत्या कर देने के आरोप में ग्राम- भद्दी निवासी नागेंद्र सिंह के द्वारा एक काण्ड प्रतिवेदन कराया गया था। जिसपर सौरबाजार पतरघट ओपी में मामला दर्ज की गई ।वही इस काण्ड के सफल उद्भेदन एवं के साथ गिरफ्तारी हेतु पुलिस अधीक्षक सहरसा के निर्देशन में अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी सदर सहरसा के नेतृत्व में पतरखर ओ॰पी पुलिस एवं तकनीकी शाखा सहरसा के साथ एक रक्-ळ टीम का गठन किया गया ।जिसके बाद इस काण्ड का सफल उद्नेछन करते हुए एक प्राथमिकी अभियुक्त को गिरफ्तार किया गया।जिसमे गिरफ्त में आए पुरुषोत्तम कुमार है जिसके पास से दो मोबाइल बरामद किया ।

श्रीश्याम प्रभु की 11वीं महाज्योति महोत्सव पर निकाली गई निशान यात्रा

प्रात: किरण, संवाददाता

मुरलीगंज,मधेपुरा शहर के श्रीश्याम परिवार की ओर से गुरूवार को श्रीश्याम प्रभु की 11वीं महाज्योति एवं भजन जागरण कार्यक्रम को लेकर भव्य निशान यात्रा निकाली गई। शहर के गोलबाजार स्थित बलभद्र भवन परिसर में विधि विधान के साथ पूजन के बाद भव्य विशाल निशान यात्रा निकाली गई। निशान यात्रा में श्रद्धालुओ की भीड़ उमड़ी रही। आयोजन स्थल से निशान यात्रा निकलकर गोलबाजार, हाट बाजार, मिडिल चौक, दुर्गा स्थान चौक, महावीर चौक होते हुए कार्यक्रम स्थल पर पहुंच कर समापन हुआ। गाजे बाजे ढ़ोल नगारे भक्तिभजन के साथ श्रीश्याम परिवार के सदस्यों निशान यात्रा में भाग लिया।

जदयू-बीजेपी सरकार के राज में कानून व्यवस्था का निकला दिवाला : राकेश कुमार ठाकुर

समस्तीपुर, प्रात: किरण संवाददाता

जिले के शिवाजीनगर प्रखंड के रहटोली निवासी व राजद शिक्षक प्रकोष्ठ के जिलाध्यक्ष शत्रुध्न यादव के पुत्र विजेन्द्र यादव को अपराधियों द्वारा गोली मार कर जख्मी करने की घटना की राजद ने तीव्र निंदा की है। राजद जिला प्रवक्ता राकेश कुमार ठाकुर ने राज्य की कानून व्यवस्था पर सवाल उठाए हैं। राजद प्रवक्ता ने कहा कि जदयू-बीजेपी सरकार के राज में कानून व्यवस्था का दिवाला निकल चुका है। बदमाश सरेआम कानून की धज्जियां उड़ा रहे हैं। कहा कि जब से पुनः जदयू का भाजपा से गठबंधन हुआ है तब से अपराध की घटनाएं चरम पर है और सरकार इसे रोक नहीं पा रही है। बढ़ते हुए अपराध की घटनाओं से पूरा बिहार आहत है और बिहार की छवि पर भी प्रतिकूल असर पड़ा है।

क्वाड अब प्राथमिकता नहीं

2018 में चीन के साथ शुरू हुए शीत युद्ध के क्रम में संभवतः अमेरिका को क्वाड की जरूरत महसूस हुई, तो इस समूह को खूब महत्त्व मिला। लेकिन अब बनी परिस्थितियों में यह समूह उसके लिए उतना अहम नहीं रह गया है। अमेरिका की इंडो-पैसिफिक रणनीति के तहत बनाया गया समूह- क्वाड्रैंगुलर सिक्युरिटी डॉयलॉग (क्वाड) अमेरिका की प्राथमिकता में नीचे चला गया है। इस बात का संकेत तो तभी मिल गया, जब पिछले महीने क्वाड शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए नई दिल्ली आने से अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने इनकार कर दिया। इस कारण प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की यह योजना कामयाब नहीं हो सकी कि क्वाड में शामिल अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के नेता 25 जनवरी को क्वाड शिखर सम्मेलन में भाग लेने के बाद 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस परेड में साझा मुख्य अतिथि होंगे। अब नई दिल्ली स्थित अमेरिकी राजदूत एरिक गारसेटी स्पष्ट किया है कि क्वाड का संचालक की कुर्सी पर भारत विराजमान है और अमेरिका उसकी बगल की सीट पर बैठा है, जिसके पास सिर्फ भटकाव सुधार का हैंडल है। इसका अर्थ यह संदेश है कि क्वाड को क्या भूमिका देनी है, यह भारत खुद तय करे। उन्होंने जो कहा कि उसका अर्थ यह भी है कि फिलहाल क्वाड दिशाहीन है। गारसेटी ने यह साफ कर दिया कि राष्ट्रपति जो बाइडेन अगले नवंबर में होने वाले अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव के पहले भारत नहीं आ पाएंगे। उसी परिचर्चा में भारत के तत्कालीन विदेश सचिव श्याम शरण ने यह राज खोला कि जब 2007 में तत्कालीन जापानी प्रधानमंत्री शिंजो आबे ने पहली बार क्वाड का प्रस्ताव रखा था, तब अमेरिका ने भारत को संदेश भेजा था कि वह इस योजना को ज्यादा प्रोत्साहित ना करे। वजह थी कि तब अमेरिका ऐसा कदम उठाने से बचना चाहता था जो चीन को नागवार गुजरे। 2018 में चीन के साथ शुरू हुए शीत युद्ध के क्रम में संभवतः अमेरिका को क्वाड की जरूरत महसूस हुई, तो इस समूह को खूब महत्त्व मिला। लेकिन अब बनी परिस्थितियों में अमेरिका चीन के साथ युद्ध से बचने की नीति पर चल रहा है। व्यापारिक क्षेत्र में संबंध विच्छेद के बजाय संबंध में जोखिम घटाने की नीति पहले ही अपनाई जा चुकी है। तो लाजिमी है कि क्वाड भी उसकी प्राथमिकता में नीचे चला गया है। अब यह बाकी तीन देशों को सोचना है कि क्वाड सचमुच कितना उनके अपने हित में है?

एक देश, एक संहिता क्यों?

समान नागरिक संहिता न तो सही है और न ही पूरी तरह गलत है। इसे लागू करने की भी जल्दी नहीं है, क्योंकि न तो संवैधानिक बाध्यता है और न ही तुरंत आवश्यकता है। गोवा भाजपा-शासित राज्य है, वहां नागरिक संहिता कानून के तौर पर लागू है। उत्तराखंड विधानसभा में नागरिक संहिता का बिल पेश किया जा चुका है। वह पारित भी हो जाएगा। गुजरात और असम ने भी ऐसी ही जुबान बोलनी शुरू कर दी है। ये सभी भाजपाई राज्य हैं। ऐसा नहीं है कि विवाह, तलाक और उत्तराधिकार संबंधी लैंगिक अन्याय को किसी ने संबोधित नहीं किया। केरल का उदाहरण सामने है, जहां 1975 में हिंदू विवाह कानून में संशोधन कर उत्तराधिकार अधिकारों में महिला को समानता दी गई। दक्षिणी राज्यों और महाराष्ट्र ने भी उसका अनुसरण किया और कानून में सुधार किया। लैंगिक अपराध और दोष अब भी होंगे। ऐसा भी नहीं है कि लिव इन रिलेशनशिप की आड़ में ऐयाशी और टाइम पास संबंधों पर लगाम कसने के लिए समान नागरिक संहिता ही एकमात्र विकल्प है। उसके लिए अलग बिल पारित कर कानून बनाया जा सकता है। लिव इन के लिए बाकायदा पंजीकरण या माता-पिता की सहमति आदि के जो प्रावधान उत्तराखंड बिल में किए गए हैं, वे तत्संबंधी कानून में भी किए जा सकते हैं। वैसे भी लिव इन को नियंत्रित करने और विनियमित करने का काम नागरिक संहिता का नहीं है। यह नैतिक-पुलिस का ही उदाहरण है। बिल के मुताबिक, यदि लिव इन के पंजीकरण में विलंब होता है, तो आपको जेल में डाला जा सकता है और जुमार्ना भी ठोंका जा सकता है। लिव इन संबंधी प्रावधान मध्यकालीन सामाजिक संहिता के हिस्से लगते हैं। बहरहाल ऐसा भी नहीं है कि समान नागरिक संहिता से भारतीय जीवन पर पश्चिमी संस्कृति के अंधड़ के प्रभाव नहीं पड़ेंगे अथवा उनसे मुक्त हुआ जा सकेगा। हम तो संविधान और लोकतंत्र के लिए पश्चिम के ही मुखापेक्षी रहे हैं। सांस्कृतिक निशान कैसे मिट सकते हैं? सिर्फ बहुविवाह, हलाला, विवाह-तलाक के समान अधिकार और उत्तराधिकार के लिए, एक राज्य के स्तर पर, नागरिक संहिता की कोई तार्किकता नहीं है। बेशक संविधान के अनुच्छेद 44 में समान नागरिक संहिता को रखा गया है और सरकार से अपेक्षा की गई है कि वह अपने नागरिकों के लिए समान नागरिक संहिता लागू करेगी। दरअसल जब संविधान बनाया जा रहा था और आज की सामाजिक, पारिवारिक, धार्मिक परिस्थितियों में बड़े गहरे फासले हैं। संविधान में भी 100 से अधिक संशोधन किए जा चुके हैं। सर्वोच्च अदालत ने भी नागरिक संहिता लागू करने की पैरवी की है। उसके कथन का नए सिरे से अध्ययन और मूल्यांकन किया जाना चाहिए। यदि देश में एक ही नागरिक संहिता की जरूरत है, तो केंद्र की मोदी सरकार नए जनादेश के बाद उस पर कार्रवाई शुरू करे। चुनावों से पहले राज्य-दर-राज्य में इसे लागू करना ह्यअन्याय की राजनीतिह्ल है, क्योंकि एक बहुत बड़ा भारतीय वर्ग इसके खिलाफ है। वे सडकों पर उतरेंगे, आंदोलन करेंगे, अराजकता और कानूनहीनता फैलेगी। क्या आम चुनाव से पहले ऐसा माहौल बनाना भी राजनीतिक रणनीति है? दरअसल समान नागरिक संहिता 1951 में ह्यजनसंघह्ल के गठन से ही प्रमुख बुनियादी एजेंडे का हिस्सा रही है। भाजपा ने भी उसे धारण किया और चुनाव घोषणा-पत्रों में भी उसे शामिल रखा। अब भाजपा देश के 17-18 राज्यों में सत्तारूढ़ है, केंद्र में भी बीते 10 साल से उसकी सरकार है, लिहाजा वह एजेंडा पूरा किया जा रहा है। एजेंडे में से अनुच्छेद 370 पूरा किया जा चुका है। बांग्लादेशी घुसपैठियों को देश से भगाने का एजेंडा फिलहाल हाशिए पर है। अयोध्या राम मंदिर बन रहा है। अब समान नागरिक संहिता की बारी है। यदि इरादा सामाजिक परिवर्तन और समरूपता का है, तो नागरिक संहिता ह्यराष्ट्रीयह्ल होनी चाहिए। राज्य स्तर पर प्रयासों से क्रांतिकारी बदलाव संभव नहीं।

जोखिम को समझना जरूरी

दीर्घकाल में अमेरिका की वित्तीय स्थिति और कमजोर होगी। यह बात फेडरल रिजर्व के प्रमुख ने स्वीकार की है। स्पष्टतः अमेरिकी संकट का पूरी दूनिया की वित्तीय व्यवस्था की मुसीबत डाल देगा। इस जोखिम से बचने की तैयारी अभी से की जानी चाहिए। अमेरिका के केंद्रीय बैंक-फेडरल रिजर्व के प्रमुख जेरोम पॉवेल ने एक ऐसी बात कही है, जिससे विश्व अर्थव्यवस्था के लिए उभर रहे खतरे का संकेत मिलता है। एक इंटरव्यू में पॉवेल ने कहा- मैं ये बात कहूंगा कि अमेरिका जिस वित्तीय राह पर है, वह दीर्घकालिक नजरिए से टिकाऊ नहीं है। इसका सीधा अर्थ यह है कि अमेरिका सरकार पर कर्ज अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर की तुलना में अधिक से तेजी से बढ़ रहा है। यह उस बात की स्वीकारोक्ति है, जिसकी चर्चा अनेक विशेषज्ञ काफी समय से कर रहे हैं। अमेरिका सरकार पर कुल कर्ज 34 ट्रिलियन डॉलर से ज्यादा हो चुका है, जबकि अमेरिका की जीडीपी 24-25 ट्रिलियन डॉलर ही है। इस कर्ज में से 8.9 ट्रिलियन डॉलर अगले वर्ष चुकाने होंगे। इस बीच 2024 में अमेरिका राजकोषीय घाटा 1.4 ट्रिलियन डॉलर रहने का अनुमान लगाया गया है। मतलब यह कि अमेरिका सरकार को खर्च चलाने और अपनी ऋण देनदारियां निभाने के लिए एक साल में दस ट्रिलियन डॉलर का और कर्ज लेना होगा। मतलब साल भर बाद कर्ज का बोझ और बढ़ा हुआ होगा। इस बीच देश में ब्याज दरें घटाने की मांग जोर पकड़ती जा रही है। फेडरल रिजर्व ने संकेत दिया है कि इस साल चार कटौतियां की जा सकती हैं। उस हाल में अमेरिकी बॉन्ड्स पर कम ब्याज मिलेगा, जिससे उनमें निवेशकों की दिलचस्पी घट सकती है। इस संभावना के मद्देनजर अभी ही विश्व बाजार में सोने की कीमत लगभग 2200 डॉलर प्रति औंस के ऊंचे स्तर पर पहुंच गई है। यानी लोग स्वर्ण में पैसा लगाना अधिक लाभदायक मान रहे हैं। आशंका है कि इन कारणों से अमेरिकी सरकार को अपने बॉन्ड्स पर बाजार दर से अधिक ब्याज देना पड़ सकता है। इससे दीर्घकाल में उसकी वित्तीय स्थिति और कमजोर होगी। यही बात अब पॉवेल ने स्वीकार की है। चिंता की बात यह है कि अमेरिकी वित्तीय बाजार से विश्व अर्थव्यवस्था गहराई से जुड़ी हुई है। उसका संकट का नतीजा पूरी दूनिया की वित्तीय व्यवस्था की मुसीबत के रूप में सामने आएगा। इसलिए भारत सहित तमाम देशों को उससे बचने की तैयारी अभी से शुरू कर देनी चाहिए।

दिल्ली में दो सरकारों की लड़ाई

मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल का दावा है कि उनकी सरकार कुल बजट का 14 फीसदी के करीब हिस्सा स्वास्थ्य पर खर्च करती है, जबकि भारत सरकार का खर्च दो फीसदी के करीब है। दिल्ली सरकार का दावा है कि उसने दिल्ली की स्वास्थ्य सेवाओं में बड़ा सुधार कर दिया है। दूसरी ओर उप राज्यपाल ने तीन फरवरी को मुख्यमंत्री को चिट्ठी लिख कर मीडिया रिपोर्ट के हवाले दिल्ली के अस्पतालों की दयनीय स्थिति के बारे में सवाल पूछे हैं। दिलचस्प बात यह है कि केजरीवाल ने अस्पतालों की दयनीय स्थिति के आरोपों को खारिज नहीं किया है, बल्कि कहा है कि दिल्ली के वित्त व स्वास्थ्य सचिवों के कारण ऐसा है। उनका कहना है कि अगर इन दो सचिवों को हटा दिया जाए तो स्थिति सुधार जाएगी। सोचें, क्या सही है? विश्वस्तरीय स्वास्थ्य सुविधाओं का दावा या सचिवों की वजह से अस्पतालों की दयनीय दशा ?हकीकत यह है कि दिल्ली के अस्पताल बद से बदतर हो गए हैं। केजरीवाल भले जो भी दावा करें लेकिन दिल्ली के लोग भी इलाज के लिए दिल्ली के अस्पतालों को प्राथमिकता नहीं देते हैं। वे केंद्र सरकार के अस्पतालों जैसे एम्स, सफदरजंग, राम मनोहर लोहिया, लेडी हार्डिंग जैसे अस्पतालों में जाना चाहते हैं। दिल्ली के अस्पताल उनकी मजबूरी हैं।

अजीत द्विवेदी-
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं

दिल्ली में सरकार की अनोखी व्यवस्था है। राजधानी दिल्ली में दो सरकारें हैं। एक दिल्ली के लोगों की चुनी हुई सरकार, जो विधानसभा के प्रति जिम्मेदार है और जिसके मुखिया अरविंद केजरीवाल हैं तो दूसरी केंद्र की सरकार, जो संसद के प्रति जिम्मेदार है और दिल्ली में जिसके मुखिया उप राज्यपाल विनय कुमार सक्सेना हैं। केंद्र ने एक कानून बनाया है, जिसका नाम जीएनसीटीडी एक्ट यानी गवर्नमेंट ऑफ नेशनल टेरेटरी दिल्ली एक्ट है और इसके मुताबिक उप राज्यपाल ही असली सरकार हैं। केंद्र में सत्तारूढ़ पार्टी राज्य में विपक्ष में है और राज्य में सत्तारूढ़ दल केंद्र में विपक्ष में है। इससे दिल्ली की प्रशासनिक व्यवस्था और भी अनोखी हो गई है। जो सरकार में है वह विपक्ष में भी है और जो विपक्ष में है वह सरकार में भी है। इसलिए दोनों अपने को दिल्ली का मालिक मानते हैं और दिल्ली की सत्ता के लिए लड़ते रहते हैं। दोनों के बारे में एक और अनोखी बात यह है कि दोनों प्रचार की राजनीति और लड़ाई में माहिर हैं। इसका नतीजा यह है कि दिल्ली में सब कुछ ठप्प पड़ा हुआ है। दोनों पार्टियों के झगड़े से दिल्ली और समूचे एनसीआर के लोगों को किस तरह की मुश्किलें हैं, इसका एक नमूना दो फरवरी को देखने को मिला, जिस दिन दोनों पार्टियों ने अलग अलग मुद्दों पर प्रदर्शन किया था। आम आदमी पार्टी ने आरोप लगाया है कि भाजपा ने चंडीगढ़ के मेयर के चुनाव में जनादेश चुरा लिया। उसने 20 वोट होने के बावजूद आप और कांग्रेस के आठ वोट अवैध कर दिए और अपने 16 वोट के आधार पर मेयर का चुनाव जीत गई। इसे लेकर आप ने दिल्ली में प्रदर्शन किया तो दूसरी ओर भाजपा ने मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाते हुए प्रदर्शन किया और कहा कि वे गिरफ्तारी के डर से शराब घोटाले में पूछताछ के लिए ईडी के सामने पेश नहीं हो रहे हैं। इस प्रदर्शन में शामिल होने के लिए पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान भी पहुंचे थे और आप ने पंजाब, हरियाणा हर जगह से लोग बुलाए थे। दूसरी ओर भाजपा ने भी दिल्ली के साथ साथ पूरे एनसीआर से लोगों को जुटाया। नतीजा यह हुआ है कि दिल्ली की कई सीमाओं पर बैरिकेडिंग हुई और दिल्ली के अंदर कई सड़कें बंद रहीं। कामकाजी दिन में पूरे दिन सड़कों पर भीषण जाम लगा रहा और लोग संघर्ष करते रहे। दोनों की लड़ाई का यह एक छोटा नमूना है। अभी एक नया मामला दिल्ली के अस्पतालों का सामने आया है। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल का दावा है कि उनकी सरकार कुल बजट का 14 फीसदी के करीब हिस्सा स्वास्थ्य पर खर्च करती है, जबकि भारत सरकार का खर्च दो फीसदी के करीब है। दिल्ली सरकार का दावा है कि उसने दिल्ली की स्वास्थ्य सेवाओं में बड़ा सुधार कर दिया है। दूसरी ओर उप राज्यपाल ने तीन फरवरी को मुख्यमंत्री को चिट्ठी लिख कर मीडिया रिपोर्ट के हवाले दिल्ली के अस्पतालों की दयनीय स्थिति के बारे में सवाल पूछे हैं। दिलचस्प बात यह है कि केजरीवाल ने अस्पतालों की दयनीय स्थिति के आरोपों को खारिज नहीं किया है, बल्कि कहा है कि दिल्ली के वित्त व स्वास्थ्य सचिवों के कारण ऐसा है। उनका कहना है कि अगर इन दो सचिवों को हटा दिया जाए तो स्थिति सुधार जाएगी। सोचें, क्या सही है? विश्वस्तरीय स्वास्थ्य सुविधाओं का दावा या सचिवों की वजह से अस्पतालों की दयनीय दशा?हकीकत यह है कि दिल्ली के अस्पताल बद से बदतर हो गए हैं। केजरीवाल भले जो भी दावा करें लेकिन दिल्ली के लोग भी इलाज के लिए दिल्ली के अस्पतालों को प्राथमिकता नहीं देते हैं। वे केंद्र सरकार के अस्पतालों जैसे एम्स, सफदरजंग, राम मनोहर लोहिया, लेडी हार्डिंग जैसे अस्पतालों में जाना चाहते हैं। दिल्ली के अस्पताल उनकी मजबूरी हैं। विश्वस्तरीय अस्पताल बनाने के दावे की हकीकत यह है कि ज्यादातर अस्पतालों में मरीजों के जांच की सुविधा नहीं है और आए दिन खबर आ रही है कि मरीज भटकते रहे और अस्पताल ने भर्ती नहीं किया, जिससे मरीज की जान चली गई। दो जनवरी को दिल्ली पुलिस एक घायल को लेकर भटकती रही थी। दिल्ली के तीन अस्पतालों- जग प्रवेश चंद, जीटीबी और एलएनजेपी में इलाज की बुनियादी सुविधाएं नहीं मिलीं और आठ घंटे भटकने के बाद घायल को राम मनोहर लोहिया ले जाया गया, जहां उसने दम तोड़ दिया। यह एक प्रतिनिधि घटना है। ऐसी घटनाएं आए दिन हो रही हैं। ऊपर से आरोप है कि दिल्ली सरकार की मुफ्त जांच योजना के तहत भारी घोटाला हुआ है। मोहल्ला क्लीनिक से लेकर दिल्ली सरकार के अस्पतालों में डॉक्टरों की हाजिरी अपने आप बनती रही, फर्जी मरीजों का इलाज चलता रहा और उनकी फर्जी जांच निजी लैब्स में होती रही। सैकड़ों करोड़ रुपए के इस घोटाले की जांच के आदेश दिए गए हैं। दिल्ली सरकार ने सड़क दुर्घटना में घायलों को अस्पताल पहुंचाने की फरिश्ते योजना शुरू की थी वह बंद है क्योंकि सरकार का दावा है कि उप राज्यपाल ने राशि की मंजूरी रोक रखी है। चाहे दिल्ली सरकार की अकर्मण्यता की वजह से स्वास्थ्य सेवाएं बिगड़ी हों या सचिवों के कारण और उप राज्यपाल के फंड रोकने के कारण बिगड़ी हों लेकिन हकीकत यह है कि दिल्ली के लोगों को विश्वस्तरीय तो छोड़िए सामान्य स्वास्थ्य सुविधाएं भी नहीं मिल रही हैं। स्वास्थ्य के अलावा दिल्ली सरकार का दूसरा दावा विश्वस्तरीय शिक्षा व्यवस्था का है। इसकी अलग कहानी है। दिल्ली विश्वविद्यालय के 12 कॉलेज ऐसे हैं, जिनको फंड दिल्ली सरकार देती है। शिक्षा के लिए कथित तौर पर प्रतिबद्ध दिल्ली सरकार ने इन कॉलेजों का फंड रोक दिया है। दिल्ली सरकार चाहती है कि उसे इन कॉलेजों के प्रशासन का पूरा अधिकार मिले या इन कॉलेजों को दिल्ली विश्वविद्यालय से निकाल कर राज्य सरकार के विश्वविद्यालय के अधीन कर दिया जाए तो राज्य सरकार फंड देगी।

हरदा हादसा: अब जो होगा, वह भी लोगों को पता है

वहां के कलेक्टर के आदेश का तत्कालीन (अब इंदौर) संभागायुक्त माल सिंह भायडिया द्वारा भी शत-प्रतिशत पालन के निर्देश दिए गए होते तो फैक्ट्री बंद रहती, ऐसा नहीं हुआ तो दोषी प्रशासनिक अधिकारी भी हैं, क्योंकि राजनीतिक संरक्षण बिना इतनी ढील देना संभव ही नहीं !मप्र में पटाखों, बारुद से विस्फोट की यह पहली घटना नहीं है। मुरैना, राऊ में पटाखा फैक्ट्री में विस्फोट में हुई मौतें, पेटलावद में 7 दर्जन से अधिक निदोर्षों के चीथड़ों की पोटलियों वाले लोमहर्षक दृश्य और जांच समिति की घोषणा लोग भूले नहीं हैं। इससे पहले बालाघाट में 29 और दमोह 7 लोगों की मौत भी ऐसे ही विस्फोट में हो चुकी है। इन सारे विस्फोट के बाद अब यदि लोगों को यह लगने लगे कि 18 वर्ष के बाद बस सीएम बदले हैं... लापरवाही का ढर्रा वैसा ही चल रहा है तो ताज्जुब नहीं होना चाहिए! अब जो होगा, वह भी लोगों को पता है... गुना बस हादसे के बाद जिस तरह बसों की चैकिंग का अभियान चला था, वैसे ही इंदौर, भोपाल, दमोह, बालाघाट, हरदा आदि शहरों में पटाखा निमार्ताओं, दुकानदारों के खिलाफ सख्ती पखवाड़ाइ चलाकर लापरवाही की आग पर फोम डाल दिया जाएगा।

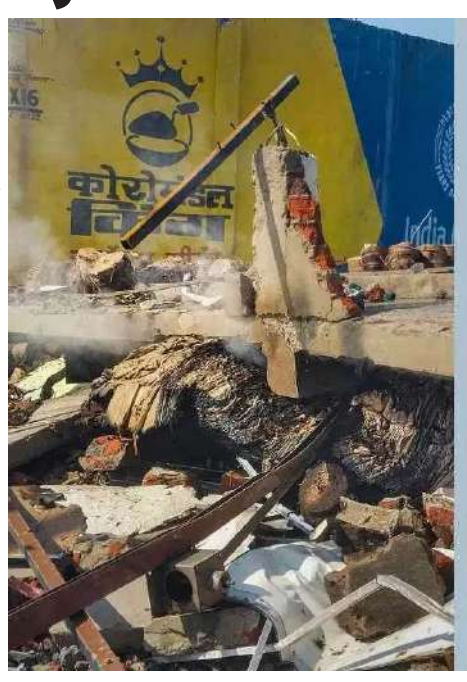

कीर्ति राणा-
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं

मध्यप्रदेश के हरदा में अवैध तरीके से चल रही पटाखा फैक्ट्री में लगी आग से हुई तबाही में यह प्रश्न गौण हो गया है कि कितने लोग असमय मौत का शिकार हुए? हरदा ही नहीं, देश के लोगों को यह पूछने का हक है कि सालों से यह फैक्ट्री वो भी बीच रहवासी क्षेत्र में चल कैसे रही थी? जांच समिति बना ही दी है, जब किसी मामले में सरकार ऐसी समिति गठन में तत्परता दिखाए तो आमजन याद करने लगता है कि जनहानि वाले मामलों को लेकर पहले जो जांच समितियां गठित की गईं, उनकी फाइलों ने फैसले उगले भी या नहीं! गुना बस हादसे में कलेक्टर, एसपी पर गाज गिरी थी। आज मुख्यमंत्री हरदा जा ही रहे हैं... ऐसा ही कुछ निर्णय लेकर अपनी सरकार पर लगे दाग धोने की तत्परता दिखा सकते हैं !हरदा की आग में जिन निदोर्षों की बलि चढ़ गई, उनके परिवारों को न तो फैक्ट्री मालिक राजेश अग्रवाल और दिनेश की गिरफ्तारी से संतोष मिलेगा और न ही मुआवजे की राशि उनके आंसू पोंछ पाएगी। इसी फैक्ट्री में पहले भी हुए विस्फोट में दो लोगों की जान जा चुकी है। वहां के कलेक्टर के आदेश का तत्कालीन (अब इंदौर) संभागायुक्त माल सिंह भायडिया द्वारा भी शत-प्रतिशत पालन के निर्देश दिए गए होते तो फैक्ट्री बंद रहती, ऐसा नहीं हुआ तो दोषी प्रशासनिक अधिकारी भी हैं, क्योंकि राजनीतिक संरक्षण बिना इतनी ढील देना संभव ही नहीं !मप्र में पटाखों, बारुद से विस्फोट की यह पहली घटना नहीं है। मुरैना, राऊ में पटाखा फैक्ट्री में विस्फोट में हुई मौतें, पेटलावद में 7 दर्जन से अधिक निदोर्षों के चीथड़ों की पोटलियों वाले लोमहर्षक दृश्य और जांच समिति की घोषणा लोग भूले नहीं हैं। इससे पहले बालाघाट में 29 और दमोह 7 लोगों की मौत भी ऐसे ही विस्फोट में हो चुकी है। इन सारे विस्फोट के बाद अब यदि लोगों को यह लगने लगे कि 18 वर्ष के बाद बस सीएम बदले हैं... लापरवाही का ढर्रा वैसा ही चल रहा है तो ताज्जुब नहीं होना चाहिए! अब जो होगा, वह भी लोगों को पता है... गुना बस हादसे के बाद जिस तरह बसों की चैकिंग का अभियान चला था, वैसे ही इंदौर, भोपाल, दमोह, बालाघाट, हरदा आदि शहरों में पटाखा निमार्ताओं, दुकानदारों के खिलाफ सख्ती पखवाड़ाइ चलाकर लापरवाही की आग पर फोम डाल दिया जाएगा। कलेक्टर, एसपी और अन्य प्रशासनिक अधिकारियों पर कार्रवाई तो होनी ही चाहिए, लेकिन दंडित किए जाने से पहले इन अधिकारियों से बंद कमरे में ही सही... सरकार पुचकार के यह भी तो पूछ ले कि हरदा के पूर्व विधायक कमल पटेल हों या बैतूल के सांसद दुगार्दास उईके... इन जनप्रतिनिधियों या इनके पों ने वर्षों से संचालित हो रही अवैध पटाखा फैक्ट्री के सरगनाओं को संरक्षण क्यों दे रखा था?ढाई एकड़ में फैली फैक्ट्री के अलावा आसपास के पचास घरों में कुटीर उद्योग के रूप में हो रहे पटाखों के निर्माण से जिला प्रशासन क्यों मुंह फेरे रहा? पटाखा फैक्ट्री मालिकों के घरों पर बुलडोजर चलाए जाने की सख्ती तो सरकार दिखाएगी ही, लेकिन इन्हें संरक्षण पूर्व मुख्यमंत्री के प्रिय जनप्रतिनिधियों के साथ ही इस सरकार में ठसक दिखाने वाले हरदा-बैतूल के जनप्रतिनिधियों से भी मिलता रहा है। सख्त फैसले लेकर खुद को पिछली सरकार से बेहतर दिखाने की कोशिश में लगे डॉ. मोहन यादव को पटाखा फैक्ट्री के संचालकों को संरक्षण देने वाले नेताओं-अधिकारियों के घरों पर भी बुलडोजर चलाने का साहस दिखाना चाहिए। हरदा पटाखा फैक्ट्री को 2022 में कलेक्टर ऋषि गर्ग ने सील करने के आदेश जारी किए थे। सरकार को तत्कालीन संभागायुक्त मालसिंह भायडिया से भी पूछना चाहिए कि ऐसी क्या मजबूरी रही कि इस आदेश के विरुद्ध स्टे क्यों दिया?विस्फोट पीड़ित लोगों के आंसू बयां कर रहे हैं कि शिकायत करते रहने के बाद भी अधिकारियों ने कार्रवाई नहीं की। ऐसी क्या मजबूरी थी कि ट्रकों से बारुद आता रहा और पुलिस प्रशासन मुस्तैदी दिखाने दिखाने के बजाय मैत्री-भाव दशार्ता रहा और जिला प्रशासन की आंखों पर भी पोलिटिकल प्रेशर की पट्टी बंधी रही। हरदा हादसे का कारण बने प्रशासनिक अधिकारियों पर भी सरकार ऐसी कार्रवाई करे कि बाकी जिलों के अधिकारियों को भी समझ आ जाए कि बदले हुए निजाम में अब ढील-पोल नहीं चलेगी।

उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में विकास की एक नई सुबह

जी. किशन रेड्डी-
(लेखक, भारत सरकार के केन्द्रीय उत्तर-पूर्वी क्षेत्र विकास मंत्री हैं)

उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के राज्यों के अनूठे एवं खूबसूरत पहाड़ों व घाटियों में बदलाव की बयार बह रही है।दस वर्षों के अथक प्रयासों के बाद, यहां शांति और विकास का एक नया युग शुरू हुआ है। जब माननीय प्रधानमंत्री ने इन आठ राज्यों को भारत की अष्टलक्ष्मी, विकास और समृद्धि का अग्रदूत कहा, तो पहली बार इनकी अंतर्निहित क्षमताओं को स्वीकार किया गया।इस क्षेत्र मेंतेज गति से स्थापित होती सड़क, रेल और हवाई कनेक्टिविटी के जरिए इतिहास रचा जा रहा है। जहां तक गुणवत्ता का प्रश्न है, तो ये अवसंरचनाएं शेष भारत में उपलब्ध विश्वस्तरीय बुनियादी ढांचे जैसी ही हैं। यहां का युवा अब बंद, चक्का जाम और हड़ताल से परेशान नहीं हैं, बल्कि अब उनके सपने पहले से कहीं ज्यादा सच हो रहे हैं। व्यापार को आसान बनाया गया है और पर्यटकोंके लिए आकर्षण के नए केन्द्रबनाए गए हैं।यह सब बेहतर कनेक्टिविटी के कारण संभव हुआ है। उत्तर-पूर्वी क्षेत्र, अपने आप में, अभूतपूर्व राजनीतिक इच्छाशक्ति, प्रेरणादायक समर्पण और प्रत्येक भारतीय के लिए बेहद प्रिय एक लक्ष्य के सामूहिक स्वामित्व की गाथा है और वह लक्ष्य है-भारत के ईशान कोण में प्रगति व विकास की एक नई सुबह की शुरूआत! जैसा कि माननीय गृह मंत्री ने हाल ही में संपन्न एनईसी की 71वीं पूर्ण बैठक के दौरान सही ही कहा है कि पिछला दशक उत्तर-पूर्वी भारत के इतिहास का एक स्वर्णिम अध्याय रहा है। इस परिवर्तनकारी दृष्टिकोण ने न केवल इस क्षेत्र में संघर्ष-केंद्रित-प्रशासन के पारंपरिक मॉडल की अवधारणा को तोड़कर शासन के विकास-उन्मुख मॉडल को खड़ा किया है, बल्कि एक मजबूत एवं अपेक्षाकृतअधिक एकजुट भारत को बढ़ावा देते हुए सांस्कृतिक और सामाजिक एकीकरण के बीज बोए हैं। हाल ही में उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में पहली अंतर्राष्ट्रीय रेलवे कनेक्टिविटी, अगरतला-अखौरा रेल लिंक को हरी झंडी दिखाना, इस बात का गौरवपूर्ण उदाहरण है कि कैसे एक समय उपेक्षित रहा भारत का यह सुदूरवर्ती इलाका अबअंतर्राष्ट्रीय व्यापार और पर्यटन मानचित्र पर उभर आया है। जीवंत संस्कृतियों और प्रचुर संसाधनों से लैस भारत का उत्तर-पूर्वी क्षेत्र, एक ऐसा इलाका है जिसने काफी लंबे समय तक राजनीतिक उदासीनता का दंशझेला है। वास्तविक प्रतिबद्धता की कमी को छुपाने के लिए अक्सर हिंसा और अस्थिरता को एक सुविधाजनक ओट के रूप में इस्तेमाल किया जाता था और सिद्धांत एवं व्यवहार के बीच की बड़ी खाई बिल्कुल स्पष्ट दिखाई देती थी। हालांकि, पिछले दशक में प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में किए गए निरंतर प्रयासों से इस क्षेत्र के अधिकांश हिस्सों में शांति और सुरक्षा का वातावरणबना है। सरकार भौगोलिक और सुरक्षा से जुड़ी चुनौतियों का डटकर सामना करते हुए विकास एवं समृद्धि के राजमार्ग तैयार कर रही है। अरुणाचल के किबिथू को देश के अंतिम गांव के बजायभारत के पहले गांव और राष्ट्रव्यापी वाइब्रेंट विलेज कार्यक्रम के लॉन्च पैड के रूप में पुनर्कल्पित करना उत्तर-पूर्वी क्षेत्रएवं इसके सुदूरवर्तीइलाकों के विकास के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता का प्रतीक है। वर्ष 2014 के बाद से 50 से अधिक मंत्रालयों द्वारा क्षेत्रीय विकास में पांच लाख करोड़ रुपये से अधिक के निवेश के साथ, यह क्षेत्र विकास के अवसरों का लाभ उठाने के लिए पूरी तरह तैयार है। वर्ष 2014 से, यहां एक वित्तीय क्रांति जारी है, जिसके तहत 54 केन्द्रीय मंत्रालयों द्वारा व्यय में 233 प्रतिशत की भारी वृद्धि (2014 में 24,819 करोड़ रुपये से बढ़कर 2023 में 82,690 करोड़ रुपये) या डोनर मंत्रालय के लिए बजट आवंटन में 152 प्रतिशत की वृद्धि (2014 में 2,332 करोड़ रुपये से बढ़कर 2023 में 5,892 करोड़ रुपये)की गई है। यह तथ्य एक ऐसे ठोस वित्तीय परिदृश्य की ओर इंगित करता है, जो परिवर्तनकारी एजेंडे को बढ़ावा देता है। हालिया पीएम-डिवाइन योजना, जिसमें विभिन्न राज्यों की जरूरतों के लिए 6,600 करोड़ रुपये की सहायता का वादा किया गया है, इस प्रतिबद्धता का प्रमाण है। पिछले दशक में उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में हासिल की गई प्रगति ने इस क्षेत्र को भारत के एक सुदूरवर्तीइलाके से बदलकर विकास के नए इंजन के रूप में स्थापित कर दिया है। कनेक्टिविटी के क्षेत्र में आई क्रांति ने ऐसे रास्ते खोले हैं जिनपर पहले कभी ध्यान भी नहीं दियागया था। आज हम इस क्षेत्र के पर्यटन, अर्थव्यवस्था, कृषि-आधारित उद्योग, सेवा क्षेत्र की संभावनाओंएवं युवा श्रमशक्ति, प्राकृतिक व जैविक खेती, नवीकरणीय ऊर्जा और दशकों तक अछूते रहे कई अन्य क्षेत्रों का दोहन करके इस क्षेत्र के आर्थिक विकास के विभिन्न मोर्चों पर एक साथ काम कर रहे हैं। हमने इस क्षेत्र में एक बड़ी उपलब्धि हासिल की है तथा अभी कई और उपलब्धियां हासिल करनी हैं। श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में हमने आधी लड़ाई जीत ली है। निम्नलिखित पंक्तियां भारत के पूर्वोत्तर में एक नई सुबह के प्रति हमारी दृष्टिकोण और दृढ़ संकल्प को दशार्ती हैं: एक नई सुबह को गले लगाते हुए, एक यात्रा को इतना उज्ज्वल बनाते हुए, उत्तर-पूर्व की यात्रा, एक चमकता हुआ प्रकाशस्तंभ ऊंची उड़ान भरने को उत्साहित, महत्वाकांक्षाओंसे प्रेरित, उत्तर-पूर्वविकास की एक ऐसी गाथा है, जो सुनाईजानी है।

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें
@Pratahkiran
www.pratahkiran.com

राष्ट्रीय दैनिक
प्रातःकिरण
पटना, शुक्रवार, 09 फरवरी, 2024

संक्षिप्त खबरें

मंदिर के विकास को लेकर हुई बैठक

दिघवारा नगर। मां अंबिका महारानी न्यास परिषद के अध्यक्ष प्रमंडलीय आयुक्त के निर्देश पर मंदिर गेस्ट हाउस में गुरुवार को मंदिर के विकास को लेकर समीक्षा बैठक हुई।जिसकी अध्यक्षता सोनपुर एसडीओ निशांत विवेक ने किया। बैठक में शामिल सचिव आशा देवी व न्याय परिषद के सदस्यों व मंदिर के पुजारियों ने अपनी बाते रखी। बैठक में शेड से मंदिर तक प्रकाश व्यवस्था को लेकर बल्ब लगाने, मंदिर के पुराने बिजली तारों को ठीक कराने,टंकी विहिन शौचालय का टंकी का निर्माण के लिए,बुडको से बात करने,मंदिर के फुलवारी का बाउंड्री,मनरेगा से दो सौ टेलर मिट्टी भराई का कार्य कराने,अतिक्रमण को चिन्हित कर नोटिस देकर कार्रवाई करने सहित अन्य समस्याओं पर चर्चा की गई।

अपराधियों ने मछली व्यवसायी को चाकू घोंप कर किया जख्मी

मांझी। बीती रात्रि मांझी थाना क्षेत्र के फतेहपुर गांव के समीप अपराध कर्मियों ने मछली व्यवसायी को चाकू घोंप कर गम्भीर रूप से जख्मी कर दिया तथा उसकी जेब में मौजूद लगभग पैतालिस हजार रुपये लूट लिए। जख्मी मछली व्यवसायी फतेहपुर गाँव निवासी गोकुल साह का पुत्र हरेंद्र साह बताया जाता है। घटना के बाद घायल मछली व्यवसायी ने चार लोगो को नामजद करते हुए स्थानीय थाने में प्राथमिकी दर्ज कराई है। पुलिस मामले की छानबीन में जुटी हुई है।

रक्सौल से तेंदुआ का छाल बरामद, 2 हिरासत में

रक्सौल। भारत-नेपाल सीमा के रक्सौल में प्रतिबंधित दुर्लभ जंगली जीव तेंदुआ का खाल बरामद हुआ है, जिससे सनसनी फैल गई है। उक्त बरामदगी गुप्त सूचना के आधार पर हुई, जिसके साथ 2 आरोपियों की गिरफ्तारी भी हुई है। मिली जानकारी के मुताबिक जब गुप्त सूचना मिली तो एसपी कांतेश मिश्रा के निर्देश पर डीएसपी धीरेंद्र कुमार के नेतृत्व में एक टीम बनाकर वन विभाग के क्षेत्र पदाधिकारी नारायण लाल सेवक के साथ छापेमारी की गई, जहां सिसवा से तेंदुआ के छाल के साथ नेपाल के रौतहट जिला के मौलापुर निवासी 25 वर्षीय मुकेश कुमार यादव एवं एक नाबालिग स्थानीय युवक को हिरासत में लिया गया। जानकारी के मुताबिक छाल पर गोली के भी निशान थे, जिससे अंदाजा लगाया जा रहा है कि पहले गोली मारकर उसकी हत्या की गई हो और उसके छाल निकाले गए हों। अंतर्राष्ट्रीय बाजार में इसकी कीमत 25 लाख से ऊपर का अनुमान है। मौके पर इंस्पेक्टर राजीव नंदन सिन्हा सहित अन्य मौजूद थे।

अब तक नहीं बन पाया मृत्यु प्रमाण-पत्र

रिविलगंज। रिविलगंज नगर पंचायत के नया बस्ती लोहाटोला, सेमरिया के ललन यादव 57 वर्ष की मृत्यु सरयू नदी में डूबने से 9/8/2017 को हो गई थी लेकिन गोताखोरों द्वारा काफी खोजबीन के बाद भी शव नहीं मिल पाया था। मृतक के पुत्र राज किशोर राय साढ़े छव वर्ष से अपने पिता के मृतक प्रमाण पत्र बनवाने के लिए दर-दर भटकने पर मजबूर हैं। जबकि ललन यादव की सरयू नदी में डूबने से मौत की सूचना स्थानीय थाना में भी दर्ज हैं।नगर पंचायत प्रशासन के पास मृतक के पुत्र द्वारा मृत्यु प्रमाणपत्र बनवाने के लिए आवेदन दिया गया है लेकिन आज तक मृत्यु प्रमाणपत्र नहीं बन पाया है।

सही तरीके से नहीं हो रहा मेन्टेन्स

रिविलगंज। सरकार सभी घर नल से जल पहुंचाने पर कार्य कर रही हैं लेकिन मेंटेनेंस का कार्य सुचारू रूप से नहीं चल रहा। टेकनिवास गांव व बाजार पर देवरिया पानी टंकी से आने वाला पानी लगभग एक महिना से बंद हैं।प्राप्त जानकारी के अनुसार जेसीबी के द्वारा नाला सफाई करते समय पाईप टूट गया था जिसे अब तक मरम्मत नहीं किया गया जिससे ग्रामीणों को असुविधा हो रही हैं। पंचायत में सभी जगह पानी जा रहा है टंकी से सिर्फ टेकनिवास गांव और बाजार की पानी का सप्लाई एक महीने से बंद किया गया है। पानी सप्लाई नहीं आने से टेकनिवास गांव एवं बाजार के लोगों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। ग्रामीणों एवं दुकानदारों शिकायत करने पर भी एक महीने से टूटी पाइप की मरम्मत नहीं किया गया और दर्जनों घरों और टेकनिवास बाजार में पानी सप्लाई बंद हैं।

आयोजित हुआ विदाई समारोह

लहलादपुरः प्रखंड सह अंचल कार्यालय के सभागार में एक विदाई समारोह का आयोजन किया गया. सभा की अध्यक्षता बीडीओ नीलेश कुमार ने किया. मौका था राजस्व पदाधिकारी ऋषभ सिंह यादव के विदाई का. समारोह में लोगों ने राजस्व पदाधिकारी यादव के आचार-विचार, व्यवहार एवं कार्यशैली की भूरी - भूरी प्रशंसा किया तथा उनके उज्जवल भविष्य के लिये कामना किया।

हथुआ मार्केट की वर्षो से लंबित मांग को विधायक ने किया पूर्ण

व्यापारियों और आमजनों के लिए बनेंगे शौचालय,यूरिनल और स्नानागार

● बोले विधायक दिखावा नहीं क्रमबद्ध और सटीक रूप से काम करने में विश्वास

प्रात: किरण, संवाददाता

छपरा। छपरा शहर के हथुआ मार्केट में व्यवसाईयों आममजनों द्वारा वर्षो से मांग किये जा रहे शौचालय और यूरिनल की मांग को छपरा विधायक डॉ सी एन गुप्ता ने पूरा कर दिया है. विधायक ने बताया कि इसमें काफी अर्चन थी,कागजी प्रक्रिया बहुत थी जिसको क्रमबद्ध तरीके से दूर किया गया है और मैंने इसकी अनुशंसा भी कर दी है शीघ्र ही नगर निगम से एनओसी प्राप्त होते ही इस पर काम लगा दिया जाएगा। विधायक ने बताया कि इस संबंध में विगत दिनों नगर आयुक्त श्री सुमित कुमार से उनके कार्यालय प्रकोष्ठ में एक बैठक की गई थी और उन्हें आमजनों और व्यवसायियों के हित में ध्यान में रखते हुए शीघ्र ही विभाग से एनओसी देने के लिए कहा गया है ताकि इस पर आगे की कार्रवाई हो और लोगों को इससे लाभ मिलना शुरू हो.इसपर नगर आयुक्त ने सकारात्मक पहल करते हुए शीघ्र ही एनओसी देने की बात कही। विधायक डॉ सी एन गुप्ता ने कहा की मैं किसी भी कार्य को जमीनी स्तर से करने पर विश्वास रखता हूं ना की हवा हवाई. यह एक बहुत ही जटिल मुद्दा था जो आज पूरी तरह से सफल हो गया, लोगों में इसके लिए नाराजगी भी थी लेकिन कुछ दिनों का कष्ट उन्हें और है आने वाले दिन में शौचालय स्नानागार और यूरिनल बन जाने से हथुआ मार्केट को बहुत ही फायदा होगा।

दिघवारा प्रखण्ड प्रमुख मनु देवी की कुर्सी रही बरकरार,अविश्वास प्रस्ताव हुआ खरिज

प्रात : किरण संवाददाता

दिघवारा नगर। दिघवारा प्रखण्ड प्रमुख मनु देवी के खिलाफ लाया गया अविश्वास प्रस्ताव खारिज हो गया।सोनपुर एसडीओ सह पर्यवेक्षक निशांत विवेक अविश्वास प्रस्ताव खारिज होने की पुष्टि की।प्रखण्ड प्रमुख के विरुद्ध लाये गए अविश्वास प्रस्ताव पर गुरुवार के दिन प्रखण्ड मुख्यालय के सभागार में कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच विशेष बैठक उप प्रमुख शोभा कुमारी की अध्यक्षता में आयोजित की गई।विशेष बैठक में अविश्वास पर बहस व मत विभाजन के बाद प्रखण्ड प्रमुख अपनी कुर्सी बचाने में सफल रही।चौदह पंचायत समिति के सदस्यों में आठ मत प्रखण्ड प्रमुख मनु देवी के पक्ष में पड़ा वही विपक्ष में छः मत पड़े।इस प्रकार प्रखण्ड प्रमुख मनु देवी अपनी कुर्सी पर यथावत बनी रहेंगी।बता दे कि बीते दस जनवरी को छः विक्षुब्ध बीडीसी सदस्यों के द्वारा प्रमुख के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाया गया था जिसको लेकर तेईस जनवरी को विशेष बैठक बुलाई गयी थी लेकिन बैठक

आरम्भ होने के पूर्व ही हाईकोर्ट के आदेश पर बैठक स्थगित कर दी गई थी।कोर्ट ने डीएम को पूरे मामले को संज्ञान में लेने का निर्देश दिया था। जिसके बाद डीएम ने सभी बीडीसी सदस्यों को 27 जनवरी को अपने कार्यालय में उपस्थित करा हस्ताक्षर व पहचान के साथ पूछताछ के बाद संतुष्ट होने पर सभी के सहमति से आठ फरवरी को बहस व मत विभाजन की तिथि निर्धारित की थी।जिसको लेकर एसडीओ सोनपुर निशांत विवेक एवं कार्यपालक पदाधिकारी सह बीडीओ डॉ अजित कुमार ने सारी प्रक्रिया पूर्ण कराई।जिसमे प्रखण्ड प्रमुख मनु देवी ने आठ मत प्राप्त कर अपनी कुर्सी बचाने में सफल रही।सुरक्षा व्यवस्था को लेकर थानाध्यक्ष रविशंकर कुमार,एसआई अमृता कुमारी व जवान मुस्तैद थे। प्रखण्ड प्रमुख की कुर्सी बरकरार रहने पर समर्थकों में खुशी की लहर देखी गई वही मौके पर पूर्व मुखिया राकेश सिंह,चंदन सिंह,उमाशंकर सिंह,मुखिया गुडडेश्वर सिंह,दिलीप कुमार सिंह,कौशल सिंह,पूर्व मुखिया संजय सिंह,पूर्व मुखिया सुधीर सिंह,सदर मंडल अध्यक्ष विपिन सिंह,गब्बर सिंह,अखिलेश राय, अश्वनी पांडेय,राज भुवन महतो,राकेश सिंह,राजकुमार राम,जीवन राम,न्यास परिषद के सचिव रितेश तिवारी,वरुण सिंह,बिट्टू सिंह ने प्रमुख को जीत की बधाई दी।

मांझी थाना परिसर में शांति समिति की बैठक आयोजित

प्रात : किरण संवाददाता

मांझी। बसंत पंचमी के अवसर पर सरस्वती पूजा का पर्व शांतिपूर्ण माहौल में संपन्न कराने के उद्देश्य से गुरुवार को मांझी थाना परिसर में शांति समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक में पुलिस कर्मियों के अलावा पंचायत प्रतिनिधि एवं अनेक गणमान्य लोग शामिल हुए। बैठक में डीजे बजाने पर पूरी तरह पाबन्दी लगाने की बात कही गई। थानाध्यक्ष अमित कुमार राम ने बताया कि पूजन समारोह के लिए पूजा समितियों को थाना से लाइसेंस लेना अनिवार्य होगा। बैठक में शामिल लोगों ने सरस्वती पूजा शांति एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण में मनाने का संकल्प ब्यक्त किया। पूजा में असामाजिक तत्वों एवम सौहार्द्ध बिगड़ने वालों पर पुलिस की पैनी नजर रहेगी तथा सामाजिक सौहार्द बिगाड़ने वालों को बक्सा नहीं जाएगा। बिना ताम झाम के सादे समारोह में मूर्ति विसर्जन की बात कही गई। बैठक में एसआई नसीम खान तथा संजय कुमार सुमन के अलावा प्रखण्ड कांग्रेस अध्यक्ष उमाशंकर ओझा,जदयू के प्रखण्ड अध्यक्ष अख्तर अली, मुखिया प्रतिनिधि क्रमशः उदय शंकर सिंह तथा शैलेश्वर मिश्रा, मुख्य पार्षद प्रतिनिधि विनय यादव, उप मुख्य पार्षद प्रतिनिधि कृष्णा सिंह पहलवान, सरपँच शिव पुकार साह तथा धनेश साह, बीडीसी प्रतिनिधि सुनील कुमार पाण्डेय,मंजूर आलम खान,मो नबी हसन, हसनुद्दीन खान तथा भोलू खान आदि दर्जनों गणमान्य लोग मौजूद थे। बैठक की अध्यक्षता थानाध्यक्ष अमित कुमार राम ने की।

यंग इंडिया तय करेगा 2024 के चुनाव का एजेंडा

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा सदर : छात्र संगठन आइसा के राष्ट्रीय अभियान के तहत पूरे देश भर के विश्वविद्यालय में चले पूरे जनवरी माह में हस्ताक्षर अभियान के बाद अब देश के सभी विश्वविद्यालय के मुख्यालयों पर छात्र संगठन आइसा यंग इंडिया रेफरेंडम 2024 के तहत वोटिंग कराएगा । जिसका समय सुबह 10:00 बजे से दोपहर 2:00 तक रहेगा। आइसा नेताओं का सभी से अपील है कि वह यूनिवर्सिटी जाकर अधिक से अधिक संख्या में वोट करें। वोटिंग चार अलग-अलग सवालों के साथ होगा, यूनिवर्सिटी में 10:00 से 2:00 बजे तक वोटिंग होने के बाद यूनिवर्सिटी में ही 3:00 बजे से वोटो की काउंटिंग कर रिजल्ट घोषित करना है। दरअसल बात यह है कि पिछले 10 सालों से देश में लगातार सामाजिक न्याय, लोकतंत्र, शिक्षा, नौकरी, पर सरकार के हमले धीरे-धीरे तेज होते जा रहे हैं। लेकिन देश के नौजवान 2024 के लोकसभा के चुनाव में जुमलेबाज व धर्म आधारित राजनीति करने वाली सरकार को हटाकर नौजवानों व देश के जनता के हित में काम करने वाले नेताओं का चयन करेगी और उसी के लिए यंग इंडिया रिफ्रेंडम के तहत 7-8 और 9 फरवरी को वोटिंग करा कर देश के नौजवानों के बीच से एजेंडा निर्धारित होगा।

जूलॉजी डिपार्टमेंट में होगा सिंधु गंगा के मैदानों में पर्यावरण और सतत विकास पर राष्ट्रीय सम्मेलन

● गंगा के मैदानी इलाकों में पर्यावरण और सतत विकास के क्षेत्र में काम करने वाले शिक्षाविदों, विशेषज्ञों और विद्वानों की महत्वपूर्ण भूमिका होगी

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा सदर : 9 एवं 10 फरवरी को जयप्रकाश विश्वविद्यालय के जूलॉजी विभाग में भारत गंगा के मैदानो में पर्यावरण और सतत विकास पर एक राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन होगा। इस बात की जानकारी देते हुए जेपीयू के जूलॉजी विभाग के अध्यक्ष डॉ. राणा विक्रम सिंह ने बताया कि 9 और 10 फरवरी को भारत गंगा के मैदानों में पर्यावरण और सतत विकास पर एक राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा। जिसका मुख्य उद्देश्य अन्वेषण और चर्चा करना है । गंगा के मैदानी इलाकों में पर्यावरण और सतत विकास के क्षेत्र में काम करने वाले शिक्षाविदों, विशेषज्ञों और विद्वानों की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। यह कार्यक्रम सुबह 10:00 बजे से शाम 5:00 बजे तक चलेगा। जिसका मुख्य विषय सिंधु गंगा के मैदानो में पर्यावरण और सतत विकास है। आयोजित होने वाले सेमिनार पर विस्तृत चर्चा करते हुए जूलॉजी विभाग के विभाग अध्यक्ष डॉ.राणा विक्रम सिंह ने बताया कि 9 फरवरी को 10:00 बजे उद्घाटन सत्र होगा। जिसमें अतिथियों का स्वागत जंतु विज्ञान विभाग के डॉ.प्रशांत कुमार करेंगे। तदोपरांत मंगल गीत,कुल गीत और स्वागत गीत महाविद्यालय के छात्राओं के द्वारा किया जाएगा। सेमिनार के विषय प्रवेश का कार्य आयोजन के सचिव प्रोफेसर राणा विक्रम सिंह करेंगे। अतिथियों और कुलपति के द्वारा दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन होगा तथा अतिथियों का सम्मान पटना मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल के अर्थो विभाग के प्रोफेसर डॉ. अरविंद कुमार के द्वारा किया जाएगा। अतिथियों में ए .एन .कॉलेज, पटना के पूर्व प्राचार्य डॉ. रास बिहारी सिंह होंगे। इस सेमिनार में भाग लेने वाले अतिथियों में महावीर कैंसर आरोग्य संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉक्टर अरुण कुमार का मुख्य संबोधन होगा। तकनीकी द्वितीय सत्र में नागालैंड विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. रंजीत कुमार, कमला राय कॉलेज ,गोपालगंज की डॉ. अंजली श्रीवास्तव, बीआरए बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर की सहायक प्रोफेसर डॉ.पूनम कुमारी पहले दिन के लिए वक्ता होगी। वही 2 फरवरी को तकनीकी सत्र प्रथम सुबह 10:00 बजे से 1:00 बजे तक चलेगा। जिसमें नदी संसाधन और उसका संरक्षण और आद्रभूमि संसाधन और उसे पर संरक्षण पर वार्ता होगी। इसमें मुख्य रूप से यूएसए के कैंसर जीव विज्ञानी डॉक्टर अनुराधा, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं उपनिदेशक एडएस आई पटना के डॉक्टर गोपाल शर्मा होंगे। वहीं द्वितीय सत्र में प्रदूषण और फाइटो रेमेडिशन पर वैज्ञानिक प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के डॉक्टर नवीन कुमार सिंह का मुख्य भाषण प्रस्तुत होगा। मुख्य अतिथि पूर्व वीसी पी यू एवं एन ओ यू के प्रोफेसर रास बिहारी प्रसाद सिंह होंगे। सत्र का समापन 2 फरवरी को 4:00 बजे संध्या हो जाएगा। इस दौरान पुरस्कार और प्रमाण पत्रों का वितरण भी किया जाएगा। बताते चले कि इस कार्यक्रम के मुख्य संरक्षक जेपी यू के कुलपति प्रोफेसर परमेन्द्र कुमार बाजपेई होंगे जिनका प्रथम दिन अध्यक्षीय उद्बोधन होगा वहीं शोधार्थी अर्पिता सिंह ने जानकारी दी कि अभी तक करीब 240 छात्रों एवं शोधार्थियों का रजिस्ट्रेशन इस कार्यक्रम के लिए हो गया है।

सरस्वती पूजा को लेकर प्रशासन ने की बैठक

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा/रिविलगंज :- पर्व सरस्वती पूजा को लेकर जिले के रिविलगंज थाना परिसर में गुरुवार की दोपहर शांति समिति की बैठक आयोजित की गई, शांति समिति की बैठक को विधिवत रूप से सदर सर्किल पुलिस निरीक्षक किरण शंकर ने उपस्थित लाइसेंसधारी, जनप्रतिनिधियों एवं गणमान्य लोगों को संबोधित करते हुए जिला प्रशासन द्वारा जारी दिशा निर्देश के बारे में बिल्कुल बारिकी से जानकारी देते हुए सहयोग की अपील की वहीं थानाध्यक्ष सुभाष कुमार पासवान ने उपस्थित सभी लाइसेंस धारियों को जल्द से जल्द लाइसेंस के लिए आवेदन करने हेतु निर्देशित किया और उन्होंने कहा कि पूर्व की तरह ही इस बार भी सरस्वती पूजा शांति एवं सौहार्द पूर्ण वातावरण में क्षेत्र में मनाएं। इसके लिए सभी पूजा समिति को लाइसेंस लेना अनिवार्य है। पूजा स्थल एवं विसर्जन के दौरान डीजे पर प्रतिबंध है। मालूम हो कि आगामी 14 फरवरी को सरस्वती पूजा होना है। इस शांति समिति की बैठक में मुख्य रूप से प्रखंड विकास पदाधिकारी लालबाबू पासवान, मुख्य पार्षद प्रतिनिधि मुकेश यादव उर्फ सोनू, पार्षद किशोर सिंह पप्पू, अरुण यादव, आसिफ खान, विकास सिंह, मिंटू राइन, रामबाबू राय, सरपंच बच्चा खान, चाँदकिशोरी एवं अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

नगर आयुक्त ने चल रहे हैं सफाई कार्यो का किया निरीक्षण, दिए कई दिशा- निर्देश

सफाई एजेंसी द्वारा डोर टू डोर किए जा रहे सफाई कार्य का किया औचक निरीक्षण

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा। नगर निगम के आयुक्त ने सफाई एजेंसी द्वारा डोर टू डोर किए जा रहे सफाई कार्य का औचक निरीक्षण किया निरीक्षण के क्रम में पाया गया किवार्ड नंबर 17 डोर टू डोर कचरा का संग्रहण नहीं किया जा रहा है, जिसके लिए वहां के स्थानीय लोग नगर आयुक्त से शिकायत किया। इस संदर्भ में नगर आयुक्त ने सख्त आदेश दिए हैं सत प्रतिशत डोर टू डोर कचरा का संग्रहण करना सुनिश्चित करें। इसके अलावा नगर आयुक्त ने वार्ड नंबर 17 में नाला उराही का कार्य एवं सफाई कार्य का निरीक्षण किया गया। वहीं 18 नंबर वार्ड में भी सफाई कार्य का निरीक्षण किया गया। इस दौरान वहां के सफाई निरीक्षक को आदेश दिया गया कि कार्य का अनुश्रवण सही तरीके से

करें, वार्ड से कोई भी शिकायत नहीं आनी चाहिए। इस दौरान नगर आयुक्त ने निचला रोड सफाई कार्य का भी निरीक्षण किया। जिसमें पाया गया कि नाला को भर दिया गया था, जिसको तत्काल नाला को उराही करने का आदेश नगर प्रबंधक को दिया गया। नगर आयुक्त ने वार्ड नंबर 39 के लाला टोली नाला के बारे में अद्यतन जानकारी ली। लाला टोली में नल का निर्माण कर दिया गया है, और जल-जमाव की समस्या को भी समाप्त कर दिया गया है। इस दौरान वार्ड 39 में नल- जल का पाईप टूटा पाया गया। इस संबंध में कुंदन कुमार सहायक अभियंता को आदेश दिया गया इसका जल्द से जल्द निपटारा करें। नगर आयुक्त के निरीक्षण के दौरान मुख्य मार्ग पर डस्टबिन भरा हुआ पाया गया, जज कॉलोनी के पास भी डस्टबिन भरा पाया गया। नगर आयुक्त ने दोनों सिटी मैनेजर एवं सभी सफाई निरीक्षक को सख्त आदेश दिया कि शहर में कहीं भी गंदगी पड़ा हुआ नहीं रहना चाहिए। जिसका अनुश्रवण कर नगर आयुक्त को इसकी जानकारी दी जाय। सफाई एजेंसी अगर सही तरीके से काम नहीं कर रही है और डोर टू डोर का कार्य सत प्रतिशत नहीं होने पर लिखित रूप से कार्यालय को प्रतिवेदन देना सुनिश्चित करेंगे। सभी वार्डों में सफाई एजेंसी के द्वारा कचरा उठाव के लिए हाथ ठेला का प्रयोग नहीं किया जा रहा है, जिसके लिए सफाई एजेंसी को सख्त आदेश दिया गया की हाथ ठेला का उपयोग करें। सभी वार्डों में बायोमेट्रिक अटेंडेंस की भी जांच की गयी। वार्ड 43, 44 और 45 में बायोमेट्रिक अटेंडेंस नहीं बन रहा है, जिसके लिए संबंधित कर्मी का वेतन रोकने का आदेश दिया गया। आयुक्त द्वारा वार्ड नंबर 17 एवं 18 में भी बायोमेट्रिक अटेंडेंस की जांच की गई, जिसमें 11 मजदूर में मात्र चार मजदूर ही उपस्थित पाए गए। गांधी चौक से नेहरू चौक तक का रोड का निर्माण बिहार राज्य पुल निर्माण निगम एवं आर सीडी के आपसी सानिध्य के द्वारा पूरा किया जाएगा। निरीक्षण के दौरान उपनगर आयुक्त ओमप्रकाश सिंह, सिटी मैनेजर वेद प्रकाश वर्णनवाल, नीरज कुमार झा सफाई निरीक्षक एवं नगर निगम कर्मी उपस्थित थे।

सरण पुलिस ने 20 को गिरफ्तार कर भेजा जेल

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा सदर : जिले में विभिन्न कांडों में सम्मिलित 20 अपराधियों को सरण पुलिस के द्वारा गिरफ्तार कर जेल भेजा गया । जिसमें आर्म्स एक्ट में एक, उत्पाद के कांड में 12, खनन के कांड में तीन, चोरी के कांड में दो, और हत्या के प्रयास के कांड में दो अभियुक्त को गिरफ्तार कर जेल भेजा गया।

बेखौफ हथियार बंद अपराधी ने फाइनेंस कर्मी से एक लाख रुपए लूटे

प्रात : किरण संवाददाता

सोनवर्षा राज/सहरसा। प्रखंड क्षेत्र के स्थानीय थाना क्षेत्र के सोनवर्षा राज देहद मुख्य मार्ग पर पुलिया के समीप बूधवार कि शाम दो अज्ञात बेखौफ मोटरसाइकिल सवार हथियार बंद अपराधियों के द्वारा भारत फाईनेंस कर्मी से एक लाख नगदी सहित अन्य सामान लूट लिया। घटना के बाद पीडित व्यक्ति काफी डरा सहमा हुआ है। घटना के बाद पीडित फाईनेंस कर्मी के द्वारा सोनवर्षा राज थाना में एक आवेदन देकर लूटी गई राशि व सामान की बरामदगी करते हुए अज्ञात बदमाशों के खिलाफ कानूनी कारवाई करने की मांग किया है।

अमन राज बने सारण के जिला संगठन आयुक्त स्काउट

प्रात : किरण, संवाददाता

छपरा सदर : बिहार राज्य भारत स्काउट और गाइड बुद्धमार्ग पटना द्वारा अमन राज को जिला संगठन आयुक्त स्काउट के पद पे नियुक्त किया गया है।तो वही रीतिका सिंह को जिला संगठन आयुक्त गाइड के पद पे नियुक्त किया गया है।राज्य मुख्य आयुक्त ने पत्र निर्गत करके इसकी सूचना जिला मुख्यालय को दिया।अमन राज और रीतिका सिंह ने जिला शिक्षा पदाधिकारी सारण और जिला सचिव के पास अपना योगदान देते हुए इसकी सूचना जिला मुख्य आयुक्त और राज्य मुख्यालय को दिया।जिला संगठन आयुक्त स्काउट सारण अमन राज ने बताया कि राज्य मुख्यालय द्वारा विज्ञापन निकालने के पश्चात साक्षात्कार हुआ उसके बाद अन्तिम रूप से पूरे बिहार के अंदर 15 जिला संगठन आयुक्त की नियुक्ति राज्य मुख्यालय द्वारा अलग अलग जिलों में किया गया है।उसी क्रम में सारण जिला में भी स्काउट के जिला संगठन आयुक्त के रूप में अमन राज तो वही गाइड में जिला संगठन आयुक्त के रुप में रीतिका सिंह को नियुक्त किया गया। जिला संगठन आयुक्त गाइड रितिका सिंह ने बताया कि अब जिले में गाइडिंग के गतिविधि में काफी सक्रियता के साथ कार्य होगा और बिहार राज्य में सारण जिला को दल पंजीयन और शिविरों के संचालन में अग्रणी जिला बनाने की उनकी पूरी कोशिश रहेगी।दोनो जिला संगठन आयुक्त को जिला प्रशिक्षण आयुक्त स्काउट गाइड का भी अतरिक्त प्रभार दिया गया है। सारण जिला के दो नए जिला संगठन आयुक्त मिलने पे जिला मुख्य आयुक्त हरेंद्र प्रसाद सिंह,जिला सचिव ज्ञानती सिंह, स्काउट के सदस्य सुरेश प्रसाद सिंह, उमाशंकर गिरि,अब्दुलगणी खा,रमेश शर्मा, अंबुज झा,मनीष गुप्ता और स्काउट गाइड के अन्य सदस्यो ने बधाई और शुभकामनाएं दी।

श्रम संसाधन विभाग द्वारा आयोजित रोजगार सिविल 10 फरवरी को ब्लॉक सेल्स ऑफिसर के पद पर होगी नियुक्ति

प्रात : किरण, संवाददाता

छपरा। श्रम संसाधन विभाग के नियोजन पदाधिकारी अवर प्रादेशिक नियोजनालय छपरा द्वारा बताया गया कि आगामी 10 फरवरी को 11:00 से शाम 4:00 बजे तक बाजार समिति स्थित अवर प्रादेशिक नियोजनालय छपरा कार्यालय परिसर में रोजगार शिविर का आयोजन किया जा रहा है '

इस सम्बन्ध में जानकारी देते हुए जिला नियोजन पदाधिकारी शोभा कुमारी द्वारा बताया गया कि इस रोजगार शिविर में खुशग्राम खादी ग्रामोद्योग लिमिटेड गोपालगंज नियोक्ता कंपनी द्वारा ब्लॉक सेल्स आफिसर के 60 रिक्तियों के विरुद्ध चयन किया जाएगा ' ब्लॉक सेल्स आफिसर पद के लिए न्यूनतम योग्यता 12वीं पास होना जरूरी है ' जबकि उम्र सीमा 18 वर्ष से 30 वर्ष एवं वेतन -15000 रुपए होगी। इनका कार्यस्थल सारण जिला अंतर्गत होगा ' रोजगार शिविर में भाग लेने वाले अभ्यर्थी अपना बायोडाटा, शैक्षणिक योग्यता प्रमाण पत्र, फोटो ,आधार कार्ड के साथ आएंगे। नियोजन शिविर में भाग लेने वाले अभ्यर्थियों के लिए उनका निबंधन जिला नियोजनालय में होना अनिवार्य है। नियोजनालय में निबंधन की प्रक्रिया ऑनलाइन कर दी गई है जो भारत सरकार के पोर्टल ६६६.ल्लू२.ॅङ्म५.ल्ल के माध्यम से होता है ' कोई भी योग अभ्यर्थी स्वयं उपरोक्त पोर्टल के माध्यम से अपना निबंधन कर सकता है ' अवर प्रादेशिक नियोजनालय छपरा में भी निबंधन को लेकर संपर्क किया जा सकता है।

इतिहास विभाग जेपीविवि के अध्यक्ष बने प्रो. सुधीर कुमार सिंह

प्रात : किरण, संवाददाता

जयप्रकाश विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के आठवें विभागाध्यक्ष के रूप में कार्यभार ग्रहण किया। आधुनिक इतिहास के विशेषज्ञ प्रो० सुधीर कुमार सिंह जय प्रकाश विश्वविद्यालय में सहायक प्रोफेसर के रूप में योगदान दिया था । पटना विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त प्रो० सिंह ने ह्लप्रेस,पॉलिटिक्स एंड पब्लिक ओपिनियन इन बिहारह्व विषय पर शोध की उपाधि प्राप्त किया है।विभागाध्यक्ष के रूप में कार्यभार करने के पश्चात प्रो०सिंह ने विभाग के अकादमिक उन्नयन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को बताया। ज्ञापत्य है कि प्रो सयैद रजा के सफलतापूर्वक कार्यकाल पूर्ण करने के पश्चात कुलसचिव कार्यालय के पत्रांक 482-ए२३-क दिनाँक 08/02/2024 द्वारा प्रो० सुधीर कुमार सिंह को कार्यभार ग्रहण के दिन से तीन वर्ष की अवधि के विभागाध्यक्ष नियुक्त किया है। प्रो ० सुधीर कुमार सिंह विभागाध्यक्ष बनने पर प्रो.सयैद रजा प्रो. अनिल कुमार सिंह, प्रो. कुमार मोती प्रो. संजय पाठक, प्रो.अशोक कुमार, प्रो. आर. पी. श्रीवास्तव, प्रो.अरुण राय, प्रो. शंकर शाह, प्रो. अजीत तिवारी, प्रो. बिभु कुमार, प्रो. गजेंद्र कुमार, प्रो. अनिता, प्रो. पूनम सिंह, प्रो. आशा कुमारी, डॉ ऋतेश्वर नाथ तिवारी, डॉ अभय कुमार सिंह, डॉ नीरज कुमार सिंह,डॉ श्याम प्रकाश सहित विश्वविद्यालय के सभी शिक्षकों ने बधाई दिया तथा स्वर्णिम कार्यकाल की कामना किया।

भेल्दी में वाहन के धक्के से डाटा ऑपरेटर की मौत,मचा कोहराम

प्रात : किरण, संवाददाता

भेल्दी(सारण)। छपरा-मुजफ्फरपुर एनएच 722 पर खरीदाहा के समीप एक अनियंत्रित वाहन की चपेट में आने से बाइक सवार एक डाटा ऑपरेटर की मौत हो गई।मृतक राजेश कुमार राम(35) परसा थाने के सिकटी अंजनी गांव के विद्या दास का पुत्र बताया जाता है।घटना गुरूवार की अहले सुबह घटित हुई। मिली जानकारी के अनुसार परसा थाने के अंजनी गांव के डाटा ऑपरेटर राजेश कुमार राम गुरूवार की सुबह छपरा से अपनी बाइक से अपने घर परसा थाने के अंजनी जा रहे थे जैसे ही छपरा-मुजफ्फरपुर एनएच 722 पर सोनहो टोल टैक्स से आगे खरीदाहा के समीप पहुंचे कि एक अनियंत्रित वाहन ने ठोकर मार दी।ठोकर मारने के बाद चालक वाहन को लेकर फरार हो गया।घटना की सूचना मिलते ही भेल्दी पुलिस मौके पर पहुंच शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल छपरा भेज दिया। मृत डाटा ऑपरेटर राजेश कुमार राम का शव छपरा सदर अस्पताल से सिकटी अंजनी गांव में पहुंचते ही परिजनों में चीख-पुकार मच गई।अपने पति राजेश का शव देखते ही पत्नी रूबी देबी मूर्छित होकर गिर पड़ी।वह जब भी होश में आती अपने पति के शव से लिपटकर दहाड़ मारकर रोने लगती।पिता विद्या दास मां पूनम कुमारी छोटा भाई प्रियेश कुमार राम का रो-रोकर बुरा हाल है।मृत राजेश दो भाईयों में सबसे बड़ा था।मृतक राजेश कुमार राम का ससुराल भेल्दी थाने के जाफरपुर गांव के मनोज कुमार राम के यहां था।इस घटना की सूचना मिलते ही कटसा पंचायत के वार्ड सदस्य संतोष राम,मुखिया गौतम कुमार साह समेत,अन्य लोग मृतक के अंजनी पहुंचकर रोते विलखते परिजनों को ढाढस बढाते हुए सांत्वना दिया।

डॉ. अशोक कुमार बने साइंस के डीन

प्रात : किरण, संवाददाता

छपरा सदर : जयप्रकाश विश्वविद्यालय के गणित विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो डॉ अशोक कुमार को जयप्रकाश विश्वविद्यालय के विज्ञान संकाय के डीन के पद पर नियुक्ति की गई है । इस आशय का पत्र जेपीयू के कुलपति डॉ पीके बाजपेई के आदेश पर कुलसचिव प्रो रंजीत कुमार ने जारी करते हुए सूचित किया है कि बिहार राज्य विश्वविद्यालय अधिनियम 1976 की धारा 26 उप धारा 5(1) के तहत डॉ अशोक कुमार को विज्ञान संकाय के डीन पर तत्काल प्रभाव से दो वर्ष या उनकी सेवा निवृत्ति की तारीख तक जो भी पहले हो, के लिए नियुक्त किया गया है। डॉ कुमार को इस अकादमिक दायित्व मिलने पर डॉ कुमार मोती,ड़ॉ गजेंद्र कुमार,डॉ चंदन श्रीवास्तव आदि ने बधाई दी।

संक्षिप्त खबरें

दो महिलाओं को गिरफ्तार कर भेजा गया जेल

कैमूर।जिला के कुदरा थाना प्रशासन द्वारा नगर पंचायत कुदरा बाजार से, भरी बाजार में एक महिला की पर्स काट कर 30000 रुपए चोरी करने के मामले में, दो महिलाओं को गिरफ्तार कर भेजा गया जेल।संदर्भ में जानकारी देते हुए थाना अध्यक्ष विकास कुमार के द्वारा बताया गया कि विगत सोमवार को थाना क्षेत्र के तुर्की ग्राम वासी अनीता देवी पति अनुज कुमार गुप्ता कुदरा बाजार करने आई हुई थी, जिनका की पर्स बाजार में भीड़ का फायदा उठाते हुए, दो महिलाओं के द्वारा काटकर30000 रुपए निकाल लिया गया। महिला द्वारा चोरी की जानकारी होते ही, अपने पास की महिलाओं पर शक हुआ शोरगुल के बाद लोगों की भीड़ इकट्ठा हो गया। विषय की जानकारी मिलते ही मौके पर पहुंचे थाना प्रशासन द्वारा, दोनों महिलाओं को गिरफ्तार कर लिया गया।जिन्हें स्वास्थ्य जांच के उपरांत जेल भेज दिया गया। लोगों को ऐसे में अपने आप से भी सावधान रहने की जरूरत है, प्रशासन द्वारा हर संभव सहयोग किया जाएगा। गिरफ्तार कोमल बाई पति कमल सिसौदिया एवं फरिता सिसौदिया पति वंशत सिसौदिया दोनों ग्राम- कड़िया, थाना- गोडा, जिला- राजगढ़, मध्यप्रदेश की निवासी हैं।

हीरोइन बेचने वाले तीन को गिरफ्तार कर भेजा जेल

दुर्गावती कैमुर। मंगलवार के दिन हीरोइन बनाने और बेचने की सूचना पर डुमरी पहुंची पुलिस के कार्य में बाधा पहुंचाने वाले तीन लोगों को पुलिस ने गिरफ्तार कर बुधवार को जेल भेज दिया। गिरफ्तार तीनों आरोपियों में दो डुमरी गांव निवासी सबीर खान का पुत्र आरिफ खान व नौरेज खान बताया गया है। जबकि तीसरा आरोपी उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिला अंतर्गत मोहम्मदपुर गांव निवासी स्वर्गीय मुतुर्जा खान का पुत्र अब्बास बताया गया है।इस संबंध में थानाध्यक्ष राजीव रंजन सिंह ने बताया की मंगलवार के दिन डुमरी गांव निवासी साबिर खान के यहां हीरोइन बनाने की और बेचने की गुप्त सूचना पर पुलिस छापेमारी करने के लिए डुमरी गई थी जिसके क्रम में पुलिस के कार्य में ये लोग बाधा पहुंचाने लगे। जिसको मौजूद पुलिस बल की टीम ने गिरफ्त में लेकर थाने ले आई जहां कागजी प्रक्रिया पूरी करने के बाद बुधवार के दिन जेल भेज दिया गया। गाजीपुर जिले के मोहम्मदपुर का रहने वाला आरोपी अब्बास के ऊपर यूपी के हीं कई थानों में हत्या, एनडीपीएस व गैंगस्टर के मामले दर्ज है। वही डुमरी गांव का रहने वाला नौरेज खान के ऊपर भी हत्या व एनडीपीएस के मामले दर्ज हैं।

अवैध बिजली चोरी के विरुद्ध लोगों पर लगा जुर्माना

नावानगर (बक्सर) स्थानीय बिजली जेई बिपिन किशोर के नेतृत्व में टीम ने इकील गांव में छापेमारी किया छापेमारी में चार लोगों को गलत तरीके से बिजली जलाते पकड़ा गया। इसको लेकर जेई द्वारा सभी चारो पर जुमार्ना लगाते हुए सोनवर्षा ओपी में प्राथमिकी दर्ज कराया गया है। इसकी पुष्टि करते हुए जेई ने बताया कि गुप्त सूचना प्राप्त हुआ था की इकील गांव में कुछ लोग गलत तरीके से बिजली जला रहे है। सूचना पर तत्काल संतोष कुमार गुप्ता, सोनू हुसैन और चितरंजन कुमार सिंह के साथ इकील गांव में छापेमारी किया गया। छापेमारी में फूलकुमारी देवी, बद्री नारायण सिंह, विश्वनाथ चौधरी और संतोष चौधरी को गलत तरीके से 3 बिजली जलाते पकड़ा गया। इसको लेकर विश्वनाथ चौधरी पर 9624 संतोष चौधरी पर 5007, फूलकुमारी देवी पर 16776 और बद्री नारायण सिंह पर 23659 का जुमार्ना लगाते हुए सोनवर्षा ओपी में प्राथमिकी दर्ज कराया गया है।

ओपी पुलिस ने वाहन चालकों पर ऑनलाइन किया जुमार्ना

कोचस (रोहतास) गुरुवार को परसथुआ पुलिस ने वाहन जांच के दौरान चार पहिए तथा दो पहिया वाहनों से दस हजार रुपए का जुमार्ना ऑनलाइन किया है।इसकी जानकारी देते हुए ओपी थाना अध्यक्ष नीरज कुमार ने बताया कि प्रशासनिक विधि व्यवस्था तथा सड़क दुर्घटना मे कमी लाने हेतु पुलिस कप्तान के निर्देश पर जिले के सभी थानो मे वाहन जांच चलाया जा रहा है, जिसमे परसथुआ ओपी पुलिस ने थाना परिसर के सामने राष्ट्रीय राजमार्ग 319 पर वाहन जांच चलाया जिसमें दो पहिए तथा चार पहिए वाहनों के पास जरुरी के कागजात नहीं होने पर दस हजार रुपए का ऑनलाइन जुमार्ने के तौर पर किया है। वहीं उन्होंने यह भी कहा कि थाना क्षेत्र मे वाहन जांच अभियान निरंतर चलती रहेगी।

12 घंटे के अंदर बाइक लूट कांड का रोहतास पुलिस ने किया उद्भेदन , चार गिरफ्तार

प्रात : किरण संवाददाता

रोहतास। बीते दिनों रोहतास जिले के नोखा थानाक्षेत्र अंतर्गत खराडी नहर पुल के समीप एक युवक के साथ मारपीट कर बाइक लूटने की घटना का पुलिस ने उद्भेदन कर लिया है। घटना में शामिल चार अपराधियों को पुलिस ने गिरफ्तार किया तथा कानूनी प्रक्रिया पूरी करते हुए जेल भेज दिया गया।

मामले में गुरुवार को आयोजित एक प्रेसवार्ता के दौरान एसडीपीओ दिलीप कुमार ने बताया कि नोखा थानाक्षेत्र अंतर्गत खराडी नहर पुल के पास दो बाइक पर सवार 05 अपराधकर्मियों द्वारा एक व्यक्ति के साथ मारपीट कर बाइक व मोबाइल लूट की घटना को अंजाम दिया गया था। जिसको लेकर नोखा थाने में एफआईआर दर्ज की गई और छापेमारी के क्रम में बाइक की बरामदगी करते हुए चार लोगों को गिरफ्तार किया गया है। उन्होंने बताया कि इस अपराध में शामिल तीन आरोपियों को अगरेर थानाक्षेत्र से गिरफ्तार किया गया है जबकि एक युवक को सासाराम मुफस्सिल थाना क्षेत्र से गिरफ्तार किया गया है। जिसमें सोनू कुमार उर्फ राजा, निर्मल कुमार उर्फ भोला, साहेब कुमार एवं ऋषिकेश कुमार उर्फ राजा शामिल है। वहीं इनके पास से 02 मोटरसाईकिल एवं 03 मोबाईल भी बरामद किया गया है तथा अन्य आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए छापेमारी की जा रही है।

भभुआ वार्ड 18 में चोरों ने दो जगहों से 10 बकरों सहीत हजारों का समान किया चोरी

प्रात : किरण संवाददाता

भभुआ (कैमूर) भभुआ वार्ड 18 में रात के समय चोरों ने बकरा गोदाम से दरवाजे की कुंडी उखाड़ कर 10 बकरों की चोरी कर लिया। वहीं बगल के गैराज की छत का करकट उखाड़ कर 20 हजार की टायर चोरी कर फरार हो गये। सुबह जब गैराज मालिक एवं बकरा मालिक ने दुकान खोला तो देखा की बकरा और टायर चोरी कर लिया गया। दोनों ने भभुआ थाना में आवेदन देकर न्याय की गुहार लगाई है। दिए गए आवेदन में गैराज के मालिक भभुआ वार्ड नं 22 निवासी मोहम्मद कमाल ने बताया कि मेरे छत के करकट उखाड़ कर चोरों ने 20 हजार रुपए का नया टायर की चोरी कर फरार हो गये।

वहीं दूसरा पीड़ित भभुआ वार्ड नं 16 निवासी एकबाल कुरैशी ने बताया कि बकरा रखने का गोदाम भभुआ वार्ड 18 में लल्लू भाई मॉल के पास है। जहां कल रात को बेखौफ चोरों ने लकड़ी का दरवाजा का कुंडी निकाल कर करीब 70 हजार रुपये के 10 बकरों की चोरी कर कर ली। वहीं चोर बकरा को बेचने के लिए मोहनिया ले गये जिसका वीडियो भी बनाया गया। भभुआं थानाध्यक्ष मुकेश कुमार ने आश्वासन दिया है कि जल्द से जल्द कार्यवाई की जाएगी।

बिक्रमगंज पुलिस ने वाहन जांच में 55 हजार पांच सौ रुपये का काटा ऑनलाइन चालान

प्रात : किरण संवाददाता

बिक्रमगंज(रोहतास):वरीय पदाधिकारियों के दिशा-निर्देश पर बिक्रमगंज थाने की पुलिस ने थानाध्यक्ष के नेतृत्व में चलाया वाहन जांच अभियान । जानकारी देते हुए थानाध्यक्ष मनोज कुमार ने बताया कि वरीय पदाधिकारियों के दिशा-निर्देश पर स्थानीय शहर के तेंदुनी चौक एवं थाना चौक पर वाहन जांच अभियान पुलिस पदाधिकारियों के द्वारा चलाया गया । वाहन जांच के क्रम में पुलिस पदाधिकारियों के द्वारा वाहन चालकों से 55 हजार पांच सौ रुपये का ऑनलाइन चालान काटा गया ।

श्री कुमार ने कहा कि वाहन जांच अभियान निरंतर चलता रहेगा । वाहन जांच के क्रम में पदाधिकारियों ने चालकों के हेलमेट , ड्राइविंग लाइसेंस , ऑनर बुक, ट्रिपल लोडिंग ,डिक्की सहित अन्य बिंदुओं पर गहन रूप से जांच की । मौके पर स्थानीय थाना के वरीय पुलिस पदाधिकारी एवं पुलिस बल के जवान लोग मौजूद थे ।

पश्चिमी पट्टी में गुरुवार को लगी आग

प्रात : किरण संवाददाता

नोखा (रोहतास) नोखा नगर परिषद क्षेत्र के पश्चिमी पट्टी में गुरुवार को आग लग गई। पचिमी पट्टी मस्जिद के पीछे रखे गल्ले में आग लगी और तेजी से फैलनी लगी।

कुछ लागों ने जब देख तो शोर मचाया। आग की बात फैलते ही कोहराम मच गया, मौके पर बड़ी संख्या में लोग जमा हो गए। नोखा थाने की पुलिस को भी सूचना दी गई। नोखा पुलिस ने अगिनशमन को सूचना दी। सूचना पर पहुंची अगिनशमन वाहन की टीम ने स्थानीय लोगों की सहायता से आग पर काबू पाया, जिससे बड़ी घटना होने से बच गई। स्थानीय लोगों ने बताया कि बिजली की शार्ट-सर्किट से गल्ला में आग लगी है। आगली में दो किसानों विंध्याचल और अच्छेलाल का गल्ला पूरी तरह जल गया है। जबकि आस-पास रखा आधे दर्जन किसानों का गल्ला आंशिक रूप से जला है। अगर फायर ब्रिगेड सही समय पर ना आता, तो आग तेजी से फैल सकती थी, लेकिन समय रहते आग पर काबू पा लिया गया। ग्रामीणों ने पीड़ित किसानों के लिए मुआवजे की मांग की है। बताते हैं कि अच्चे लाल सपरिवार बाहर गया है, उसके लौटने पर आवेदन देकर क्षतिपूर्ति की मांग प्रशासन से की जाएगी।

बाईकों के आमने-सामने भिडंत में दो की मौत, अन्य दो घायल

बहन को इंटर परीक्षा दिलाकर लौटने के क्रम में भाई की मौत

प्रात : किरण संवाददाता

रोहतास। सासाराम-बक्सर स्टेट हाइवे पर दो बाइकों की आमने की टक्कर में दो की मौत हो गई है, जबकि दो गंभीर रूप से घायल हैं। घायलों को इलाज के लिए जिला सदर अस्पताल सासाराम भर्ती कराया गया। जहां बेहतर इलाज हेतु चिकित्सक ने एक को गंभीर हालत में रेफर कर दिया,बताया जाता है कि इंटर की परीक्षा देने आई बहन अपने भाई एवं चचेरे भाई के साथ एक ही बाइक पर सवार हो अपने गांव कोनार लौट रहे थे। इस क्रम में तीनों जैसे ही सासाराम-बक्सर स्टेट हाइवे पर बराडीह चितौली मोड़ समीप पहुंचे कि दूसरी ओर से आ रहे बाइक से टककर हो गई। जिस घटना में कोनार निवासी योगेंद्र सिंह के बेटे बिट्टू सिंह की मौके पर ही मौत हो गई। जबकि उसकी बहन प्रिया कुमारी गंभीर रूप से घायल हो गई। जबकि इनका चचेरा भाई सत्यम सिंह भी गंभीर रूप से घायल हो गया। जबकि दूसरे मृतक की पहचान कैमूर जिला के सबार थाना क्षेत्र के ठकुरहठ गांव निवासी स्वर्गीय दुखी पासवान का 30 30 वर्षीय बेटा अतुल पासवान बताया जाता है। जबकि अन्य दोनों घायलों को गंभीर हालत में सदर अस्पताल के ट्रामा सेंटर लाया गया, जहां प्रिया कुमारी का इलाज चल रहा है। जबकि देवेंद्र सिंह के बेटे सत्यम सिंह के प्राथमिक इलाज के बाद हायर सेंटर के लिए रेफर कर दिया गया है। सासाराम मुफ्फसिल थानाध्यक्ष संजीत कुमार ने बताया कि बाइक के आमने-सामने की टक्कर में दो कि मौत हुई है। दोनों शवों को पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल लाया गया है। वही घटना मामला में पुलिस अग्रिम कार्रवाई में जुट गई है।

परिवारिक विवाद में दो पक्षों के बीच हुई मारपीट में वृद्ध घायल, रेफर

संझौली(रोहतास)। थाना क्षेत्र के सुसाड़ी गांव में गुरुवार की दो पक्षों के बीच हुई मारपीट में एक वृद्ध व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया। मारपीट का कारण परिवारिक विवाद बताया जा रहा है। वृद्ध घायल सुसाड़ी गांव निवासी शिव जी साह बताए जाते है। घायल को स्थानीय पीएचसी में इलाज के बाद बेहतर इलाज के लिए सदर अस्पताल सासाराम हेतु रेफर कर दिया है, जहां उनका इलाल चल रहा है। वही मारपीट को ले सुसाड़ी निवासी शिव जी साह द्वारा स्थानीय थाने में आवेदन दी गई है। थानाध्यक्ष मुकेश कुमार ने बताया कि आपसी परिवारिक विवाद में दो पक्षों के बीच मारपीट में एक पक्ष से सुसाड़ी गांव निवासी शिव जी साह घायल हुए है। मारपीट को ले सुसाडी निवासी शिव जी साह ने थाने में आवेदन दिया है। मारपीट में जो लोग शामिल होंगे, जांच के बाद उनके विरुद्ध करवाई की जाएगी।

बकाया राशि रहने के कारण विद्युत कनेक्शन कटने के पश्चात जलाना पड़ा महंगा, विभाग ने लगाया जुर्माना

प्रात : किरण संवाददाता

बिक्रमगंज(रोहतास):बिक्रमगंज नगर परिषद में बिलिंग गुणवत्ता एवं बकायेदार उपभोक्ताओं की जांच को लेकर एक जांच दल का गठन कर विद्युत ऊर्जा चोरी को लेकर कनीय विद्युत अभियंता, बिक्रमगंज नवदीप गोयल के नेतृत्व में प्राथमिकी दर्ज कराई गई है। बताते चले कि बकायेदार उपभोक्ताओं का विद्युत विपत्र की राशि बकाया रहने के कारण विभाग द्वारा विशेष अभियान चलाकर विद्युत कनेक्शन काट रही है परंतु कुछ उपभोक्ताओं द्वारा बिना बकाया राशि एवं रिकनेक्शन शुल्क जमा किये अवैध रूप से तार जोड़कर विद्युत ऊर्जा की चोरी करने लग रहे हैं। इसी बीच नगर परिषद बिक्रमगंज अंतर्गत ग्राम-धनगाई के उपभोक्ता का बकाया पर विद्युत कनेक्शन कटने के पश्चात अवैध रूप से तार जोड़कर जलाने को लेकर ईश्वर दयाल सिंह पर 21937 रुपये दंडित राशि लगाया गया है। बात दें कि श्री सिंह पर 56791 बकाया रहने के कारण विभाग द्वारा अस्थायी रूप से कनेक्शन काटा गया था परंतु बिना बकाया राशि जमा किये अवैध रूप से बिजली की चोरी की जा रही थी। बकाया राशि तथा दंडित राशि दोनों को समायोजित करने के पश्चात विभाग ने 78728 रुपये राजस्व की क्षति लगाई गई है। आगे बताते चलें कि मीटर बाइपास कर विद्युत ऊर्जा चोरी करने को लेकर ग्राम-धनगाई के ही सुशीला कुमारी पर 13950, चुनमुमा देवी पर 8288, लालबाबू सिंह पर 50411, कमलेश सिंह पर 8973, जितेंद्र कुमार सिंह पर 8587 रुपये दंडित राशि लगाई गई है। सहायक विद्युत अभियंता, बिक्रमगंज राज कुमार के द्वारा बताया गया की बिजली चोरी के खिलाफ विशेष अभियान चलाया जा रहा है। जिसमे उपभोक्ताओं के परिसर में लगे सर्विस तार, मीटर, बिलिंग एवं बिल के ससमय भुगतान की सघन जांच की जा रही है। जांच में मीटर की सील टूटी हुई, टेम्परिंग या बाईपास पाए जाने पर तत्काल प्राथमिकी दर्ज कराया जा रहा है साथ ही साथ बकायेदार उपभोक्ता का मौके पर ही बिजली कनेक्शन काटा जा रहा है।

बूथ संबंधित फीडबैक को लेकर भाजपा ने की बैठक

प्रात : किरण संवाददाता

बिक्रमगंज(रोहतास)। गुरुवार को गांव चलो अभियान अंतर्गत काराकाट विधानसभा में घुसियां कलां शक्ति केंद्र पर बूथ नंबर 120 एवं 121 पर बुथ कमेटी की बैठक हुई । जिसकी अध्यक्षता संजय कुमार गुप्ता ने की । बैठक में ओबीसी मोर्चा जिलाध्यक्ष सह काराकाट लोक सभा संयोजक नवीन चंद्र साह ने बुथ संबंधित फीडबैक लिया तथा संगठनात्मक कार्यो की ओर ध्यान आकृष्ट कराते हुए वोटर लिस्ट वर्गीकरण करने को कहा । साथ ही समर्थक तटस्थ विरोधी यानी सामाजिक वर्गीकरण के आधार पर बुथ की श्रेणी बनाना एबीसी ,अच्छा , सामान्य व कमजोर । साथ ही साथ प्रत्येक माह के अंतिम रविवार को प्रधानमंत्री के मन की बात सुनने का आग्रह किया तथा 11 फरवरी को पंडित दीनदयाल की पुण्यतिथि समर्पण दिवस के रुप में मनाने को कहा। तत्पश्चात गांव के भ्रमण का कार्यक्रम सदस्यों के साथ संपन्न किया गया तथा जन कल्याणकारी योजनाओं से आम जनता को घर-घर जाकर अवगत कराया गया । इस क्रम में 200 पत्रक का वितरण तथा 25 प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना का लाभ लेने हेतु उत्सुक हुए । टोला सेवक , जीविका दीदी ,आशा , ममता , आंगनवाड़ी सहित अन्य लोगों से संपर्क स्थापित किया गया । इस प्रवास के कार्यक्रम में काराकाट विधानसभा विस्तारक माधव केसरी , पालक रामजी सिंह , प्रकाश कुमार , जवाई प्रसाद गुप्ता , रमेश चौधरी, अंजली कुमारी , मीना देवी , बजरंग दल के रामबाबू कुमार सहित अन्य लोग उपस्थित थे ।

ग्राम पंचायत मोरौना में बैठक आयोजित

बिक्रमगंज (रोहतास): बिक्रमगंज प्रखंड के ग्राम पंचायत मोरौना में ग्राम पंचायत डिवेलपमेंट प्लान के सफल संचालन एवं पंचायत स्तरीय लक्ष्य की प्राप्ति हेतु जीपीपीएफटी फोरम के गठन को लेकर बैठक आहूत की गई । बैठक ग्राम पंचायत भवन मोरौना में मुखिया की अध्यक्षता में आहूत की गई । नीति आयोग के सहयोगी संस्था पिरामल फाउंडेशन के प्रोग्राम लीडर कुश कुमार एवं अर्जुन गोस्वामी ने पंचायत के चिन्हित थीम पर विस्तार पूर्वक चर्चा किया और कैसे पंचायत को मॉडल पंचायत बनाया जा सके । इस पर विस्तारपूर्वक बताया । बैठक में सभी नामित सदस्य एवं प्रतिभागियों के सर्व सहमति से जीपीपीएफटी फोरम के गठन की सहमति बनी । वहीं ग्राम पंचायत विकास योजना के निर्माण प्रक्रिया में सम्मिलित किए जाने वाले मुद्दे पर भी चर्चा की गई । मौके पर बिक्रमगंज बीसीएम अनीश नारायण , पिरामल स्वास्थ्य के प्रोग्राम लीडर कुश कुमार, अर्जुन गोस्वामी, सभी आशा , एडब्ल्यूडब्ल्यू , जीविका दीदी , शिक्षक , एएनएम सीता कुमारी सहित वार्ड सदस्यों ने भाग लिया ।

फेसबुक लाइव से एसडीपीओ ने सुनी लोगों की समस्या, निष्पादन का दिया भरोसा

बिक्रमगंज(रोहतास)। विभागीय कार्यक्रम के अंतर्गत गुरुवार को फेसबुक लाइव आकर बिक्रमगंज एसडीपीओ कुमार संजय ने लोगों से संवाद स्थापित कर समस्याओं को सुना। इसके साथ ही संबंधित व्यक्तियों को उनकी समस्या निष्पादित कराने का भरोसा दिया। पुलिस प्रशासन द्वारा किए जा रहे इस प्रयास का लोगों ने जमकर सराहना किया। इस कार्यक्रम से जुड़कर कई लोगों ने कई तरह की समस्याओं को रखने का काम किया। पुलिस विभाग के अंतर्गत आने वाली समस्याओं को खुद देखने एवं दूसरे विभाग से संबंधित समस्याओं को संबंधित विभागों में स्थानांतरित करने की बात अधिकारी द्वारा की गई। 32 मिनट तक चले इस कार्यक्रम के माध्यम से सैकड़ो लोगों ने सैकड़ो समस्याओं को रखने का काम किया। हालांकि सभी की समस्या अधिकारी द्वारा निपटा दिया जाएगा ऐसा संभव नहीं दिख रहा है। परंतु लोगों से जुड़ने एवं उन्हें संतुष्ट रखने का एक अनोखा पहल यह कार्यक्रम प्रतीत हो रहा है।

मां सरस्वती की प्रतिमा को अंतिम रूप देने में जुटे मूर्तिकार

14 फरवरी को मनेगी बसंत पंचमी पूजन,छात्रों में दिखी खुशी

प्रात : किरण संवाददाता

नोखा (रोहतास) प्रखंड क्षेत्र के नगर परिषद नोखा बाजार विभिन्न पंचायत स्थित कुम्हार टोली में मां सरस्वती पूजनोत्सव की तैयारी जोरों पर है। जिस पूजन को लेकर मां सरस्वती की प्रतिमा को मूर्तिकारों द्वारा दिन-रात मेहनत कर अंतिम रूप देने में जुटे है।

ज्ञात हो कि फरवरी को मां की पूजन साथ बसंत पंचमी का त्योहार मनाया जाएगा। इसकी तैयारी थाना क्षेत्र के विभिन्न स्थानों सहित शैक्षणिक संस्थानों में जोरों से की जा रही है।जिसको लेकर इस ठंड भरी मौसम में भी बाजारों में विभिन्न जगहों पर मां सरस्वती की प्रतिमा बना उन्हें अंतिम रूप देने में कलाकार जुटे है। इस संदर्भ में नोखा नगर परिषद कुम्हार टोली मूर्तिकार मनोज कुमार ने बताया कि पिछले कई वर्षो से पूर्वजों के सिखाएं मार्ग पर चलकर वह मूर्ति बना रहे हैं। कलाकार मनोज कुमार ने बताया कि माता सरस्वती की मूर्ति को विभिन्न डिजाइनों में ग्राहकों के मांग अनुसार बनाते हैं। साथ ही साथ मिट्टी के अलावा मूर्ति निर्माण करने में पेंट, श्रृंगार की वस्तु सहित अन्य सामान खरीदने पड़ते हैं। जिस मूर्ति का निर्माण कार्य सभी कलाकार करीब ढ़ाई महीने पूर्व से ही बनाने में लग जाते हैं। मूर्तिकार ने बताया कि बड़ी मूर्ति बनाने में करीब तीन दिन व छोटी मूर्ति करीब एक दिन में बनाई जाती है। उन्होंने बताया कि प्रतिमाएं आर्डर पर 800 से 15000 रुपये तक की उपलब्ध रहती हैं। अब सिर्फ प्रतिमाओं को सजाने व आकर्षक रूप देने का कार्य किया जा रहा है। दूसरी तरफ इस पूजन को लेकर जिला क्षेत्र के विभिन्न जगहों पर सरकारी व गैर सरकारी सहित कोचिंग संस्थानों के छात्रों में काफी उत्सुकता देखने को मिल रही है। जो अभी से ही पूजा की भरपूर तैयारी में जुट गए है। ज्ञान हो कि सरस्वती पूजा और वसंत पंचमी हर साल शुक्ल पक्ष की पंचमी को मनाई जाती है। जो इस बार 2024 में, सरस्वती पूजा और वसंत पंचमी 14 फरवरी बुधवार को मनाई जाएगी। जिसका शुभ मुहूर्त 14 फरवरी 2024 बुधवार को सुबह 07 : 10 बजे से 12 बजकर 22 मिनट पर होगी।

स्कूलों में चलाया गया फाइलेरिया जागरूकता अभियान

प्रात : किरण संवाददाता

दुर्गावती। स्थानीय प्रखंड के उत्क्रमित मध्य विद्यालय रोहुआं में गुरुवार को ब्लॉक कोऑर्डिनेटर पीसीआई दुर्गावती धनंजय कुमार के द्वारा फाइलेरिया जागरूकता अभियान चलाया गया। जिसमें बच्चों को फाइलेरिया (हाथी पाँव) के लक्षण, बचाव, उपचार, प्रबंधन के विषय में विस्तृत जानकारी दी गई। उन्होंने बताया कि फाइलेरिया के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए यह कार्यक्रम 10 फरवरी से लेकर 27 फरवरी तक चलेगा। उन्होंने अपने अनुभव साझा करने के साथ ही इस रोग के लक्षण, बचाव, उपचार, प्रबंधन आदि के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी। कोऑर्डिनेटर धनंजय कुमार के द्वारा सभी बच्चों को मच्छरों से बचाव के तरीके बताए तथा फुल आस्तीन के कपड़े पहनने के लिए प्रेरित किया गया। उन्होंने कहा कि घर के आस-पास जलभराव न होने दें। जहां स्वच्छता रहता है वहां मच्छरों का प्रकोप कम होता है।

विचाराधीन कैदी की हुई मौत

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय। छपरा मंडल कारा के हत्या आरोपित विचाराधीन कैदी की मौत छपरा सदर अस्पताल में उपचार के दौरान हो गई। जिसका पोस्टमार्टम मजिस्ट्रेट की नियुक्ति में मेडिकल बोर्ड के द्वारा किया गया। मृत विचाराधीन कैदी सारण जिले के रसूलपुर थाना अंतर्गत चपरैठा गांव निवासी स्वर्गीय रामाश्रय गिरी का 70 वर्षीय पुत्र जयराम गिरी बताया गया है। उनकी मौत कारण सांस की बीमारी बताया जा रहा है। मंडल कारा में तबीयत बिगड़ने पर उन्हें कुछ दिन पहले ही छपरा सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया था, जहां उपचार के दौरान आज मौत हुई है। उनके मौत की सूचना मिलते ही परिवार वाले रोते-पीटते छपरा सदर अस्पताल पहुंचे,जहां उनके द्वारा बताया कि यह गया कि उन्हें सांस की बीमारी थी जिसके कारण मौत हुई है। वहीं जिला प्रशासन के द्वारा इस मामले में उक्त कैदी के पोस्टमार्टम कराए जाने को लेकर मजिस्ट्रेट बहाल किया गया और सदर अस्पताल से मेडिकल बोर्ड की मांग की गई। जिस पर सिविल सर्जन डॉक्टर सागर दुलाल सिन्हा के द्वारा अस्पताल उपाधीक्षक डॉक्टर आर एन तिवारी की देखरेख में मेडिकल बोर्ड का गठन किया। जिसके बाद शव का पोस्टमार्टम मेडिकल बोर्ड द्वारा किए जाने के बाद उसे परिवार वालों को सौंप दिया गया।

उपमुखिया की कुर्सी बच गई

प्रात : किरण संवाददाता

अमनौर। स्थानीय प्रखण्ड स्थित अमनौर कल्याण पंचायत के उप मुखिया के विरुद्ध लगाए गए अविश्वास प्रस्ताव कोरम के अभाव में बिना चर्चा के हुआ खारिज।दो फरवरी को उप मुखिया के बीरुद्ध दस सदस्यीय वार्ड सदस्यों ने पंचायत सचिव को हस्ताक्षर युक्त आवेदन देकर अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा के लिए बैठक बुलाने की मांग किया था।जिस आलोक में गुरुवार को पंचायत सचिव के उपस्थिति में अविश्वास प्रस्ताव पर चर्चा के लिए बैठक बुलाई गई थी।बैठक में 15 वार्ड सदस्यों में मुखिया समेत मात्र छ वार्ड सदस्य ही उपस्थित हुए।उप मुखिया भी बैठक में नही हुए शामिल।पंचायत सचिव राजनेश्वर प्रसाद ने एक तिहाई बहुमत नही होने के कारण कोरम के अभाव में खारिज कर दिया। जिससे उप मुखिया बिकाश कुमार सिंह की कुर्सी बरकरार रह गई।

एनसीपी घड़ी अजीत पवार के मान्यता मिलने पर आशुतोष सिंह ने सासाराम में मिठाई बाटकर खुशियां मनाई

प्रात : किरण संवाददाता

सासाराम। बिहार में राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी पोस्ट ऑफिस सासाराम मिठाई बात कर खुशियां मनाते सासाराम शहर में भ्रमण कर मिठाइयां लोगों को खिलाया गया और खुशियां मनाया गया,जिसका नेतृत्व आशुतोष सिंह जिला प्रभारी रोहतास सह मुख्य प्रवक्ता बिहार प्रदेश ने किया इस मौके पर राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के सभी पदाधिकारी कार्यकर्ता शहर में भ्रमण करते हुए,खुशियां मनाई और जिला कार्यालय सासाराम से चलकर पोस्ट ऑफिस चौराहा पर बोलते हुए आशुतोष सिंह मुख्य प्रवक्ता बिहार प्रदेश सह उपाध्यक्ष प्रदेश उपाध्यक्ष जिला प्रभारी रोहतास आशुतोष सिंह ने कहा कि राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी अजीत पवार राष्ट्रीय अध्यक्ष सह उपमुख्यमंत्री महाराष्ट्र को ही असली राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष माने हैं और भारत सरकार चुनाव आयोग ने अजित पवार को ही घड़ी सिंबल और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी की मान्यता दिए हैं इस खुशी में राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के रोहतास जिला कार्यकारी अध्यक्ष रामबाबू के संचालन में मुख्य अतिथि सह जिला प्रभारी रोहतास आशुतोष सिंह मुख्य प्रवक्ता बिहार प्रदेश के नेतृत्व में सासाराम बिहार में चारों तरफ खुशियां मनाते राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के लोग इस मौके पर मुख्य रूप से आए आशुतोष सिंह मुख्य प्रवक्ता बिहार प्रदेश उपाध्यक्ष,कार्यकारी रोहतास जिला अध्यक्ष रामबाबू,महिला जिला अध्यक्ष संगीता देवी, अल्पसंख्यक जिला अध्यक्ष आमिर एकबाल वालीजी,भूतपूर्व सैनिक जिला अध्यक्ष परशुराम सिंह,किसान जिला अध्यक्ष संजय दुबे,खुशबु कुमारी,अमरजित गुप्ता,विशेश्वर प्रसाद गुप्ता,सिकंदर शर्मा,संतोष राय,पिंटू राय,दिपक कुमार सहित सैकड़ो लोग इस कार्यक्रम में शामिल हुए।

सतुआ पंचायत के पैक्स अध्यक्ष के आसामयिक मौत पर मचा कोहराम

बनियापूर (सारण) प्रखंड के सतुआ पंचायत के वर्तमान पैक्स अध्यक्ष के असामयिक निधन पर पंचायत सहित स्वजनों मे कोहराम मच गया है। बता दे कि सतुआ पंचायत के वर्तमान पैक्स अध्यक्ष जगलाल राय के 45 वर्षीय रजनीश यादव का पटना के पारस अस्पताल मे हुई मौत की सूचना पाते घटना से परिवार मे कोहराम मच गया है।बताया गया है कि प्रखंड के आनंदपुर गाव निवासी पैक्स अध्यक्ष रजनीश यादव 26 जनवरी को बनियापुर गणतंत्र दिवस समारोह मे शामिल होने आए थे जहा अचानक सीने मे दर्द शुरू हो गया,जहा त्वरित स्थानीय चिकित्स्कों से इलाज के बाद उन्हे पटना के निजी अस्पताल मे इलाज चल रहा था,जहा इलाज के क्रम मे उनकी मौत हो गयी।जिससे परिजनों साहित पूरे पंचायत मे शोक की लहर दौड़ गयी है।

संक्षिप्त खबरें

जिलाध्यक्ष ने लघु उद्यमी योजना में आवेदन के लिए मुख्यमंत्री दी बधाई

गया। बिहार लघु उद्यमी योजना में आवेदन के लिए मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने पोर्टल की सेवा का शुभारंभ कर दिया गया है। अति पिछड़ा प्रकोष्ठ जनता दल यू के जिला अध्यक्ष विनोद कुमार ने आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के उत्थान के लिए मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को बधाई दिया एवं आभार प्रकट की है। कुमार ने बताया कि 20 फरवरी तक ऑनलाइन आवेदन किया जा सकता है। 18 वर्ष से 50 वर्ष के लोग इस योजना का लाभ ले सकते हैं। इस योजना का लाभ लेने वाले व्यक्ति को मुख्यमंत्री उद्यमी योजना का लाभ नहीं मिल सकता है। कुमार ने बताया कि जिन परिवारों का मासिक आय 6000 से कम है वही आवेदन कर सकते हैं। इस योजना में ऑनलाइन आवेदन करने के लिए संगठन के द्वारा प्रचार प्रसार किया जा रहा है।

भारत रत्न पूर्व राष्ट्रपति डॉ जाकिर हुसैन की मनाई गई जयंती

गया। जिला कांग्रेस कमिटी के कार्यालय में भारत रत्न पूर्व राष्ट्रपति डॉ जाकिर हुसैन की जयंती मनाई गई है इस अवसर पर उन्हें पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि दी गई और उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए राष्ट्र निर्माण में उनके योगदान पर चर्चा की गई है इस कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला कांग्रेस कमिटी के अध्यक्ष डॉ गगन कुमार मिश्रा ने की साथ में जिला उपाध्यक्ष रंजीत सिंह, मो खैरुद्दीन, राजीव सिंह उर्फ लाबी सिंह, धीरज वर्मा, शिवनाथ प्रसाद, रामजी प्रसाद मौजूद रहे हैं सभी ने पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि अर्पित की है।

इंटरमीडिएट परीक्षा के कारण जनता दरबार स्थगित

गया प्रत्येक शुक्रवार को आयोजित होने वाले जनता दरबार, बिहार विद्यालय परीक्षा समिति पटना द्वारा आयोजित इंटरमीडिएट परीक्षा आयोजित रहने के कारण जिले के सभी वरीय अधिकारियों को उक्त परीक्षा के सफल संचालन हेतु विधि व्यवस्था संधारण हेतु प्रतिनियुक्त रखा गया है। जिसे लेकर 09 फरवरी शुक्रवार को जिला पदाधिकारी का जनता दरबार को स्थगित रखा गया है। सभी को सूचित किया जाता है कि आगामी शुक्रवार अर्थात 09 फरवरी को जनता दरबार में न आवे।

पप्पू वर्मा ने पीड़ित परिवार से मिलकर दिया सांत्वना

करपी, अरवल। स्थानीय प्रखंड क्षेत्र के कोहरौउल गाँव निवासी ओमप्रकाश सिंह की 55 वर्षीय पत्नी की अचानक हार्ट अटैक के कारण निधन हो गई, मृत्यु होने की सूचना मिलते ही शोकाकुल परिवार से मिले राष्ट्रीय लोक जनता दल के नेता पप्पू वर्मा, इस दौरान उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना किया कि दिगवंत आत्मा को शांति प्रदान करें, उन्होंने कहा कि पीड़ित परिवार के साथ हमारी संवेदना है ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दे, इस दौरान कमलेश कुमार सिंह रामप्रवेश यादव राम ब्रिज पासवान रमेश प्रसाद चंद्रभानु सिंह रवींद्र वर्मा रंजन कुमार लक्ष्मी सिंह नागेंद्र सिंह ने शोकाकुल परिवार से मिलकर शोक प्रकट किया

एक सप्ताह से अफडेविट कार्य प्रभावित

औरंगाबाद। जिला विधिज्ञ संघ के अधिवक्ता सतीश कुमार स्नेही ने बताया कि कुछ कार्यपालक पदाधिकारीयों के तबादले से सदर औरंगाबाद के कार्यपालक पदाधिकारी से प्रतिदिन होनेवाले दर्जनों अफडेविट कार्य फरवरी के शुरूवात से ही बंद हैं जिसके कारण सैकड़ों लोग अफडेविट के लिए आते हैं और हताश और निराश लौट जाते हैं आपको मालूम कि बहुत से अफडेविट शिघ्र सम्बंधित विभाग, स्कूल, कोलेज, बैंक, सार्वजनिक या निजी कम्पनियों में जामा करने रहते हैं, सक्षमता परीक्षा में भी अफडेविट देना है, जिसके कारण काफी लोग परेशान हैं उन्होंने ने आगे बताया कि नये कार्यपालक अधिकारी की सोमवार से आने की संभावना है जिससे मंगलवार से अफडेविट के समस्या में लगाम लगेगी।

महिला समेत तीन अभियुक्त दोषी करार

औरंगाबाद। व्यवहार न्यायालय औरंगाबाद में एडिजे सह स्पेशल पोक्सो कोर्ट ने कासमा थाना कांड संख्या 77/20 में निर्णय पर सुनवाई करते हुए एक महिला समेत तीन अभियुक्तों को दोषी ठहराया है, स्पेशल पीपी शिवलाल मेहता ने बताया कि अभियुक्त रोहित कुमार ग्राम लोहरा, सोनु कुमार ग्राम लोहरा, और मानमति देवी ग्राम चंद्रोली, थाना कासमा को आज भादंवि के विभिन्न धाराओं और पोक्सो एक्ट में दोषी ठहराया गया है और सजा के बिन्दु पर सुनवाई के तिथि -15/02/25 निर्धारित किया गया है अधिवक्ता सतीश कुमार स्नेही ने बताया कि अभियुक्त सोनू कुमार काराधीन है जबकि रोहित कुमार और मानमति देवी के बंधपत्र विखंडित कर आज जेल भेज दिया गया है उन्होंने आगे बताया कि प्राथमिकी सूचक पीड़िता के पिता ने 13/09/20 को बताया था कि शादी और गलत काम के नियत से तीनों अभियुक्तों ने 08/09/20 को कासमा बाजार से अपहरण कर लिया था।

जिला पंचायती राज पदाधिकारियों का एमडीए पर हुआ उन्मुखीकरण

पंचायत प्रतिनिधि एमडीए लॉन्च में खुद दवा खाकर अन्य को दवा सेवन के लिए करेंगे प्रेरित

प्रातः किरण संवाददाता

पटना। फाइलेरिया एक गंभीर रोग है। विश्व भर में विकलांगता का यह दूसरा बड़ा कारण है। इस लिहाज से फाइलेरिया की रोकथाम बहुत जरुरी है। एमडीए यानी सर्वजन दवा सेवन से ही केवल फाइलेरिया को रोका जा सकता है। राज्य भर में 10 फरवरी से 24 जिलों में एमडीए अभियान चलाया जाएगा, जिसमें 10 जिलों में तीन तरह एवं शेष 14 जिलों में दो तरह की फाइलेरिया रोधी दवाएं घर-घर जाकर निःशुल्क खिलाई जाएगी। उक्त बातें अपर निदेशक सह फाइलेरिया के राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी डॉ। परमेश्वर प्रसाद ने जिला पंचायती राज पदाधिकारियों का एमडीए पर हुए उन्मुखीकरण कार्यशाला के दौरान कही।

डॉ। प्रसाद ने कहा कि 24 जिलों की 7.57 करोड़ की आबादी में लगभग 6 करोड़ योग्य लाभार्थियों को दवा खिलाने का लक्ष्य रखा गया है। इतनी बड़ी आबादी को दवा खिलाने के लिए जिला एवं प्रखंड पंचायती राज पदाधिकारियों की भूमिका महत्वपूर्ण साबित होगी। जिसमें समुदाय को दवा सेवन के लिए जागरूक करने के साथ एमडीए पर फैली भ्रांतियों को दूर करने में उनकी भूमिका कारगर साबित होगी।

राज्य के सभी जिले फाइलेरिया से प्रभावित: विश्व स्वास्थ्य संगठन के राज्य एनटीडी कोऑर्डिनेटर डॉ. राजेश पांडेय ने कहा कि फाइलेरिया नेग्लेक्टेड ट्रॉपिकल डिजीज में एक प्रमुख रोग है। विश्व के 72 देशों में 85.19 करोड़ आबादी फाइलेरिया के खतरे में हैं। वहीं, राज्य के सभी 38 जिले इससे प्रभावित है। इससे विश्व भर में लगभग 200 करोड़ रुपये की आर्थिक क्षति होती है। डॉ। पांडेय ने इस दौरान एनबीएस की भूमिका, एमडीए कार्य-योजना सहित अन्य तकनीकी पक्ष पर जानकारी दी। उन्होंने कहा कि एमडीए राउंड में 17 दिनों तक दवा खिलाई जाएगी, जिसमें 3 दिन बूथ लगाकर एवं शेष 14 दिन घर-घर पहुँचकर दवा खिलाई जाएगी।

डॉ. कैलाश कुमार, सीनियर रीजनल डायरेक्टर, रीजनल ऑफिस, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, ने भी वर्ष 2027 तक फाइलेरिया उन्मूलन के लक्ष्य हासिल करने की बात कही। उन्होंने कहा कि इसके लिए एमडीए राउंड में सभी लोगों को दवा खिलाना जरुरी है।

एमडीए में पंचायती राज प्रतिनिधियों की अहम भूमिका: पिरामल फाउंडेशन के विकास सिन्हा ने एमडीए में पंचायती राज विभाग की भूमिका पर विस्तार से चर्चा किया। उन्होंने कहा कि एमडीए में अधिकतम लोगों को दवा सेवन सुनिश्चित कराने के लिए पंचायती राज पदाधिकारियों एवं प्रतिनिधियों की सबसे अहम भूमिका है।

उन्होंने जिला पंचायती राज पदाधिकारी द्वारा प्रखंड पंचायती राज पदाधिकारी का एमडीए पर उन्मुखीकरण, जिला स्तर पर एमडीए पर होने वाले डीसीसी बैठक में शामिल होना एवं प्रखंड स्तर पर प्रखंड पंचायती राज पदाधिकारी द्वारा सभी मुखिया का फाइलेरिया और एमडीए कार्यक्रम पर उन्मुखीकरण करने पर जोर दिया। बिल एंड मिलिंडा गेट्स फाउंडेशन के डॉ. अमोल पाटिल ने कहा कि एमडीए की सफलता में सामुदायिक सहभागिता सबसे जरुरी है। इसके लिए समुदाय स्तर पर पंचायती राज पदाधिकारी एवं प्रतिनिधि एक मजबूत कड़ी के रूप में कार्य कर सकता है। इस दौरान पिरामल फाउंडेशन के बासब रूज ने पंचायती द्वारा प्राप्त सहयोग पर विस्तार से चर्चा की। वहीं, पिरामल फाउंडेशन के कुमार आशुतोष ने पंचायती राज विभाग की एमडीए पर भूमिका एवं उनसे अपेक्षाओं पर चर्चा भी किया। साथ ही सीफार एवं पीसीआई के राज्य कार्यक्रम प्रबंधकों ने एमडीए पर उनकी संस्था द्वारा किए जा रहे सहयोग पर चर्चा की।

लघु उद्यमी योजना से गरीब परिवार को मिलेगा रोजगार : पटवा

प्रातः किरण संवाददाता

गया। बिहार लघु उद्यमी योजना मे आवेदन के लिए मुख्यमंत्री नीतीश कुमार द्वारा पोर्टल की सेवा का शुभारंभ भारंभ करने पर जदयू व्यवसायिक व उद्योग प्रकोष्ठ जिला अध्यक्ष प्रकाश राम पटवा ने आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के उत्थान के लिए मुख्य मंत्री नीतीश कुमार को बधाई दी व आभार प्रकट किया है।

पटवा ने कहा बिहार लघु उद्यमी योजना के अंतर्गत 2 लाख रूपए तक की राशि सभी वर्ग के लोगों को दी जाएगी इससे राज्य के सभी वर्गों के गरीब परिवारों का आर्थिक विकास होगा तथा उनकी आय बढ़ेगी और लोगों को रोजगार मिल सकेगा। जाति आधारित गणना में सभी वर्गो को मिलाकर बिहार में लगभग 94 लाख परिवार आर्थिक रूप से गरीब पाए गए, जिनके कोई रोजगार नहीं है इनका अब विकाश होगा। मुख्य मंत्री को बधाई व आभार व्यक्त करने वाले अन्य प्रदेश सचिव नीरज वर्मा, लालजी प्रसाद, संजीत अधिवक्ता, विमल रंजन, मनोज कुटियार, संजय सिंह, तनोज कानू, भारती प्रियदर्शी, चंद्रभानु गुप्ता, मुना गुप्ता, केदार साह, राम कु गुप्ता, अलखदेव गिरी, विकाश विकान्त, उज्जवल श्रीवास्तव, राकेश रौनियार, पंकज कु०, प्रियंका कुमारी, इत्यादि।

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी बिहार की अध्यक्षता में हुई बैठक

प्रातः किरण संवाददाता

गया। मुख्य सचिव बिहार एवं डीजीपी बिहार एवं मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी बिहार की अध्यक्षता में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से आगामी लोकसभा आम निर्वाचन 2024 के अवसर पर सभी जिलों में निर्वाचन से संबंधित किया जा रहे कार्यो के संबंध में बैठक कर तैयारी के संबंध में जानकारी ली गई है। वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग में सभी प्रमंडलीय आयुक्त, सभी आईजी, सभी जिला पदाधिकारी एवं सभी वरीय पुलिस अधीक्षक, अधीक्षक उपस्थित थे। वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने सभी जिला पदाधिकारी को निर्देश दिया कि महिला वोटर एवं 18 -19 आयु वर्ग वाले लोगों को अधिक से अधिक मतदाता सूची में जोड़ने हेतु उन्हें जागरूक करावे आगे कहा कि हाल के दिनों में जितने भी निर्वाचन से सीधे जुड़े हुए पदाधिकारी ट्रांसफर हुए हैं वह अभिलंब अपने नव पदस्थापित कार्यालय में योगदान करना सुनिश्चित करें जिससे चुनाव का कार्य बाधित नहीं हो सके। सभी अनुमंडल कार्यालय में ईवीएम डेमोंसट्रेशन लगाया गया है। जिससे आम जनता मतदान के पूरे प्रक्रिया को अच्छे तरीके से समझ सके कि ईवीएम वीवीपीएटी बीयू सीयू से कैसे अपने मत का प्रयोग कर सकते हैं। इसका निरीक्षण नियमित तौर पर लगातार जिला पदाधिकारी एवं वरीय पुलिस अधीक्षक स्वयं करते रहेंगे। ईवीएम जागरूकता वाहन सभी बूथों पर चलाया जा रहा है, इसका उद्देश्य यह है कि आम जनता को मतदान करने हेतु जागरूक बनाना है इसकी लगातार समीक्षा करने का निर्देश जिला पदाधिकारी को दिया गया है। सभी जिलों को कम्युनिकेशन प्लान तैयार करने का निर्देश दिया गया है। नए वोटर्स के लिए एपिक वितरण का समय हो जाए इसे सभी जिला पदाधिकारी सुनिश्चित करावे एपिक वितरण पोस्ट ऑफिस के माध्यम से किया जा रहा है कितना एपिक डिस्पैच हुआ है कितना एपिक पेंडिंग है इसकी जांच हर हाल में करवायें और एपिक वितरण में कोई भी लापरवाही नहीं हो इसे सुनिश्चित करवाये एवं चुनाव कार्य में कितने छोटे वाहन, कितना संख्या में मिनी बस एवं कितनी संख्या में बस की आवश्यकता पड़ेगी उसका आकलन सभी जिला पदाधिकारी कर लें। बूथ तक पहुंच हेतु पहुंच पथ एवं ईवीएम ले जाने एवं लाने वाले रूट मैप के अनुसार वाले सड़कों को संबंधित विभाग अपने सड़कों को अभिलंब मरम्मत करवा ले ताकि चुनाव के दौरान ईवीएम विविपैट ले जाने एवं लाने में कहीं कोई समस्या नहीं हो। खराब सड़कों को अभिलंब मरम्मत करवाना सुनिश्चित करें।

धन्य थे वे महापुरुष जिन्होंने महाविद्यालय के स्थापना की परिकल्पना की : प्राचार्य

प्रातः किरण संवाददाता

गया। 81वें स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर महाविद्यालय स्थित मुंशी प्रेमचंद सभागार में समारोह का आयोजन किया गयाहै। जिसका विधिवत शुभारंभ मगध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो शशि प्रताप शाही एवं अन्य मंचासिन अतिथियों के द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया है। अपने स्वागत संबोधन में प्रधानाचार्य डॉ सतीश सिंह चंद्र ने कहा कि आज का दिन हम सभी शिक्षक शिक्षकेत्तर कर्मी, एवं छात्र-छात्राओं के लिए महाविद्यालय के उत्तरोत्तर विकास हेतु संकल्प लेने का दिन है। अपने संबोधन में डॉ कन्हैया प्रसाद सिंह, सेवानिवृत प्राचार्य, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय एवं गया कॉलेज के संस्थापक सचिव धनेश प्रसाद के सुपुत्र ने कहा कि संस्थान सर्वोपरि है, संस्थान से हम सबों का अस्तित्व जुड़ा हुआ है। संस्थान के उत्थान से ही हम सबों का व्यक्तिगत उत्थान भी संभव है। प्रोफेसर अरविंद कुमार सिंह, अध्यक्ष, पूर्ववर्ती छात्र एवं भूतपूर्व विभागाध्यक्ष वनस्पति विज्ञान, गया कॉलेज, गया ने कहा कि जब मैं यहां का विद्यार्थी था और आज के परिदृष्य में जमीन आसमान का अंतर है।

पूर्ववर्ती छात्र संघ सदैव महाविद्यालय के विकास में सेवाएं देने को हेतु तत्पर हैं। अपने अध्यक्षिय भाषण में कुलपति, प्रोफेसर शशि प्रताप शाही ने कहा कि गया कॉलेज सूबे के बड़े कॉलेजो में शुमार है संसाधनों की भी यहां पर प्रचुरता है। 81 वर्षो के इस सफर में महाविद्यालय की विकास यात्रा में कई महत्वपूर्ण पड़ाव आए हैं। इस महाविद्यालय के स्थापना और विकास में जिन लोगों ने भी योगदान दिया है मैं उनको हृदय से नमन करता हूं। धनेश बाबु, गुरू शरणदास भदानी, गोवर्धन दास डालमिया एवं गया कॉलेज के भूतपूर्व प्राचार्य प्रोफेसर शिवनाथ सिंह के योगदान की भी उन्होंने विस्तृत चर्चा की गई है। उन्होंने कहा कि धन्य थे वे महापुरुष जिन्होंने महाविद्यालय के स्थापना की परिकल्पना को साकार किया गया है। उस समय शैक्षणिक संस्थान ज्ञान अर्जन के लिए खोले जाते थे और आज जीविकोपार्जन के लिए खोले जा रहे हैं।

गया महाविद्यालय के ग्रेड पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि यह अत्यंत दुखद है कि जिस महाविद्यालय को दो बार नैक से ए ग्रेड हासिल हुआ हो उसे किन परिस्थितियों में बी ग्रेड मिला है। परंतु वर्तमान प्राचार्य, शिक्षक शिक्षाकेत्तर कर्मचारी एवं छात्रों से अपील करता हूं कि वे सभी महाविद्यालय को नैक से एक ग्रेड दिलवाने के लिए हर संभव प्रयास करें। इस कार्यक्रम का संचालन डॉ रूनू रवि, सहायक प्राध्यापक अंग्रेजी विभाग एवं डॉ धनंजय धीरज विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग के द्वारा किया गया है। धन्यवाद ज्ञापन महाविद्यालय के शिक्षक संघ के अध्यक्ष डॉ रविंद्र कुमार पाठक के द्वारा किया गया है। इस अवसर पर एनसीसी के वैसे कैंडेट जिन्होंने दिल्ली में कर्तव्य पथ पर गणतंत्र दिवस के अवसर पर परेड में महाविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया उनमें प्रियंका कुमारी प्रीति कुमारी, वैष्णवी कुमारी, ईशा कुमारी, सुंदरम कुमार, युवराज कुमार, विवेक राज, अमन कुमार और सतीश कुमार को सम्मानित किया गया है। महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियां भी दी गई जिसका संचालन डॉक्टर सोनू अन्नपूर्णा के द्वारा किया गया है। इस मौके पर कुलानुशासक मगध विश्वविद्यालय, बोधगया डॉ उपेंद्र कुमार, सीनेट सदस्य मगध विश्वविद्यालय, डॉ रूपेश कुमार, उप प्राचार्य डॉ विनोद कुमार सिंह सहित भारी संख्या में शिक्षक एवं शिक्षकेत्तर कर्मचारी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे हैं।

11 फरवरी को होगा मानवेत्तर प्राणी जगत पुस्तक का लोकार्पण

प्रातः किरण संवाददाता

औरंगाबाद। जिला मुख्यालय औरंगाबाद की महत्वपूर्ण साहित्यिक संस्था जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन औरंगाबाद के तत्वावधान में प्रकाशित कृतियों की श्रृंखला में 32 वीं कड़ी के रूप में महान साहित्यकार स्वर्गीय महेंद्र पांडेय रचित मानवेत्तर प्राणी जगत का लोकार्पण 11 फरवरी को समाहरणालय के बगल में अवस्थित श्री कृष्ण स्मृति भवन के प्रांगण में किया जाएगा। इस आशय की जानकारी देते हुए संस्था के महामंत्री धनंजय जयपुरी एवं उपाध्यक्ष सह मीडिया प्रभारी सुरेश विद्यार्थी ने बताया कि जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन वर्तमान परिवेश में औरंगाबाद जिलों में दर्जनों कृतियों को प्रकाशित कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उसी, कड़ी में यह कृति भी है। संस्था के अध्यक्ष डॉ सिद्धेश्वर प्रसाद सिंह के नेतृत्व में लोकार्पण समारोह का आयोजन किया जाएगा एवं मुख्य अतिथि के एसपी जैन सासाराम के प्रोफेसर गुरचरण सिंह की गरिमामई उपस्थिति होगी। जबकि विशिष्ट स्थिति के रूप में एसपी जैन कॉलेज सासाराम के हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर राजेंद्र प्रसाद सिंह, राष्ट्रीय स्तर की साहित्यिक संस्था सामयिक परिवेश के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ ममता मेहरोत्रा, पूर्व मध्य रेलवे के पूर्व राजभाषा अधिकारी राजमणि मिश्र शिरकत करेंगे एवं संचालक के रूप में प्रसिद्ध अधिवक्ता एवं चर्चित पत्रकार प्रेमेंद्र मिश्रा अपनी भूमिका का निर्वहन करेंगे। स्वागतकर्ता राधेश्याम पांडेय, श्रीराम पांडेय, सत्यनारायण पांडेय ने बताया कि डॉ महेंद्र पांडेय औरंगाबाद जिले के चर्चित कर्मकांडी के रूप में जाने जाते थे साथ ही साथ भागवत कथा वाचक के रूप में औरंगाबाद जिला ही नहीं बल्कि बिहार प्रांत के बाहर भी भागवत कथा का प्रवचन करने जाया करते थे।

मधुकर के दूसरी पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन

प्रातः किरण संवाददाता

औरंगाबाद। जिला मुख्यालय औरंगाबाद की महत्वपूर्ण साहित्यिक संस्था जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन औरंगाबाद द्वारा महान साहित्यकार, संस्था के पूर्व महामंत्री मिथिलेश मधुकर जी के दूसरी पुण्यतिथि श्रद्धांजलि सभा के रूप में मनाई गई। संस्था के अध्यक्ष सच्चिदानंद सिन्हा महाविद्यालय के पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ सिद्धेश्वर प्रसाद सिंह के नेतृत्व में उपस्थित लोगों ने उनके सम्मान में 2 मिनट का मौन रखा एवं उन्हें अश्रुपूरित नेत्रों श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि मिथिलेश मधुकर जी औरंगाबाद जिले के हिंदी साहित्य के स्तंभ के रूप में जाने जाते हैं। जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन को उन्होंने आगे बढ़ाने का कार्य किया था। वे नवोदित लेखकों को लेखन प्रक्रिया में मदद किया करते थे। औरंगाबाद में शब्द के चितेरे पत्रिका को निकालने का श्रेय मधुकर जी को ही जाता है। मधुकर जी ने जो भी लिखा उसकी जीवन्तता आंतरिक गहराइयों में मिलती है। उन्हें औरंगाबाद के दिनकर नाम से जाना जाता है। उनकी कालजयी कृति स्वयमेव एवं बोधिसत्व औरंगाबाद जिले के साहित्यिक उपादान की महत्वपूर्ण कृति के रूप में अंकित है। बोधिसत्व की चर्चा विदेश तक भी हो चुकी है। संस्था के वर्तमान महामंत्री धनंजय जयपुरी, उपाध्यक्ष डॉ सुरेंद्र प्रसाद मिश्र, संरक्षक डॉ शिवपूजन सिंह, समाजसेवी लालदेव प्रसाद हास्य व्यंग के हस्त मुक्त कवि विनय मामूली बुद्धि, आमोद कुमार सिंह ने भी उन्हें श्रद्धांजलि दी एवं कहा कि मधुकर जी का साहित्य उन्हें अमरत्व प्रदान कर चुका है।

14 फरवरी को होगा बसंत पंचमी मेला का आयोजन

औरंगाबाद। सदर प्रखंड स्थित ग्राम जम्होर में थाना के बगल में अवस्थित सिद्धनाथ बाबा मंदिर के प्रांगण में 14 फरवरी को ऋतुराज बसंत के आगमन के मौके पर बसंत पंचमी मेला की शुरूआत सनातनी परंपरा के माहौल में होगी। जम्होर विकास मंच के संयोजक सुरेश विद्यार्थी ने बताया कि बसंत पंचमी पूजा के मौके पर सिद्धनाथ बाबा मंदिर के प्रांगण में सैकड़ो वर्षो से विशाल मेला का आयोजन होते आ रहा है। जम्होर पंचायत के अगल-बगल स्थित सैकड़ो गांव से लोग सिद्धनाथ बाबा के दरबार में हाजिरी लगाने जरूर आते हैं। हजारों की भीड़ होती है। साथ ही साथ औरंगाबाद जिला के बाहर के लोग भी उस दिन आकर पूजा पाठ करते हैं। सिद्धनाथ बाबा का मंदिर सैकड़ो वर्ष प्राचीन है। इस मंदिर से लोगों की आस्था धार्मिक रूप से जुड़ी है। सिद्धनाथ बाबा के दरबार से आज तक कोई खाली हाथ नहीं लौटा है। भक्त जो भी मंशा लेकर आते हैं उनकी मंशा अवश्य पूरी होती है। इस स्थल पर एक दशक पूर्व तक पशुओं की विशाल मेला भी लगती थी जो आज तकनीकी कारणों से नहीं लगती है। इसका कारण बाजारवाद का बढ़ावा एवं ध्रुवीकरण के दौर में आमजन का उपभोक्तावादी संस्कृति की ओर झुकाव होना बताया जाता है।

सीयूएसबी के प्रो बोनो क्लब द्वारा टेकारी के उप-प्रभागीय अस्पताल में कैंसर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

प्रातः किरण संवाददाता

गया। दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय सीयूएसबी के स्कूल ऑफ लॉ एंड गवर्नेंस में संचालित प्रो बोनो क्लब के सदस्य छात्रों ने टेकारी के उप-प्रभागीय अस्पताल में कैंसर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया है। जन सम्पर्क पदाधिकारी पीआरओ ने बताया कि जागरूकता अभियान प्रो बोनो क्लब के नोडल अधिकारी डॉ. देव नारायण सिंह के नेतृत्व में आयोजित किया गया है। इस कार्यक्रम में अस्पताल के डॉक्टर इनायतुल्लाह, टेकारी के उप-प्रभागीय अस्पताल के इंचार्ज डॉ. विश्वमूर्ति मिश्रा के साथ अस्पताल के अन्य कर्मी शामिल हुए हैं इस कार्यक्रम की शुरूआत में डॉ. देव नारायण सिंह ने समारोह स्थल पर मौजूद लोगों को प्रो बोनो क्लब के उद्देश्यों एवं क्रियाकलापों के बारे में बताया है।

इस जागरूकता अभियान में छात्रों ने अस्पताल में कैंसर के लक्षण, बचाव के उपाय और उपचार के बारे में बातचीत की है। आगे कैंसर जागरूकता को लेकर अस्मिता और स्वाति ने लोगों को विस्तार से बताया है इस कार्यक्रम में प्रो बोनो क्लब के छात्र गौतम ने स्वास्थ्य ही धन है पर भाषण दिया तो वहीं साफ-सफाई को लेकर मिनी और आस्था ने लोगों को बताया है। प्रो बोनो क्लब के छात्रों ने नुक्कड़ नाटक की मदद से कैंसर जागरूकता से सम्बंधित विभिन्न प्रस्तावनाएं प्रस्तुत की है।

नुक्कड़ नाटक क्लब के छात्र दीपांजलि के निर्देशन में हुआ जिसमें मानवी, रिया, स्मृति, अंजलि, प्रियंका, निम्मी, मुस्कान, आस्था, वैष्णवी, रूपा, बाबुल, हिमांशु, ममतेश और प्रकृति शामिल थे। डॉ. विश्वमूर्ति मिश्रा ने समापन भाषण में कहा कि मेडिकल लापरवाही के मामले पर वक्तव्यः स्वास्थ्य सेवाओं के गुणवत्ता में सुधार की जरूरत है। उन्होंने कहा कि यह कार्यक्रम गाँव की स्वास्थ्य सेवाओं में जागरूकता बढ़ाने और कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों के खिलाफ लड़ाई में काफी उपयोगी साबित हो सकता है। इस कार्यक्रम के माध्यम प्रो बोनो क्लब के सदस्य छात्रों ने सामाजिक संबंधों को मजबूत करने के लिए एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया गया है।

डीएम ने किया मंडल कारा औरंगाबाद का निरीक्षण

औरंगाबाद। जिला पदाधिकारी द्वारा मंडल कारा औरंगाबाद का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान कारा में संधारित विभिन्न पंजी, लेखा पंजी, भवन की स्थिति, सुरक्षा स्थिति, जलापूर्ति, बंदी कल्याण एवं प्रशिक्षण आदि का जायजा लिया गया। जिला पदाधिकारी द्वारा पंजीयों का संधारण हेतु आवश्यक निर्देश दिये गये। कोषागार पदाधिकारी, औरंगाबाद द्वारा बताया गया कि कैश बुक को अद्यतन किए जाने की आवश्यकता है एवं स्टॉक रजिस्टर में ओवरराइटिंग नहीं किया जाना चाहिए। उन्होंने यह भी बताया कि डेड स्टाक पंजी संधारित नहीं है। इस पर जिला पदाधिकारी ने सभी पंजीयों को संधारित करने का निर्देश दिया। कारा अधीक्षक द्वारा बताया गया की जन शिक्षा निदेशालय से दो शिक्षक कारा में शिक्षण कार्यक्रम चलने हेतु आते हैं। कारा में एक पुस्तकालय भी है जिसका इस्तेमाल बंदियों द्वारा किया जाता है। कारा में विभिन्न खेलों का भी आयोजन किया जाता है जिसमें बंदीगण बढ़ चढ़कर भाग लेते हैं। अनुमंडल पदाधिकारी, औरंगाबाद, अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी औरंगाबाद एवं सदर भूमि सुधार उपसमाहर्ता ने कारा शस्त्रागार एवं कारा में सुरक्षा व्यवस्था का भी जायजा लिया। अनुमंडल पदाधिकारी औरंगाबाद द्वारा शस्त्रागार भवन को मानक के अनुरूप नवीकृत करने हेतु आवश्यक कदम उठाए जाने का निर्देश दिया गया। उन्होंने कारा में सुरक्षा व्यवस्था और सुदृढ़ बनाने हेतु पैदल गस्ती एवं सीसीटीवी कवरेज बढ़ाने का सुझाव दिया। उन्होंने कारा में फायर ऑडिट जल्द से जल्द कर लेने का भी निर्देश दिया। अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी औरंगाबाद में जेल के दीवारों के बीच में भी टावर वॉच बनाने का सुझाव दिया।

बैंक में पैसा जमा करने जा रही महिला के थैला से काटा 10 हजार रुपये

शेरघाटी। शहर के गोला बाजार रोड स्थित पंजाब नेशनल बैंक में पैसा जमा करने आ रही महिला से अज्ञात लोगों ने उसके झोले में रखे। 10 हजार रुपये ब्लेड मार कर काट लिया। उक्त घटना के बाद पीड़ित महिला ने इसके शिकायत पंजाब नेशनल बैंक के मैनेजर से जब सीसीटीवी कैमरे का पड़ताल किया तो उसमें किसी प्रकार का कुछ ऐसा दिखाई नहीं दिया। वहीं मैनेजर द्वारा स्थानीय थाने में रिपोर्ट दर्ज करवाने के लिए कही गई है। जानकारी के मुताबिक महिला किसी गांव के रहने वाली है।

पथ प्रदर्शक द्वारा कुटुम्बा के डुमरी में नेत्र जांच शिविर आयोजित

औरंगाबाद। पीड़ित मानवता की सेवा में समर्पित औरंगाबाद की स्वयं सेवी संस्था पथ प्रदर्शक द्वारा कुटुम्बा प्रखंड के सुदूरवर्ती क्षेत्र में जनकल्याण की भावना से निःशुल्क नेत्र जांच शिविर का आयोजन किया गया। सुप्रीम पब्लिक स्कूल डुमरी के सहयोग से पथ प्रदर्शक द्वारा आयोजित निःशुल्क नेत्र जांच शिविर में नारायण मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल, जमुहार के मेडिकल टीम द्वारा 98 मरीजों के आंख की जांच की गई, जिसमे 23 महिला पुरुष मरीजों में मोतियाबिंद ऑपरेशन के लिए तैयार पाया गया। मोतियाबिंद ऑपरेशन के लिए सभी मरीजों को 12 फरवरी को नारायण मेडिकल कॉलेज एवम अस्पताल जमुहार भेज कर निःशुल्क ऑपरेशन करा कर लेंस लगाया जाएगा। निःशुल्क नेत्र जांच शिविर का उद्घाटन एनएमसीएच की डॉ रश्मिनी रश्मि, पथ प्रदर्शक के सचिव बमेंद्र कुमार सिंह एवम सुप्रीम पब्लिक स्कूल के संचालक रंजन कुमार द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर एवम फीता काट कर किया गया। पथ प्रदर्शक के सचिव रक्तसेवक बमेंद्र कुमार सिंह ने बताया कि जन कल्याणकारी कार्यो के लिए हमारी संस्था हमेशा तत्पर रहती है और नारायण मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल जमुहार का सहयोग भी हमेशा मिलता रहा है। बमेंद्र ने कहा कि सुदूर ग्रामीण क्षेत्र के बुजुर्ग अपनी आंखों का इलाज कराने शहर और अस्पताल नही पहुंच पाते इसलिए ऐसे क्षेत्रों में निःशुल्क नेत्र जांच शिविर का आयोजन किया गया है। जरूरत के अनुसार मरीजों को आई ड्रॉप भी दिया गया। आयुष्मान भारत योजना के लाभार्थियों को भी बमेंद्र ने जागरूक कर योजना का लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया।

नेशनल हाइवे दो पर लगी भीषण जाम बड़े छोटे वाहनों को हो रही है परेशानी

शेरघाटी। नेशनल हाईवे दो पर पुल के मरम्मती में देर के कारण लगातार जाम लगे रहने से स्कूली छात्र-छात्राओं के अलावे राहगीरों को हो रही है, काफी परेशानी मालूम हो कि शहर के नेशनल हाईवे 2 पर निर्माण कार्य में धीमी गति होने से एक छोर के पुल बंद कर दिया गया है।

जिसके कारण आवागमन में काफी राजगीरों को समस्या हो रही है बीते एक महीने से पुल का मरम्मती के लिए कार्य किया जा रहा है। इससे घंटो जाम में छोटी बड़ी वाहन के अलावा बाइक सवार को खड़ा रहना पड़ रहा है, इधर जानकारी देते हुए वाहन चालकों ने बताया कि लगभग एक महीने से ऊपर बीत गए लेकिन पुल की मरम्मती काफी धीमी गति से की जा रही है, जिसके कारण लगातार जाम की समस्या से जूझना पड़ रहा है।

वहीं स्कूली छात्र-छात्राओं को भी काफी समस्या हो रही है, मालूम हो कि बिहार विद्यालय के द्वारा इंटर की परीक्षा एवं मैट्रिक की परीक्षा समय निर्धारित की गई है जिसमें इंटर की परीक्षा चल रही है इससे छात्र-छात्राओं को अपने परीक्षा केंद्र तक पहुंचने में कड़ी मशक्कत करनी पड़ रही है।

अनदेखी : ईंट भट्ठों पर छोटे बच्चों से कराया जा रहा है काम

करपी (अरवल) औरंगाबाद एवं अरवल दो जिले के बॉर्डर की आड़ में संचालित ईट भट्टे पर नाबालिक से लिया जा रहा है काम। औरंगाबाद जिले के देवकुंड थाना एवं अरवल जिले के शहर तेलपा थाना क्षेत्र में संचालित इंट भट्ठों पर नाबालिक बच्चो ट्रैक्टर से ईट उतारने का काम कर रही है। यह दृश्य मदद का नहीं है। बल्कि अपनी भूख को मिटाने के लिए मजदूरी कर रही है। ईंट भट्टे पर काम करने वाले इसके परिजन मजदूरी करवा रहे हैं। जिसे देखकर समाज के नैतिकता साथ-साथ पुलिस प्रशासन पर भी सवालिया निशान प्रश्नचिन्ह खड़ा होता है। जिनके हाथों में कलम कॉपी होना चाहिए। वह कड़ाके की ठंड में लहूलुहान हाथों से ईंट उतारने का काम कर रही है। इस मामले में सरकार लाख दावा कर ले कि नाबालिग एवं अवयस्क बच्चों से काम लेना नियम के उल्लंघन जुर्म है। लेकिन सत्य इससे परे है। सरकार के द्वारा प्रतिदिन अध्यादेश जारी किया जाता है कि 14 वर्ष से कम उम्र वाले बच्चों से काम लेना संगीन अपराध है। और इसे रोकने के लिए जागरूकता के साथ संबंधित पदाधिकारी भी नियुक्त किए गए हैं। काश ऐसे बच्चों के लिए न तो सरकारी नीति और नाहीं सामाजिक परिवेश चिंतित है। यही कारण है कि इनके लिए शिक्षा का रास्ता साफ नहीं हो सका है। नैतिकता या हमारी व्यवस्था पर ऐसे बच्चे प्रश्न पूछते हैं। हालांकि इसे रोकने के लिए सरकारी एजेंसियों के अलावे परिजन को भी जिम्मेवारी बनती है। फिर भी सच यह है कि इनके परिजन पर रूढ़िवादिता इस कदर हावी है कि बचपन से ही इन्हें पेट के भरने एवं भूख मिटाने के लिए एकमात्र उपाय बताया जाता है। अपनी किस्मत को दुहाई देने वाले लोगों को जागरूक करने की आवश्यकता है। लेकिन हमारी एवं आपकी व्यवस्था इनके गरीबी पर उपहास उड़ा देती है और किस्मत का तकाजा देकर इनकी समस्याओं को नजरअंदाज कर देती है। परिणाम स्वरूप इस तरह के बच्चे से काम लेना लोग मजदूरी नहीं योगदान मान लेते हैं।

चुनाव से संबंधित विधि व्यवस्था को लेकर अधिकारियों ने की बैठक

प्रातः किरण संवाददाता

शेरघाटी। लोकसभा चुनाव को लेकर शेरघाटी अनुमंडल कार्यालय में भूमि उप समाहर्ता रंजीत कुमार रंजन एवं इलेक्शन ऑफिसर रंजय कुमार के नेतृत्व में बाराचट्टी प्रखंड क्षेत्र के प्रजाइडिंग ऑफीसर एवं अन्य अधिकारियों के साथ बैठक आयोजित कर चुनाव से संबंधित हर बिंदुओं पर चर्चा किया गया।

जिसमें डिस्पैचिंग से लेकर बूथ पर किस तरह से बक्से को लेकर जाना है इसके बारे में भी चर्चा किया गया। बैठक के दौरान सैकड़ो के तादाद में प्रजाइडिंग ऑफिसर एवं बूथ लेवल के अधिकारी भी शामिल थे।

संक्षिप्त खबरें

साइबर धोखा धड़ी से बचाव की दिया गया जानकारी

सदर मुंगेर। यूको आर सेटी के सभागार में प्रशिक्षणार्थी के बीच जागरूकता पैदा करने और उन्हें साइबर धोखाधड़ी एवं साइबर अपराधों के खिलाफ सुरक्षित एवं संवेदनशील बनाने के लिए साइबर जागरुकता सप्ताह मनाया गया। इस मौके पर अग्रणी जिला प्रबंधक राजीव कुमार ने सभी को बताया कि बैंक विवरण किसी से साझा न करें और उन्होंने ने सभी को सलाह दी कि वे कभी भी अपने ओटीपी, सीवीवी, पिन और डेबिट/क्रेडिट कार्ड विवरण किसी के साथ साझा न करें। आर सेटी के निदेशक गौतम कुमार ने सभी प्रशिक्षणार्थीओं को सॉफ़्टवेयर इंस्टॉलेशन के बारे में पूछने वाले कॉल से सावधान रहने एवं किसी भी कॉल का जवाब न दें जो व्यक्तिगत जानकारी मांगती ' सभी प्रशिक्षणार्थीओं प्रोजेक्टर के माध्यम से भी जानकारी दी गई !इस मौके पर सन्नी कुमार ,नितीश कुमार एवं कुणाल राज उपस्थित थे !

नारियल तोड़कर किया गया कला मंच निर्माण कार्य का आरंभ

हवेली खड़गपुर(कोर्ट)। नगर परिषद के मुख्य बाजार स्थित पौराणिक धार्मिक धरोहर शक्तिपीठ प्राचीन काली मंदिर में मुख्यमंत्री क्षेत्र विकास योजना के अंतर्गत स्थानीय विधायक राजीव कुमार सिंह के अनुशंसा पर कुल लागत 95 करोड के लागत से बनने वाले कला मंच का आज भूमि पूजन नारियल फोड़कर की गई। पूजा अर्चना समिति के संयोजक मनोज कुमार रघु व अध्यक्ष संजय कुमार सुमन ने नारियल फोड़ कर कार्य का शुभारंभ किया ।समिति के संयोजक ने बताया कि पिछले वर्ष महाआरती वर्षगांठ समारोह में विधायक ने हजारों हजार की भीड़ में घोषणा किया था कि आने वाला पिछले वर्ष टेंट लगाकर कार्यक्रम नहीं किया जाएगा इसमें पक्की मंच का निर्माण होगा इस कार्य को आज प्रारंभ कर दिया गया है। इस मौके पर पुजारी मयानंद मिश्र पुजारी अरुण पाठक कैलश रजक सहित दर्जनों पूजा अर्चना समिति के सदस्य उपस्थित थे।

भाजपा नेत्री के निधन पर पूर्व मंत्री ने व्यक्त किये शोक संवेदना

मुंगेर। भाजपा के वरिष्ठ नेत्री बेबी चंकी के निधन पर पूर्व सांसद सह पूर्व मंत्री सह राष्ट्रीय लोक जनता दल के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉक्टर मोनाजिर हसन ने गहरी दुःख व्यक्त करते हुए कहा कि मुंगेर की बेबी चंकी शीर्ष कार्यकर्ता थी राज्य की राजनीति में अपनी पहचान बनाई। उनके निधन से खास कर मुंगेर के लिए अपूर्णीय छती हुई है ।इस की भरा नहीं किया जा सकता है। इन से हमारा परिवारिक रिश्ता रहा है। उनके निधन से मै बहुत दुखी हुँ हमेशा मुझे अपना बड़ा भाई समझती रही और सम्मान देती रही दुख की इस घड़ी में मेरी उनके परिवार वालों के साथ पुरी संवेदनाएं हैं।

साहरघाट का पहला टारगेट योर गोल कैंपस होगा डिजिटल सुविधा से लैस

मधुबनी। बुधवार को मधवापुर प्रखण्ड के पुराना गंगौर रोड साहरघाट में टारगेट योर गोल कैंपस नामक शिक्षण संस्थान का उद्घाटन किया। जिसमें बतौर मुख्य अतिथि साहरघाट थानाध्यक्ष अरविंद कुमार, अवकाश प्राप्त प्रधानाध्यापक गंगा प्रसाद यादव, सीए नीतीश कुमार, शिक्षक विनोद कुमार, मनोज कुमार और मुखिया डॉ. प्रेम कुमार मंडल, बाजार दुर्गा मंदिर के मुख्य पुजारी पंडित सुबोध मिश्र और युवा समाजसेवी उमा शंकर नायक समेत अन्य शामिल हुए। कार्यक्रम की शुरूआत सर्वप्रथम अतिथियों का पाग दुपट्टा से सम्मानित कर किया गया। जहां नंदनी कुमारी, सोनी कुमारी, रागनी कुमारी, कुसुम कुमारी और काजल कुमारी ने अतिथियों के स्वागत में स्वागत गीत भी गाए। इसके बाद दीप प्रज्ज्वलित के साथ ही फीता काटकर विधिवत संस्थान का उद्घाटन किया गया। जहां कार्यक्रम की संचालन सुरेश कुमार और अध्यक्षता टारगेट योर गोल कैंपस के डायरेक्ट सुरेश सिंह ने की। इस अवसर पर थानाध्यक्ष ने अपने संबोधन में कहा की कड़ी मेहनत और अपने लक्ष्य के प्रति अग्रसर रहने से बड़े से बड़े सफलता हासिल किया जा सकता है। वही अन्य अतिथियों ने कहा कि यह बॉर्डर इलाका है। जहां गरीबी के कारण बहुत लोग शिक्षा से वंचित है। खास कर यहां के बच्चों को सरकारी परीक्षाओं की तैयारी के लिए दूसरे शहर जाना पड़ता था। लेकिन अब यहां डिजिटल क्लास खुल जाने से बच्चे घर से भी पढ़ाई कर सकते है। जो शिक्षा जगत में महत्पूर्ण कदम है। सभी अतिथियों ने डायरेक्टर के प्रति आभार प्रकट करते हुए छात्र छात्राओं को शिक्षा संबंधी कई मूल मंत्र दिए। वही इस शिक्षण संस्थान के डायरेक्टर सुरेश सिंह ने बताया कि इस इलाके का यह पहला डिजिटल क्लास है। जहां से बच्चे सभी कंप्टीशन परीक्षाएं की तैयारी कर सकते है। इस संस्थान से नवोदय विद्यालय, सैनिक स्कूल, केंद्रीय विद्यालय, सिमुतुल्ला, एसएससी, बैंकिंग, रेलवे, पुलिस आर्मी, एयरफोर्स, नेवी, बीपीएससी समेत विभिन्न सरकारी परीक्षाओं की तैयारी कराई जाएगी। इस कैंपस में ग्राफिक्स सिस्टम से अध्यापन की व्यवस्था, डिजिटल क्लास रूम, टॉपिक वाइज पढ़ाई की व्यवस्था, नियमित टेस्ट की सुविधा, कमजोर छात्र छात्राओं के लिए अलग से व्यवस्था, इंग्लिश स्पोकन की व्यवस्था, लाइब्रेरी और होस्टल की समुचित व्यवस्था, बोर्ड परीक्षा के लिए अलग से तैयारी की व्यवस्था, सभी विषयों के लिए योग्य शिक्षकों की व्यवस्था है। साथ ही आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों को निशुल्क शिक्षा देने की बात कही गई।

वार्षिक खेल महोत्सव संपन्न, येलो हाउस बना चैंपियन

प्रात : किरण संवाददाता

संग्रामपुर (मुंगेर)। नगर पंचायत संग्रामपुर के प्रसिद्ध शिक्षण संस्थान संत मेरी इंग्लिश स्कूल के प्रांगण में आयोजित चार दिवसीय वार्षिक खेल महोत्सव का शानदार समापन गुरुवार को हुआ। तीन दिनों से शीर्ष स्थान पर बरकरार येलो हाउस ने खेल के आखिरी दिन भी अपना दबदबा कायम रखा और चैंपियन का खिताब अपने नाम कर लिया। समापन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में संग्रामपुर के प्रखंड विकास पदाधिकारी अजेश कुमार, विशिष्ट अतिथि के रूप में बेलहर के प्रखंड विकास पदाधिकारी राजीव रंजन, नगर पंचायत संग्रामपुर के मुख्य पार्षद नीलम देवी अन्य अतिथिगण में बलराम यादव, प्रवीन कुमार व सैकड़ों अभिभावक मौजूद रहे। इस विशेष अवसर पर अजेश कुमार ने विद्यालय के छात्र-छात्राओं को मानव जीवन में खेल के महत्व को बताया । वहीं बेलहर बीडीओ राजीव रंजन ने बताया कि खेलकूद से बच्चों के समस्त व्यक्तित्व का विकास होता है, जिससे बच्चों का मानसिक एवं बौद्धिक विकास होता है और बेहतर जीवन व्यतीत करने का गुण उत्पन्न होता है ।

वहीं मुख्य अतिथि द्वारा विजेता येलो हाउस के कप्तान आनंद कुमार व सौम्या भारती और टीम के कोच अजय सर व अमन सर को चैंपियनशिप का खिताब दिया गया । वही दूसरे व तीसरे स्थान पर रहे ग्रीन व रेड हाउस को भी मुख्य अतिथियों द्वारा खिताब से नवाजा गया। इसके साथ-साथ लगभग 545 प्रतिभागियों को अलग-अलग खेल प्रतियोगिता में प्रथम द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने के लिए अतिथियों द्वारा मेडल प्रदान कर पुरस्कृत किया गया । प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले येलो हाउस के कोच अजय सर व अमन सर रहे , द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले ग्रीन हाउस के कोच शुभम सर व कन्हैया सर रहे और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले रेड हाउस के कोच सूरज सर व आर्यन सर रहे। सभी कोचों द्वारा खिलाड़ियों को बेहतर कोचिंग प्रदान किया गया और उनके दृढ संकल्प से सारे हाउस का प्रदर्शन अब्बल दर्जे का रहा । इस चार दिवसीय खेलकूद कार्यक्रम में बच्चों के बीच 100,200,400 मीटर दौड़ , ऊंची व लंबी कूद, शॉट पुट, डिस्कस थ्रो, सैक रेस जैसी प्रतिस्पधाएं कराई गई । वहीं छोटे बच्चों के लिए फ्रॉक जंपिंग जैसे मनोरंजक खेलों का आयोजन कराया गया । वही ग्रुप इवेंट के खेल में रोप पुलिंग, चेयर प्ले ,वाटर पासिंग जैसे अनेक खेलों की प्रतिस्पधाएँ आयोजित कराई गई। वहीं चौथे दिन कार्यक्रम के समापन पर विद्यालय के प्राचार्य जिन्स के एलोसीयस एवं निर्देशक रोसमिन के वर्गीज ने बच्चों को खेल के लिए प्रेरित किया। उन दोनों ने चारों टीम के खिलाड़ियों की प्रशंसा की और टीम के कोचों को भी उनके योगदान के लिए धन्यवाद कहा । साथ ही साथ स्कूल के शिक्षक गण प्रवीण कुमार सिंह ,वशिष्ठ ,रोहित ,छबीला, प्रदीप राजकिशन, लिन्स, छोटू ,जैस्मिन ,निशा, चंदा ,कल्पना ,सूरज आदि का इस कार्यक्रम में योगदान सराहनीय रहा ।

90 वर्षीय स्वर्णा लता देवी के निधन पर मुख्यमंत्री सहित अन्य कई जदयू नेता ने शोक संवेदना व्यक्त किये

प्रात : किरण ब्यूरो

मुंगेर। प्रदेश जदयू राजनैतिक सलाहकार समिति के सदस्य एवं जदयू के नेता मनोरंजन मजुमदार की माता स्वर्गीय स्वर्ण लता मजुमदार का 6 फरवरी 2024 को 11 बजे दिन में निधन हो गया। वे लगभग 90 वर्ष उम्र की थी। उनका दाह संस्कार बुधवार के दिन किया गया ।शोक संतप्त परिवार के प्रति बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने अपनी गहरी संवेदना व्यक्त करते हुए जदयू नेता मनोरंजन मजुमदार से फोन पर बात कर शोक व्यक्त किए। प्रदेश जदयू अध्यक्ष उमेश कुशवाहा, पूर्व केंद्रीय मंत्री जयप्रकाश नारायण यादव, पूर्व बिहार सरकार के मंत्री एवं पूर्व सांसद डॉ मोनाजिर हसन, जदयू के पूर्व जिलाध्यक्ष मोहम्मद जियाउर्रहमान, नगर निगम मेयर श्री मति कुम कुम देवी, ज़िला जदयू अध्यक्ष नचिकेता मंडल, मुंगेर विधानसभा के पूर्व राजद प्रत्याशी मुकेश यादव, आई टी सी शाखा प्रबंधक, जदयू राजनैतिक सलाहकार समिति के सदस्य रुबैयना सलीम सहित अनेकों प्रमुख नेता और पदाधिकारियों ने फोन पर बात कर शोक संवेदना व्यक्त किए वहीं बिहार सरकार के पूर्व ग्रामीण कार्य विभाग मंत्री शैलेश कुमार, पूर्व सांसद सह पूर्व विधायक विजय कुमार विजय, आई टी सी प्रबंधन के वाई पी सिंह, जदयू के प्रदेश सचिव संतोष सहनी, जिला उपाध्यक्ष सैयदा हीना नाजनीन, मोहम्मद गुलाम सुभानी, राजद के प्रदेश महासचिव प्रमोद यादव, मंटू शर्मा, असर्फी यादव, निशिकांत यादव, बिन्देश्वरी यादव जदयू के अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ के प्रदेश महासचिव मोहम्मद जसीमुद्दीन, मोहम्मद आफताब, प्रदेश जदयू राजनैतिक सलाहकार समिति के सदस्य डेविड बेन्जामिन, देव कुमार, युवा जदयू के प्रदेश उपाध्यक्ष शिवम मंडल, तकनिकी प्रकोष्ठ प्रदेश उपाध्यक्ष प्रशांत कुमार, पूर्व जिला उपाध्यक्ष श्री विपिन कुशवाहा, आई टी सी ट्रेड मजदूर यूनियन के अध्यक्ष श्री सियाराम यादव सहित विभिन्न राजनैतिक, सामाजिक संगठनों के पदाधिकारियों एवं कार्यकताओं ने श्री मजुमदार के आवास पर उनके माता के पार्थिव शरीर पर पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि अर्पित किए। मनोरंजन मजुमदार एक वरिष्ठ समर्पित राजनैतिक कार्यकर्ता हैं उनके माता जी के निधन पर सैकड़ों लोगों ने फोन पर और सैकड़ों गणमान्य व्यक्ति उनके आवास पर पहुंच कर श्रद्धा सुमन अर्पित किए। जदयू नेता मनोरंजन मजुमदार ने कहा कि मां के निधन से हमने अपने पारिवारिक मुखिया और मुख्य अविभावक को खो दिया इस दुःख की घड़ी में जिन्होंने शोक संवेदना व्यक्त किया या मेरे आवास पर आ कर माता जी के पार्थिव शरीर पर पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धा सुमन अर्पित किए उन तमाम लोगों को धन्यवाद देते हुए कृतज्ञता व्यक्त किया है साथ ही आभार प्रकट किया।

बाबा की जलाभिषेक करने के लिए लगभग 70 हजार श्रद्धालुओं ने किया जलाभिषेक

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा कुशेश्वरस्थान आस्था का केंद्र बाबा कुशेश्वरनाथ महादेव मंदीर में गुरुवार की अहले सुबह से नरकनिवारण चतुर्दशी के अवसर पर व्रतियों का जलाभिषेक के लिए भीड़ देर शाम तक लगी रही, वही श्रद्धालुओ की भीड़ इतनी बढ़ गई थी कि पुरानी दुर्गा मंदिर से ही अपनी अपनी लाइन में लग गए। बाबा की जलाभिषेक करने के लिए शिवनगरी में लगभग 70 हजार श्रद्धालुओ ने जलाभिषेक किया इस दौरान भक्तों के पहूंचने का सिलसिला देर शाम तक जारी रहा। अहले सुबह से ही शिवगंगा पोखर में स्नान करने के बाद मंदिर परिसर में चन्द्रकूप से जल भरने के लिए अपनी अपनी बारी का इंतजार कर रहे थे। शिवभक्तों की आने की सिलसिला जो कि दरभंगा के अलावे, मधुबनी, समस्तीपुर सहरसा, मधेपुरा, सुपौल, खगड़िया, बेगुसराय सहित अनेक दूरदराज जिलों के आस पड़ोस के गॉव से आनेवाले कोई कॉवर लेकर, तो कोई दण्ड प्रणाम तो कोई गाजे बाजे के साथ बूढे बच्चे, महिलायें व यूवा शिवभक्तों के बाबा कुशेश्वरनाथ की जलाभिषेक को कदम से कदम बढ़ रहे थे की कब मंदीर पहुँचे और श्रद्धापूर्वक भोलेनाथ की पूजा संपन्न कर सके. भक्तों की भीड़ उस समय बाजार में उमर परा जब श्रद्धालु बेर सकरकंठ सहित कई तरह की प्रसाद की खरीदारी के लिए किसी भी दुकान पर जुटते थे। श्रद्धालु बोल बम बोल बम ॐनमःशिवाय तथा जय कुशेश्वरनाथ की मंत्र के जाप करते भीड़ से गुजर रहे थे। पुनः पूजा अर्चना के बाद श्रद्धालु प्रसाद की खरीदारी करते हुए निकले। इस दौरान 80 से 90 रुपये प्रति किलो की दर से श्रद्धालु बेर की खरीदारी की नरक निवारण चतुर्दशी पर पंडित आचार्य राजनारायण झा ने बताया कि नरक निवारण चतुर्दशी महादेव का व्रत होता है आज के दिन महादेव के लिए सारे दिन उपासना में व्रती रहते हैं और संध्या काल में चतुर्दशी में ही पारण यानी कि व्रत को तोड़ते हैं, व्रत तोड़ने से पूर्व बेर, गंगा जल और तुलसी इन्ही से व्रत तोड़ते हैं, उन्होंने कहा कि आज के दिन शिव का उपासना और रुद्राभिषेक करने से सभी मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है।

बिहार में दो हजार में पंचायत सरकार भवन का निर्माण कराया जाएगा

प्रात : किरण संवाददाता

हवेली खड़गपुर(मुंगेर)। बिहार पंचायती राज विभाग पटना में मुंगेर जिले को पंचायत सरकार भवन के निर्माण करने के लिए 33 करोड रुपए की स्वीकृति प्रदान की है जिला पंचायती राज पदाधिकारी मुंगेर कुमार अभिषेक ने बताया कि राज्य मुख्यालय द्वारा वित्तीय वर्ष 2022 के लिए सिस्टम वित्त आयोग की अनुशंसा के आलोक में 33 करोड रुपए की स्वीकृति प्रदान की गई है पंचायत में पंचायत सरकार भवन का निर्माण कराए जाएंगे । निर्माण का कार्य योजना विभाग द्वारा कराई जाएगी। उन्होंने बताया कि जिले के 96 पंचायत में मात्र 12 पंचायत में ही सरकार पंचायत सरकार भवन का निर्माण हो पाया है मुंगेर सदर दो जमालपुर एक धरहरा एक, बरियारपुर एक, हवेली खड़गपुर तीन , तारापुर दो, संग्रामपुर एक, टेटिया बंबर एक असरगंज के 06 पंचायत में एक भी पंचायत में पंचायत सरकार भवन का निर्माण नहीं हो पाया है। जबकि 06 पंचायत में जमीन प्राप्त हो चुका है। जबकि जिले के 96 पंचायत में 90 पंचायतों को पंचायत सरकार बनाने के लिए जमीन उपलब्ध हैं। 09 पंचायत सरकार भवन निमार्णाधीन है। उन्होंने बताया कि पंचायत सरकार भवन के निर्माण से ग्रामीणों को प्रखंड कार्यालय का चक्कर नहीं काटना पड़ेगा आरटीपीएस काउंटर चालू हो जाएगा जाति प्रमाण पत्र आय प्रमाण पत्र आवासीय प्रमाण पत्र सामाजिक सुरक्षा पेंशन दाखिल खारिज करने जैसा आवेदन जमा किया जा सकेगा पूरे बिहार में 2000 पंचायत सरकार भवन का निर्माण कराए जाएंगे।

शमनिय वादों को राष्ट्रीय लोक अदालत में शामिल करने का दिया निर्देश

प्रात : किरण ब्यूरो चीफ पुरुषोत्तम कुमार

जमुई। आगामी 9 मार्च को स्थानीय परिवार न्यायालय में आयोजित होने वाले राष्ट्रीय लोक अदालत की तैयारी को लेकर गुरुवार को जिला विधिक सेवा प्राधिकारके अध्यक्ष सह जिला एवं सत्र न्यायाधीश धर्मेंद्र कुमार सिंह के निर्देश पर जिला पंचायत राज पदाधिकारी तथा समस्त प्रखंड पंचायत राज पदाधिकारी के साथ एक बैठक आयोजित किया गया। बैठक की अध्यक्षता जिला विधिक सेवा प्राधिकार के सचिव राकेश रंजन ने किया। इस मौके पर उपस्थित पंचायत राज पदाधिकारियों को प्राधिकार सचिव ने ग्राम कचहरी में लंबित शमनिय वादों को राष्ट्रीय लोक अदालत में शामिल करने का निर्देश दिया तथा संबंधित पक्षकारों को बुलाकर मामले को निष्पादित करने को कहा गया। प्राधिकार सचिव ने कहा कि राष्ट्रीय लोक अदालत में ज्यादा से ज्यादा लोग सम्मिलित हो इसके लिए हर एक पंचायत स्तर पर व्यापक प्रचार प्रचार करें।

3 एकड़ साढ़े चार डिसमिल जमीन को ले दो पक्षों में जमकर चली लाठी डंडे व तलवार, दोनों पक्षों से एक दर्जन लोग घायल, दो पटना रेफर

प्रात : किरण ब्यूरो

जमुई। लक्ष्मीपुर थाना क्षेत्र के मगही गांव में गुरुवार को आलू कबाड़ने को लेकर दो पक्षों में जमकर लाठी, डंडे व तलवार बाजी हुई। जिनमें दोनों पक्षों के तरफ से एक दर्जन लोग गंभीर रूप से घायल हो गया। जिसे परिजनों द्वारा इलाज के लिए सदर अस्पताल लाया गया जहां दोनों पक्षों की तरफ से एक-एक व्यक्ति की हालत गंभीर होने पर डॉक्टर ने प्रारंभिक इलाज के बाद बेहतर इलाज के लिए पटना पीएमसीएच रेफर कर दिया। घायलों में एक पक्ष की तरफ से भासो यादव, मनोज यादव, संभू यादव व उमेश यादव का नाम शामिल है जबकि दूसरे पक्ष के तरफ से बोधी यादव, सुरेंदर यादव, पप्पू यदाव व अन्य का नाम शामिल है। बताया जाता है कि भासो यादव और बोधि यादव के बीच 3 एकड़ साढ़े चार डिसमिल जमीन को लेकर कई सालों से विवाद चला आ रहा है। इसी को लेकर गुरुवार को बोधी यादव उस जमीन पर लगे आलू कबाड़ने के लिए गया था। तभी भासो यादव, मनोज यादव, संभू यादव, उमेश यादव समेत आधा दर्जन के संख्या में लोग आया और बोधी यादव के साथ उलझने लगे। दोनों पक्षों में विवाद इतना बढ़ गया कि देखते ही देखते दोनों तरफ से लाठी डंडे व तलवार चलने लगे। जिनमें दोनों पक्षों के तरफ से एक दर्जन लोग घायल हो गया। सभी घायलों को इलाज के लिए सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया जहां एक पक्ष के तरफ से भासो यादव और दूसरे पक्ष के तरफ से बोधी की हालत गंभीर होने पर डॉक्टर ने प्रारंभिक इलाज के बाद बेहतर इलाज के लिए पटना रेफर कर दिया। इधर घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। वायरल वीडियो में साफ देखा जा रहा है कि दोनों पक्षों की तरफ से जमकर लाठी डंडे चल रही है।

राजस्व कर्मचारी ने अलीगंज सीओ की डीएम से शिकायत

जमुई जिला के अलीगंज। इस्लामनगर अलीगंज प्रखंड के सीओ अरविंद कुमार पर राजस्व कर्मचारी धनराज सिंह ने लिखित आवेदन देकर डीएम व एडीएम से दाखिल-खारिज वाद को वर्षो से पेनडिग रखकर बेवजह परेशान करने की शिकायत किया है। राजस्व कर्मचारी ने बताया कि वर्ष 2223 से ही सैकड़ो दाखिल-खारिज वाद को पैसे के चक्कर मे पेनडिग रखकर परेशान किया जा रहा है।आवेदन मे लिखा है कि मै तीन हल्का के प्रभार मे हु। और तीनो हल्का मे तीन सौ से ऊपर मोटेशन वाद रिपोर्ट के बावजूद रिजेक्ट और पेनडिग कर सीओ अरविंद कुमार के द्वारा परेशान किया जा रहा है। उन्होने बताया इस समस्या की शिकायत पूर्व मे भी डीएम के पास किया था।लेकिन समस्या जस की तस बनी हुई है। उन्होने बताया कि मुझे क्षेत्र भ्रमण के दौरान स्थानीय पब्लिक रैयत का कोपभाजन का शिकार होना पड़ रहा है। कई बार तो तु-तू मै से मारपीट तक पहुच गयी है। कई बार तो अंचल कार्यालय मे भी आवेदक व सीओ अरविंद कुमार के बीच वाद विवाद की घटना हो चुकी है। दाखिल-खारिज वाद बेवजह रोक कर सीओ के द्वारा रखा गया है। जिससे आमजन के साथ मै परेशान हू। राजस्व कर्मचारी ने डीएम व एडीएम से जाचकर न्यायोचित कारवाई करने की मांग किया है। बता दे कि अलीगंज सीओ के द्वारा मोटेशन व अन्य कार्यो मे अवैध वसूली करने की शिकायत की लंबी फेहरिस्त है। बता दे कि ये वही सीओ अरविंद कुमार है जिसे मिजार्गंज पंचायत के जन सेवा शिविर मे जिला के तत्कालीन प्रभारी सह भवन निर्माण निर्माण मंत्री अशोक चौधरी के द्वारा पब्लिक के शिकायत पर डीएम व जिला के तमाम विभाग के अधिकारियो के समक्ष सरेआम कडी फटकार लगाते हुए प्रपञ्च क गठन कर जेल भेज देने की बात कहा गया था।

अलीगंज अंदर बाजार जाने वाली मुख्य मार्ग मे कीचड़मय से आम राहगीर परेशान, डीएम से पीसीसी ढ़लाई कराने की मांग

प्रात : किरण संवाददाता

अलीगंज। प्रखंड क्षेत्र के अलीगंज अंदर बाजार जाने वाली पथ मे कीचड़मय हो गया है। जिससे सड़क कीचड़मय हो गया है। काफी गढ्ढेनुमा हो गया है। और प्राय जल जमाव के साथ काफी कीचड़मय हो गई है। जिससे सड़क पर पैदल चलना भी मुश्किल प्रतीत हो रहा है ।अलीगंज अंदर बाजार मे ही हाईस्कूल भी है। इसी रास्ते हजारो छात्र-छात्राए पढने प्रतिदन स्कूल जाते है। जिनहे काफी कठिनाईयो का सामना करना पड रहा है। इस रास्ते से अलीगंज बाजार के व्यवसायी से लेकर हजारो लोग निवास करते है। और इस सड़क पर सालो भर जलजमाव व कीचड़मय बना रहता है। ग्रामीणो ने बताया कि इस मार्ग मे घरो से निकलने वाली गंदा पानी नाला की समूचित व्यवस्था नही रहने से नाला का गंदा पानी भी सड़क पर ही गिरता है।

नाला का पानी का निकास की समुचित व्यवस्था नही रहने से अलीगंज बाजार वासी नारकीय जीवन जीने को विवश है। पंचायत की मुखिया गायञी देवी, बाईपी सुमन, समाजसेवी सह अधिवक्ता शशिशेखर सिंह मुन्ना, चंद्रशेखर आजाद ने बताया कि यह सड़क काफी व्यस्तम है, प्रतिदन हजारो छात्र-छात्राए व ग्रामीण इस मार्ग से गुजरते है। इस रास्ते की लम्बाई लगभग दो किलोमीटर है ।जो काफी नारकीय बनी हूई है। मुखिया गायञी देवी, बाईपी सुमन तथा शशिशेखर सिंह मुन्ना ने जमूई जिलाधिकारी को लिखित आवेदन देकर इस मार्ग मे नाला निर्माण के साथ पीसीसी ढलाई कराने की मांग किया है।

बता दे कि जलजमाव के साथ कीचड़मय बने रहने से बाजार वासियो को काफी कठिनाईयो का सामना करना पड रहा है ।और गंदगी की अंबार बनी हूई है। ग्रामीणो ने बताया कि गंदगी से मच्छरो का काफी प्रकोप बढ गया है। जिससे लोग मलेरिया व टायफायड का शिकार हो रहे है। ग्रामीणो ने बताया कि वर्षो से यह शिकायत जनप्रतिनिधियो से लेकर जिला प्रशासन तक किया गया है। अगर अविलंब इस समस्या पर जिला प्रशासन निदान नही करेगी तो हम सभी ग्रामीण आन्दोलन करने को बाध्य हो जाएंगे। मुखिया गायञी देवी ने इस समस्या को लेकर जमूई सांसद चिराग पासवान और जिलाधिकारी को भी लिखित पञ देकर इस कीचड़मय रास्ते मे पीसीसी ढलाई व नाला निर्माण कर मुक्ति दिलाने की मांग किया है।

जिलाध्यक्ष ने सूबे के मुखिया नीतीश से मिलकर जन समस्याओं की चर्चा

प्रात : किरण संवाददाता

अलीगंज। जमूई जदयू जिलाध्यक्ष शैलेन्द्र महतो ने बिहार के मुख्यमंञी सह जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष नीतिश कुमार से बुधवार को मुलाकात कर जिले की जन समस्याओ से अवगत कराया। जिलाध्यक्ष ने पटना के एक अने मार्ग स्थित सीएम आवास पर पहूचकर मुख्यमंञी नीतिश कुमार से मिलकर पहले नौवी बार मुख्यमंञी बनने पर गुलदस्ता भेंट कर बधाई व शुभकामनाए दी। और जिले के कई ज्वलंत समस्याओ को भी आवेदन देकर अवगत कराया।

विद्यालयों की जमीन पर अतिक्रमणकारियों का कब्जा

मनीगाछी संवाददाता

दरभंगा मनीगाछी प्रखंड क्षेत्र के एक दर्जन से अधिक सरकारी विद्यालयों की भूमि पर अतिक्रमणकारियों का कब्जा है। लेकिन इसे देखनेवाला कोई नहीं है। जिन विद्यालयों पर अतिक्रमणकारियों का कब्जा है उनमें प्लस टू उच्च विद्यालय नेहरा, मध्य विद्यालय रजवाड़ा, मध्य विद्यालय मैना रहिका उर्दू, मध्य विद्यालय कटमा, मध्य विद्यालय राजे, मध्य विद्यालय जगदीशपुर, मध्य विद्यालय ब्रहमपुरा, प्रथमिक विद्यालय जगदीशपुर उत्तर, प्राथमिक विद्यालय गोढ़ियारी, प्राथमिक विद्यालय राघोपुर सहित कई अन्य विद्यालय शामिल हैं। इस संबंध में विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों का कहना है कि प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी को इस संबंध में लिखित शिकायत किया गया था। उनके आदेशानुसार अंचलाधिकारी के न्यायालय में वाद दायर किया गया है। तथा अतिक्रमणकारियों पर प्राथमिकी दर्ज करने के लिए थाना में आवेदन दिया गया है। लेकिन अभी तक सीओ एवं थाना स्तर से अतिक्रमणकारियों पर कोई कार्रवाई नहीं की गई है। इस संबंध में सीओ राजीव प्रकाश राय ने बताया कि अतिक्रमणकारियों पर अतिक्रमणवाद चलाया गया है।

प्रमंडलीय आयुक्त एवं जिला पदाधिकारी ने श्रीजा सेन गुप्ता को बुके शॉल व गणेश प्रतिमा देकर संयुक्त रुप से किया सम्मानित

प्रात : किरण ब्यूरो

मुंगेर। मुंगेर से निकलकर सारे देश में मुंगेर का नाम रोशन कर रही श्रीजा सेनगुप्ता को बीते संध्या प्रमंडलीय आयुक्त संजय कुमार सिंह ने अपने कार्यालय वैश्म में सम्मानित किया। आयुक्त ने श्रीजा को सम्मान स्वरूप बूके, शॉल, गणेश भगवान की प्रतिमा एवं पुस्तक भेंट की। श्रीजा सेन गुप्ता की उपलब्धियों पर हर्ष व्यक्त करते हुए उनके उज्जवल भविष्य की सुखद कामना की। प्रमंडलीय आयुक्त ने श्रीजा सेन गुप्ता की उपलब्धियों को देखते हुए जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह जिलाधिकारी से आगामी लोक सभा आम निर्वाचन 2024 में जिला के स्वीप इलेक्शन आईकॉन के रूप में नामित करने हेतु अनुशंसा की है। उन्होंने कहा कि जिला आईकॉन के रूप में वे मतदाताओं को विशेष कर युवा वर्ग को मतदान करने के लिए प्रेरित करेगी। प्रमंडलीय आयुक्त ने श्रीजा सेन गुप्ता के विनर के रूप में प्राप्त एवं विभिन्न उपलब्धियों से संबंधित प्रमाण पत्रों तथा प्रतीक चिन्ह का अवलोकन किया। वहीं आज जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह जिलाधिकारी अवनीश कुमार सिंह ने अपने कार्यालय वैश्म में श्रीजा सेन गुप्ता को बूके देकर सम्मानित किया तथा उन्हें मुंगेर जिला के स्वीप इलेक्शन आईकॉन के रूप में नामित किया एवं मतदाताओं को आगामी लोक सभा आम निर्वाचन 2024 में मतदान करने हेतु प्रेरित करने के लिए जवाबदेही देते हुए शुभकामनाएं दी।विदित हो कि श्रीजा सेनगुप्ता आईआईटी पटना के कंप्यूटर साइंस की प्रथम वर्ष की छात्रा है तथा उनके पिता डॉ अभिजीत सेनगुप्ता एवं माता श्रीमती देवयानी सेनगुप्ता शिक्षक के रूप में मुंगेर में कार्यरत हैं। श्रीजा को फॉरएवर मिस इंडिया विनर फ्रॉम बिहार 2023 घोषित किया गया है। श्रीजा को फॉरएवर बेस्ट मॉडल ऑफ द ईयर एवं सुपर वुमन अवार्ड से भी विभूषित किया गया है, जो जयपुर के मैरियट होटल में अक्टूबर 2023 में बॉलीवूड एक्ट्रेस मलाइका अरोड़ा के द्वारा प्रदान किया गया था। श्रीजा सेनगुप्ता को पद्मश्री से विभूषित हेमा मालिनी के द्वारा राइजिंग भारत यंग मॉडल ऑफ द ईयर 2024 से भी विभूषित किया गया है। यह कार्यक्रम 27 जनवरी को दिल्ली द्वारका के रेडिसन ब्लू होटल में संपन्न कराया गया था। श्रीजा मॉडलिंग के साथ-साथ पढ़ाई में भी काफी अव्वल रही है। वो एक अच्छी गायिका भी है। राइजिंग स्टार मॉडल में श्रीजा सेनगुप्ता का चयन 2500 प्रतिभागियों के बीच में हुआ है एवं उसे विभिन्न चरणों से गुजरना पड़ा है। भारतवर्ष की जानी-मानी मशहूर अभिनेत्री पद्मश्री से सम्मानित हेमा मालिनी के द्वारा राजधानी दिल्ली के मशहूर होटल रेडिसन ब्लू में 27 जनवरी 2024 को ग्रैंड फिनाले में श्रीजा सेनगुप्ता को राइजिंग भारत यंग मॉडल अवार्ड से सम्मानित किया गया जो मुंगेर के लिए बड़ी गौरव की बात है।

आरोन फिंच ने टी20 विश्व कप 2024 के लिए प्लेइंग 11 चुनी, स्टार बल्लेबाज को किया बाहर

नई दिल्ली। पूर्व ऑस्ट्रेलियाई कप्तान आरोन फिंच ने इस साल वेस्टइंडीज और यूएसए में एक जून से होने वाले आईसीसी टी20 विश्व कप के लिए ऑस्ट्रेलिया के लिए अपनी प्लेइंग इलेवन चुनी है। फिंच ने स्टार ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाज स्टीव स्मिथ को अपनी प्लेइंग इलेवन से बाहर कर दिया और कहा कि बैटिंग लाइन-अप में पर्याप्त मारक क्षमता है। उन्होंने यह भी कहा कि विकेटकीपर-बल्लेबाज जोश इंगलिस स्मिथ की भूमिका निभाने के साथ-साथ निचले क्रम में फिनिशर की भूमिका निभाने के लिए काफी बहुमुखी हैं।

फिंच ने कहा, %संभवत-इस समय मेरी 11 में वह (स्मिथ) नहीं है और इसका कारण यह है कि मुझे लगता है कि सूची में पर्याप्त बल्लेबाजी क्षमता है... जोश इंग्लिस, वह इतना बहुमुखी है कि वह लगभग भूमिका निभा सकता है। स्टीव स्मिथ खेलते हैं और फिनिशर भी हैं।%

इस युग के सबसे बेहतरीन बल्लेबाजों में से एक होने के बावजूद स्मिथ के पास सर्वश्रेष्ठ टी20आई आंकड़े नहीं हैं। उन्होंने 25.69 की औसत और 125 से अधिक की स्ट्राइक रेट से पांच अर्धशतकों के साथ 1,079 रन बनाए हैं। उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर 90 है। 15 टी20आई में इंग्लिस ने 158 से ज्यादा के स्ट्राइक रेट और एक शतक के साथ 29.76 की औसत से 387 रन बनाए हैं। उनका सर्वश्रेष्ठ स्कोर 110 है।

फिंच ने मध्यम गति के हरफनमौला मार्कस स्टोइनिस और स्पिन गेंदबाजी बल्लेबाजी हरफनमौला मैथ्यू शॉर्ट को भी शामिल किया। उन्होंने कहा, %मेरे पास मार्कस स्टोइनिस और मैट शॉर्ट हैं। कैरेबियन में विकेट बहुत अधिक स्पिन कर सकते हैं। अगर आपको लगता है कि आपको गेंद के साथ अतिरिक्त कवर की जरूरत है तो मैं वहां मैट शॉर्ट या मार्कस स्टोइनिस का विकल्प रखना चाहूंगा।%

शॉर्ट ने सात टी20 मैच खेले हैं जिसमें उन्होंने 22.28 की औसत से 156 रन बनाए हैं और एक अर्धशतक के साथ 167 से अधिक की स्ट्राइक रेट से रन बनाए हैं। उन्होंने इस फॉर्मेट में एक विकेट भी लिया है। दूसरी और 57 टी20आई में स्टोइनिस ने 30.50 की औसत और 145 से अधिक की स्ट्राइक रेट के साथ 915 रन बनाए हैं। उनके नाम दो अर्धशतक और 24 विकेट भी हैं।

नेट्स में प्रैक्टिस करने उतरे धोनी, दोस्त की स्पोर्ट्स शॉप को किया प्रोमोट

महेंद्र सिंह धोनी की बैट के साथ ट्रेनिंग की तस्वीरें और वीडियो वायरल हो रहे हैं जिस पर उनके बचपन के दोस्त की स्पोर्ट्स शॉप के नाम का स्टिकर लगा हुआ है। धोनी ने इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2024 के लिए अपनी तैयारी तेज करते हुए नेट्स दिखाई दिए।

धोनी को नेट्स में एक बल्ले के साथ ट्रेनिंग करते देखा गया जिस पर %प्राइम स्पोर्ट्स% का स्टिकर लगा हुआ था। सोशल मीडिया पर प्रशंसकों ने तुरंत यह समझ लिया कि यह स्टिकर धोनी का अपने बचपन के दोस्त की खेल के सामान की दुकान को प्रोमोट करने का तरीका था। धोनी ने अकसर अपने क्रिकेट करियर के शुरुआती दौर में अपने बचपन के दोस्तों से मिले समर्थन के बारे में बात की है। उनके एक दोस्त ने उन्हें उनके करियर में पहली बार बैट प्रायोजक दिलाने में मदद की। 2016 की बायोपिक %एमएस धोनी- द अनटोल्ड स्टोरी% में क्रिकेटर के अपने दोस्तों के साथ समीकरण को बड़े पर्दे पर लाया।

धोनी के नेट्स में उतरने के बाद ऐसा लगता है कि वह पिछले साल सर्जरी के बाद घुटने की चोट की समस्या से पूरी तरह उबर चुके हैं और आईपीएल 2024 में चेन्नई सुपर किंग्स का नेतृत्व करेंगे। पिछले साल सीएसके को जीत दिलाने के बाद धोनी ने पुष्टि की कि वह कम से कम एक और साल खेलने के लिए लौटेंगे।

यह पहली बार नहीं है कि एमएस धोनी ने अपने बल्ले पर जगह का इस्तेमाल उन लोगों के लिए किया है जिन्होंने वर्षों से उनकी मदद की है। 2019 विश्व कप के दौरान पूर्व विकेटकीपर ने कई बल्लों के साथ खेला, प्रत्येक पर अलग-अलग ब्रांड का लोगो था। अगस्त 2020 में एमएस धोनी द्वारा अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास की घोषणा के बाद ही प्रशंसकों को एहसास हुआ कि धोनी अपने अंतिम टूर्नामेंट में अपने बल्ले के प्रायोजकों को उच्चतम स्तर पर श्रद्धांजलि दे रहे थे। जुलाई 2019 में भारत की विश्व कप 2019 के सेमीफाइनल में न्यूजीलैंड से हार के बाद धोनी ने कोई अंतरराष्ट्रीय मैच नहीं खेला, लेकिन उन्होंने 15 अगस्त को ही संन्यास की घोषणा कर दी।

इंग्लैंड के स्पिनरों की सफलता पर बोले रेहान

स्टोक्स के नेतृत्व को दिया सफलता का श्रेय

नई दिल्ली। भारत के दौरे पर इंग्लैंड के स्पिनरों ने शुरुआती दो टेस्ट मैचों में उम्मीदों से कही बेहतर प्रदर्शन किया है और युवा गेंदबाज रेहान अहमद ने इस सफलता का श्रेय टीम के माहौल और बेन स्टोक्स के नेतृत्व को दिया है। पांच मैचों की श्रृंखला इस समय 1-1 से बराबर है, लेकिन इसका आश्चर्यचकित करने वाला पहलू यह है कि इंग्लैंड के अनुभवहीन स्पिनरों ने भारतीय स्पिनरों की तुलना में बेहतर प्रदर्शन किया है।

रेहान, टॉम हार्टले और शोएब बशीर की स्पिन गेंदबाजों की तिकड़ी दो मैचों में 33 विकेट चटकाये है तो वही बेहद रविचंद्रन अश्विन, रविंद्र जडेजा, अक्षर पटेल और कुलदीप यादव जैसे अनुभवी स्पिनरों ने आपस में 23 विकेट साझा किये है। 19 साल के अहमद ने कहा, 'इससे पता चलता है कि टीम का माहौल कितना बढ़िया है।% उन्होंने कहा, 'अपने देखा होगा कि हार्टले और बशीर यहां आने के बाद दबाव में नहीं दिखे और

इसका श्रेय टीम को जाता है।% रेहान ने कहा, 'हमारी टीम में माहौल और नेतृत्व ऐसा है कि आप यह भूल जाते है कि आप किसके खिलाफ खेल रहे है। आपका ध्यान सिर्फ इस बात पर होता है कि आपको क्या करने की जरूरत है।%

टीम की नेतृत्व इकाई में स्टोक्स और मैकुलम जैसे दिग्गजों की मौजूदगी में रेहान ज्यादा दबाव लेने से बचना चाहते है। उन्होंने कहा, 'उन्हें (स्टोक्स और मुख्य कोच ब्रेंडन मैकुलम) इसकी परवाह नहीं है कि चीजें कितनी बुरी हो सकती हैं। यह हमेशा इस बारे में होता है कि आप इससे क्या हासिल कर सकते है। अगर मैं चार खराब गेंद फेंकने के बाद विकेट चटकाने में सफल रहता हूं तो यह लगातार 16 अच्छी गेंदें फेंकने से बेहतर है।% रेहान ने दिसंबर 2022 में पाकिस्तान के खिलाफ पदार्पण किया था। वह इंग्लैंड के लिए सबसे कम उम्र (तब 18 साल 126 दिन) टेस्ट पदार्पण करने वाले खिलाड़ी है।

टी20 विश्व कप में सर्वश्रेष्ठ तेज गेंदबाज होंगे बुमराह, दक्षिण अफ्रीका के पूर्व तेज गेंदबाज का बयान

जोहानिसबर्ग। सभी प्रारूपों में जसप्रीत बुमराह के हालिया प्रदर्शन से प्रभावित दक्षिण अफ्रीका के पूर्व मध्यम तेज गेंदबाज वेर्नोन फिलैंडर ने कहा है कि वह इस साल होने वाले टी विश्व कप में भारत की सफलता की कुंजी रहने के साथ सर्वश्रेष्ठ तेज गेंदबाज भी साबित होंगे।

इंग्लैंड के खिलाफ विशाखापत्तनम में दूसरे टेस्ट में नौ विकेट लेकर भारत को 91 रन से जीत दिलाकर श्रृंखला में 1.1 से वापसी कराने वाले बुमराह आईसीसी टेस्ट गेंदबाजों की रैंकिंग में शीर्ष पर पहुंचने वाले पहले भारतीय तेज गेंदबाज बन गए हैं। इससे पहले कपिल देव दिसंबर 1979 से फरवरी 1980 के बीच दूसरे नंबर पर पहुंचे थे।

फिलैंडर ने विशेष इंटरव्यू में कहा, 'बुमराह इस समय मुकम्मिल गेंदबाज है। उनके पास जबर्दस्त कौशल है और उन्होंने सटीक गेंदबाजी का हुनर सीख लिया है जिससे टेस्ट क्रिकेट में इतनी सफलता मिल रही है। पहले वह हर समय विकेट लेने वाली गेंद फेंकना चाहते थे जिससे महंगे साबित होते थे लेकिन अब उनके प्रदर्शन में निरंतरता है।%

उन्होंने कहा, 'वह ऐसे गेंदबाज हैं जिन्हें टी20 क्रिकेट में भी कभी कमतर नहीं आंका जा सकता। वह नयी गेंद से स्विंग कराते हैं और बल्लेबाज को आगे बढ़कर खेलने के लिये मजबूर करते हैं। उनके यॉर्कर काफी धारदार होते हैं और टी20 क्रिकेट में यही तो चाहिए। मुझे लगता है कि वह टी20 विश्व कप में सबसे कामयाब तेज गेंदबाज होंगे।%

टी20 विश्व कप जून में वेस्टइंडीज और अमेरिका में खेला जाएगा।उन्होंने मोहम्मद शमी की भी तारीफ करते हुए कहा कि वह गेंद को बखूबी स्विंग कराते हैं। दक्षिण अफ्रीका के लिये 64 टेस्ट में 224 विकेट लेने वाले इस गेंदबाज ने कहा, 'भारत के मौजूदा तेज गेंदबाजों से मैं काफी प्रभावित हूं।

बुमराह के अलावा मोहम्मद शमी भी हैं जो सीम का बखूबी इस्तेमाल करते हैं। दक्षिण अफ्रीका में गेंदबाजी करना आसान नहीं होता लेकिन भारत की सपाट पिचों पर गेंदबाजी करने के बाद उन्होंने जिस तरह यहां गेंदबाजी की, वह काबिले तारीफ है।%

फिलैंडर ने कहा कि विदेशी सरजमीं पर उम्दा प्रदर्शन करने वाले तेज गेंदबाजों का टीम में होना भारतीय क्रिकेट के लिए अच्छा संकेत है। उन्होंने कहा, 'जब भी भारतीय टीम यहां आती है तो पिछली बार से बेहतर प्रदर्शन करती है। उपमहाद्वीप में स्पिनरों ने भारत को मैच जिताए हैं लेकिन अब उसके पास मैच जिताने वाले तेज गेंदबाज भी हैं। भारत को आस्ट्रेलिया में जीतते देखकर अच्छा लगा जिसका श्रेय विराट कोहली को भी जाता है जब उनकी कप्तानी में गेंदबाजों के प्रदर्शन में निखार देखने को मिला था।%

वह 2019 में ऑस्ट्रेलिया में खेली गई श्रृंखला का जिक्र कर रहे थे जब विराट कोहली की कप्तानी में पहली बार भारत ने आस्ट्रेलिया को उसकी सरजमीं पर टेस्ट श्रृंखला में हराया था। भारत के खिलाफ पांच घरेलू टेस्ट (2013 और 2018) में 25 विकेट लेने वाले फिलैंडर ने कहा कि कोहली उनके लिए सबसे कठिन बल्लेबाज साबित हुए हैं। उन्होंने कहा, 'भारत जैसे मजबूत बल्लेबाजी क्रम का सामना करना अच्छा लगता रहा है। मानसिक मजबूती के पैमाने पर देखा जाए तो कोहली काफी खतरनाक है और गेंदबाजों के लिये कड़ी चुनौती पेश करते हैं।%

टी20 विश्व कप से ठीक पहले आईपीएल होने से खिलाड़ियों के चोटिल होने या थकान के मसले पर उन्होंने कहा कि गेंदबाजों का सही प्रबंधन करना जरूरी है। उन्होंने कहा, 'आईपीएल टी20 विश्व कप की तैयारी के लिये बेहतरीन प्लेटफॉर्म है लेकिन इसमें काफी मैच खेलने होंगे। यह सुनिश्चित करना होगा कि तेज गेंदबाजों का प्रबंधन बखूबी हो।%

अपने करियर में आईपीएल नहीं खेल सके फिलैंडर अब कोच या सलाहकार के रूप में इस लीग से जुड़ना चाहते हैं। उन्होंने कहा, 'आईपीएल ऐसा टूर्नामेंट है जिससे आप कभी ना कभी जुड़ना जरूर चाहेंगे। शायद कोच और सलाहकार के तौर पर मेरे लिए दरवाजे खुलेंगे ताकि मैं युवा खिलाड़ियों के साथ अनुभव साझा कर सकूं। बेतवे दक्षिण अफ्रीका 20 की तारीफ करते हुए उन्होंने कहा, 'मैदान में इतनी भीड़ पहली बार देखकर बहुत अच्छा लग रहा है। दक्षिण अफ्रीकी क्रिकेट को मजबूत करने के लिए इस तरह की पहल की जरूरत थी।%

एमबापे ने दागा गोल, ब्रेस्ट को हराकर PSG फ्रेंच कप के क्वार्टर फाइनल में पहुंचा

पेरिस। किलियान एमबापे ने मौजूदा सत्र का अपना 30वां गोल दागा जिससे पेरिस सेंट-जर्मेन (पीएसजी) ने ब्रेस्ट पर 3-1 से जीत के साथ फ्रेंच कप फुटबॉल के क्वार्टर फाइनल अपनी जगह पक्की की। इस जीत के साथ ही टीम का अजेय क्रम 15 मैचों तक पहुंच गया। पीएसजी के साथ जून में मौजूदा अनुबंध के खत्म होने के बाद रीयल मैड्रिड जाने की अटकलों के बीच एमबापे इस सत्र में शानदार लय में है।

'ओप्टा% के आंकड़ों के मुताबिक फेंच कप के 28 मैचों में उन्होंने 35 गोल किए हैं और 15 गोल में दूसरे खिलाड़ियों की मदद की है। पिछले चार मैचों में उन्होंने 11 गोल दागे हैं। उन्होंने मैच के 34वें मिनट में टीम का खाता खोला जिसके तीन मिनट के बाद डानिलो पेरेरा ने टीम की बढ़त को दोगुना कर दिया। मध्यांतर के बाद एमबापे टीम को 3-0 से आगे करने से चूक गये जब उनका प्रयास क्रॉसबार से टकराकर विफल हो गया।

स्टीव मौनी ने 65वें मिनट में गोल कर ब्रेस्ट की वापसी कराई लेकिन कोनकालोस रामोस ने आखिरी क्षणों (90+ दो मिनट) में पीएसजी को 3-1 से आगे कर दिया। अन्य मुकाबलों में सात बार के फ्रांस के चैंपियन लियोन ने लिली के खिलाफ 2-1 से जीत के साथ क्वार्टर फाइनल में जगह पक्की की। नीस ने मोंटपेलियर को 4-1 से शिकस्त देकर अंतिम आठ में जगह बनाई।

यह भारत के लिए एक झटका है, कोहली के अगले दो टेस्ट न खेलने की खबरों पर बोले नासिर हुसैन

नई दिल्ली। इंग्लैंड के पूर्व कप्तान नासिर हुसैन ने अपने निजी जीवन को प्राथमिकता देने के विराट कोहली के फैसले का समर्थन किया, लेकिन उनका मानना है कि उनकी अनुपस्थिति भारत के लिए एक बड़ा %झटका% होगी। रिपोर्ट के मुताबिक इंग्लैंड के खिलाफ पहले दो टेस्ट मैचों से अनुपस्थित रहने वाले विराट इंग्लैंड के खिलाफ राजकोट और रांची में होने वाले तीसरे और चौथे टेस्ट मैच में नहीं खेलेंगे।

हुसैन ने कहा, %विराट कोहली खेल के अब तक के सबसे महान बल्लेबाजों में से एक हैं और किसी भी सीरीज और किसी भी टीम को कोहली जैसे कद वाले खिलाड़ी की कमी खलेगी। खेल को कोहली जैसे खिलाड़ियों का भी ख्याल रखने की जरूरत है। वह और अधिक के लिए अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट खेल रहे हैं। अब 15 साल से अधिक हो गए हैं और अगर उन्हें खेल से कुछ समय के लिए परिवार के साथ रहने के लिए छुट्टी की जरूरत है तो हम विराट कोहली को शुभकामनाएं देते हैं। इसका मतलब है कि हमारे पास एंडरसन-कोहली मुकाबले की वैसी रोमांचक संभावना नहीं है जैसी हमने देखी है। पिछले कुछ वर्षों में ऐसा ही होगा।%

अगर कोहली तीसरे और चौथे टेस्ट में चूकते हैं तो भारत को निश्चित रूप से बल्लेबाजी विभाग में एक बड़ी कमी को पूरा करना होगा। रजत पाटीदार को कोहली के प्रतिस्थापन के रूप में नामित किया गया था लेकिन वह मौके का फायदा उठाने में असफल रहे। केएल राहुल और रवींद्र जड़ेजा भी चोट के कारण दूसरे टेस्ट में नहीं खेल पाए। नासिर के लिए अगर राहुल तीसरे टेस्ट के लिए फिटनेस हासिल करने में सक्षम हैं, तो वह एक ऐसे खिलाड़ी होंगे जो भारत की बल्लेबाजी में गहराई जोड़ सकते हैं।

डेरिल मिचेल एसए के खिलाफ दूसरे टेस्ट से हुए बाहर

केन विलियमनस को मिल सकता है ब्रेक

वैलिंग्टन, एजेंसी। न्यूजीलैंड के हरफनमौला डेरिल मिचेल पैर की चोट के कारण साउथ अफ्रीका के खिलाफ आगामी दूसरे टेस्ट से बाहर हो गए हैं। इसके अलावा, वह ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ घरेलू टी20 सीरीज के लिए भी उपलब्ध नहीं होंगे। टीम मैनेजमेंट चाहता है कि मिशेल कंगारुओं के खिलाफ टेस्ट सीरीज से पहले पूरी तरह से फिट हो जाएं। इस वजह से उन्हें इतना लंबा ब्रेक दिया गया है।

मिचेल सभी फॉर्मेट में कीवी टीम के एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी हैं और वे उम्मीद कर रहे होंगे कि उसके पैर की चोट गंभीर न हो। वह पिछले छह-सात महीनों से अपनी चोट को मैनेज कर रहे हैं, लेकिन मुख्य कोच गैरी स्टीड का कहना है कि यह मिशेल के लिए चोट से पूरी तरह से उबरने का सबसे अच्छा मौका है। कोच ने कहा कि हमने पहले भी उन्हें आराम दिया, मगर मेडिकल एड्वाज लेने के बाद पता चला कि उन्हें लंबे ब्रेक की जरूरत है। यह वास्तव में कठिन है, क्योंकि अगले कुछ समय में ब्रेक लेने के लिए उन्हें ज्यादा मौके नहीं मिलेंगे, इस वजह से हमने उन्हें तीन हफ्ते का आराम लेने के लिए कहा है। उम्मीद है कि वह पूरी रिकवरी के साथ वापसी करेंगे।

मिशेल लगभग छह या सात महीने से इस चोट से जूझ रहे हैं और उन्हें जनवरी में पाकिस्तान के खिलाफ अंतिम टी20 मैच से आराम दिया गया था, लेकिन अब यह निर्णय लिया गया है कि खुद को सर्वश्रेष्ठ मौका देने के लिए उन्हें लंबे समय तक बाहर रहने की जरूरत है। उम्मीद है कि वह ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ आगामी दो टेस्ट मैचों की सीरीज में वापसी करेंगे। इसके अलावा केन विलियमसन के ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टी-20 सीरीज के लिए उपलब्ध होने की संभावना नहीं है, क्योंकि उनकी पत्नी तीसरे बच्चे को जन्म देने वाली है।

न्यूजीलैंड को लगा झटका, डेरिल मिशेल दूसरे टेस्ट और टी20 श्रृंखला से बाहर

सिडनी। न्यूजीलैंड के बल्लेबाज डेरिल मिशेल को पैर की चोट के कारण दक्षिण अफ्रीका के साथ होने वाले दूसरे टेस्ट और ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टी-20 श्रृंखला से बाहर कर दिया गया है। मिशेल पिछले छह सात महीने से चोट की चोट की समस्या से जूझ रहे है। उन्होंने टेस्ट क्रिकेट में 53.46 की औसत से रन बनाए है।

चोट के कारण उन्हें जनवरी में पाकिस्तान के खिलाफ अंतिम टी-20 मैच से आराम दिया गया था। लेकिन अब टीम के चयनकर्ताओं ने मिशेल को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ होने वाली दो टेस्ट मैचों की सीरीज के लिए सर्वश्रेष्ठ देने और पूरी तरह फीट होने के लिए लंबे समय तक टीम से बाहर रखने का फैसला किया है।

न्यूजीलैंड के कोच गैरी स्टीड ने कहा, 'हमने पहले उन्हें थोड़ा आराम देने का फैसला लिया, लेकिन इस पर चिकित्सकीय सलाह लेने के बाद यह संभावना है कि उन्हें लंबे समय तक आराम की जरूरत है।% उन्होंने कहा, 'यह वास्तव में कठिन है, क्योंकि अगले सप्ताह में बहुत अधिक ब्रेक नहीं आने वाले हैं, जबकि ऐसा सोचा गया था कि इससे हमें प्रयास करने और उसे फिर से सर्वोत्तम का मौका देने के लिए करीब तीन सप्ताह का समय मिलता है।%

उन्होंने कहा, 'इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि यह उस अवधि में भी प्रयाप्त होगी, लेकिन हमें पूरी उम्मीद है कि इससे उनके हमारे साथ लंबे समय तक रहने की संभावना में सुधार होगा।% ऐसा माना जा रहा है कि मिशेल के स्थान पर विल यंग को टीम में अतिरिक्त बल्लेबाज के रूप में शामिल किया जा सकता हैं। हालांकि, इस बात की संभावना बनी हुई है कि ग्लेन फिलिप्स और मिशेल सैंटनर के क्रम में आगे बढ़ने से टीम को फिर से संतुलित किया जा सकता है।

स्टीड ने कहा, '(विल यंग) निश्चित रूप से विकल्पों में से एक है।% उन्होंने कहा, 'विल बैक अप के रूप में है और ग्लेन फिलिप्स ने दिखाया है कि वह उपयोगी से अधिक है और इसे अलग तरीके से आकार दिया जा सकता है। हमारे पास जो टीम है उससे हम बहुत खुश हैं। डेरिल की स्पष्ट रूप से एक बड़ी क्षति है, हालांकि, उन्होंने कई उत्कृष्ट प्रदर्शनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है बल्लेबाजी प्रदर्शन लेकिन यह उनके और हमारे लिए महत्वपूर्ण है कि हम इसे लंबे समय तक सही रखें।%

उन्होंने कहा, 'अगर हम उसे चुनना चाहते हैं तो ट्रेंट उपलब्ध है।% उन्होंने कहा, 'वह और मैं अभी भी बातचीत कर रहे हैं...उम्मीद है कि अगले कुछ दिनों में यह पता चल जाएगा कि यह कैसा दिखता है।%

दिल्ली में मौसम के बदले तेवर, धूप खिली लेकिन सर्द हवाओं ने ठिठुरन बढ़ाई

नईदिल्ली, एजेंसी।
दिल्ली में हवा की रफ्तार बढ़ने से प्रदूषण से बड़ी राहत मिली है। ठंडी हवाओं के चलने से प्रदूषण घटा है, लेकिन ठिठुरन बढ़ गई है। बुधवार को दिल्ली का एक्यूआई 175 अंकों के साथ मध्यम श्रेणी में रहा। वहीं, नजफगढ़ सबसे कम प्रदूषित क्षेत्र रहा। बीते तीन दिनों से हवा की गति बढ़ने से प्रदूषण के लिए जिम्मेदार कणों का तेजी से बिखराव हो रहा है। इस कारण लोग तीन महीने बाद साफ हवा में सांस ले पा रहे हैं। बुधवार को सुबह-शाम बर्फीली हवाएं चलीं।

पिछले कुछ दिनों में कोहरा भी कम हुआ है। वहीं सबसे अधिक प्रदूषित पूसा रहा जहां एक्यआई 276 दर्ज किया गया। विशेषज्ञों के अनुसार, अगले दो दिनों तक एक्यूआई मध्यम श्रेणी में ही बना रहेगा। गुरुवार को दिल्ली में हवा की रफ्तार 12 से 20 किलोमीटर प्रतिघंटा रहेगी। वहीं, शुक्रवार को 6 से 12 किलोमीटर प्रतिघंटा रहने का अनुमान है। शनिवार से हवा की रफ्तार घटने से प्रदूषण में बढ़ोत्तरी देखने को

मिलेगी। ठंडक बनी रहेगी। बुधवार को हवा की गति 10 से 24 किलोमीटर प्रतिघंटा रही। गुरुवार को भी 12 से 20 किलोमीटर प्रतिघंटा की रफ्तार से हवा चलने का अनुमान है। बुधवार को दिल्ली का अधिकतम तापमान 20.7 डिग्री दर्ज किया गया जो सामान्य से तीन डिग्री ज्यादा है। न्यूनतम तापमान 6.9 डिग्री दर्ज किया गया जो सामान्य से तीन डिग्री कम है। अगले चार से पांच दिनों तक दिल्ली में न्यूनतम तापमान सात डिग्री के आसपास बने रहने का अनुमान है। मौसम कार्यालय ने गुरुवार को आसमान साफ रहने और दिन में 20-30 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से सतही हवाएं चलने का पूर्वानुमान जताया है। अधिकतम तापमान 21 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के आंकड़ों के मुताबिक बुधवार सुबह आठ बजे दिल्ली का वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 174 रहा जो मध्यम श्रेणी में है। शून्य और 50 के बीच एक्यूआई को अच्छा, 51 और 100 के बीच संतोषजनक, 101 और 200 के बीच मध्यम, 201 और 300 के बीच खराब, 301 और 400 के बीच बेहद खराब और 401 और 500 के बीच गंभीर माना जाता है।

संक्षिप्त समाचार

सर्विकल कैंसर टीकाकरण से जुड़ी घोषणा के लिए भारत की सराहना की

वाशिंगटन , एजेंसी। एक प्रतिष्ठित भारतीय-अमेरिकी कैंसर विशेषज्ञ (रेडिएशन ऑन्कोलॉजिस्ट) ने भारतीय बजट में सर्विकल कैंसर से बचाव के लिए नौ से 14 वर्ष की लड़कियों के टीकाकरण को लेकर की गई घोषणा की बुधवार को सराहना की। डॉ. दत्तात्रेयुडु नोरी ने पीटीआई से कहा, ''बजट में सर्विकल कैंसर के लिए निवारक कार्यक्रमों पर जोर भारत में एक महत्वपूर्ण जन स्वास्थ्य समस्या को हल करने की दिशा में एक सराहनीय कदम है। सर्विकल कैंसर से बचाव के लिए 9-14 वर्ष की लड़कियों को टीका लगाने की पहल विशेष रूप से सराहनीय है, क्योंकि यह बीमारी देश में प्रतिदिन 150 से अधिक महिलाओं की जान ले लेती है चिकित्सा के क्षेत्र में अपने योगदान के लिए वर्ष 2015 में पद्मश्री से सम्मानित डॉ. नोरी ने कहा कि सर्विकल कैंसर भारत में महिलाओं में पाया जाना वाला दूसरा सबसे आम कैंसर है जिसके हर साल 85,000 से अधिक नए मामले सामने आते हैं और हर साल इससे लगभग 50,000 मौतें होती हैं। वर्ष 2022 में 14.6 लाख कैंसर के मामले सामने आए थे जिनके वर्ष 2025 में बढ़कर 15.7 लाख होने का अनुमान है। डॉक्टर नोरी ने 'मेमोरियल स्लोअन केटरिंग कैंसर सेंटर% और कॉर्नेल विश्वविद्यालय के 'न्यूयॉर्क-प्रेस्बिटेरियन अस्पताल% जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने कैंसर के उपचार के लिए अपना पूरा जीवन सपर्पित कर दिया है।

लापता सैन्य हेलीकॉप्टर की मिली जानकारी, पांच नौ सैनिकों की तलाशी अभी भी जारी

वॉशिंगटन एजेंसी। अमेरिका में सुपर स्टैलियन हेलीकॉप्टर अचानक से लापता हो था। हालांकि, बुधवार यूएस मरीन कॉर्प्स ने विमान के मिलने की जानकारी दी। हालांकि, इस हेलीकॉप्टर में सवार पांच नौसैनिक की तलाश अभी भी जारी है। 6 फरवरी, 2024 को सुपर स्टैलियन हेलीकॉप्टर मरीन क्रीच एयर फोर्स बेस से मरीन कॉर्प्स एयर स्टेशन मिरामार के लिए रवाना हुआ था, लेकिन हेलीकॉप्टर विमान स्टेशन नहीं पहुंचा। अधिकारियों ने हेलीकॉप्टर को पाइन वैली, कैलिफोर्निया में ढूंढ लिया। यूएस मरीन कॉर्प्स ने आगे जानकारी दी कि सैन डिएगो काउंटी शेरिफ विभाग और कई संघीय, राज्य और स्थानीय एजेंसियों के समन्वय में विमान चालक दल का पता लगाने के लिए जमीनी और विमानन संपत्तियों का उपयोग कर रहा है। मरीन कॉर्प्स ने हेलीकॉप्टर के साथ अवशेष मिलने का कोई उल्लेख नहीं किया, जिससे संकेत मिलता है कि उसमें सवार लोग बच गए होंगे। पिछले साल नवंबर में जापान के तट पर वी-22 ऑस्प्रे टिल्ट-रोटर विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया था, जिसमें आठ वायुसैनिकों की मौत हो गई थी।

यूक्रेन और इजरायल के लिए बुरी खबर, यूएस सीनेट ने 118 अरब डॉलर के पैकेज पर लगाई ब्रेक

न्यूयार्क , एजेंसी। अमेरिकी संसद के उच्च सदन (सीनेट) ने युद्ध में घिरे इस्राइल और यूक्रेन को मदद मुहैया कराने के लिए 9.7 लाख करोड़ रुपये (118.2 अरब डॉलर) के पैकेज पर मुहर लगा दी थी। हालांकि, रिपब्लिकन ने बुधवार को इस पैकेज मुहैय्या कराने पर ब्रेक लगा दी। अमेरिकी सीनेट में राष्ट्रपति जो बाइडेन की अपील के बावजूद रिपब्लिकन पार्टी के समर्थन वापस लेने के कारण सीमा प्रवर्तन उपायों और यूक्रेन को मदद देने संबंधी एक प्रस्ताव मंगलवार को गिर गया। बाइडन ने इस प्रस्ताव के गिरने के लिए पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को जिम्मेदार ठहराया है। रिपब्लिकन के विरोध के बाद डेमोक्रेटिक पार्टी के नेता चक शूमर का कहना है कि इस मामले पर एक जल्द वोटिंग कराई जाएगी। बता दें कि संसद में पास हुए प्रस्ताव के तहत अमेरिका अब कुल राशि में से लगभग आधी यानी 60.1 अरब डॉलर (करीब 4 लाख 98 हजार करोड़ रुपये) की राशि यूक्रेन की मदद के लिए तय की गई थी। वहीं, इजरायल की मदद के लिए 14.1 अरब डॉलर (करीब 1.1 लाख करोड़ रुपये) तय किए गए थे।

अचानक हमास का नाम भूल गए बाइडन, अमेरिकी राष्ट्रपति ने मांगी माफी

वॉशिंगटन एजेंसी। हमास के खिलाफ युद्ध में अमेरिका इजरायल के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा है। वहीं, दूसरी ओर अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन युद्ध विराम की वकालत भी कर रहे हैं। इसी बीच अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन का एक वीडियो सोशल मीडिया पर काफी वायरल हो रहा है, जिसमें देखा जा सकता है कि बातचीत के दौरान वो हमास का नाम ही भूल गए। उन्होंने हमास के जगह विपक्षी आंदोलन शब्द का इस्तेमाल किया। हालांकि, थोड़ी देर बाद कुछ लोगों ने उन्हें याद दिलाया कि वो हमास की बात कर रहें हैं, फिर उन्होंने माफी मांगते हुए हमास कहते हुए बातचीत की। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार हमास ने जिन नागरिकों को बंधक बनाया है उन्हें रिहा करने को लेकर इजरायल के साथ चर्चा से जुड़े एक सवाल का जवाब देते वक्त बाइडन हमास का नाम भूल गए। 81 वर्षीय राष्ट्रपति जो बाइडन के स्वास्थ्य को लेकर भी काफी चर्चा होती है। वहीं, वो आगामी राष्ट्रपति चुनाव में डेमोक्रेटिक के दावेदार माने जा रहे हैं। अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन की इजरायल में नेताओं से मुलाकात से पहले बुधवार को हमास ने इजरायली बंधकों की रिहाई के संबंध गाजा में 135 दिनों के युद्ध विराम की योजना का मसौदा दिया।

दिल्ली जल बोर्ड में भ्रष्टाचार से मिली रिश्वत की रकम चुनावी कोष के तौर पर आप को दी गई

नईदिल्ली, एजेंसी। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने बुधवार को आरोप लगाया कि जल बोर्ड घोटाले का पैसा आप नेताओं को दिया गया। पैसा आम आदमी पार्टी के इलेक्शन फंड के लिए भी दिया गया। संघीय एजेंसी ने एक बयान में कहा कि डीजेबी से जुड़े कथित मनी लॉन्ड्रिंग मामले में मंगलवार की छापेमारी के बाद 1.97 करोड़ रुपये मूल्य का सामान और चार लाख रुपये की विदेशी मुद्रा जब्त की गई।

इसने कहा कि छापेमारी के दौरान आपत्तिजनक दस्तावेज और डाटा भी जब्त किए गए। ईडी ने दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल के निजी सहायक बिभव कुमार, आप के राज्यसभा सदस्य एन.डी. गुप्ता और अन्य लोगों के परिसरों की मंगलवार को तलाशी ली थी। एजेंसी ने कहा कि गिरफ्तार किए गए डीजेबी के पूर्व मुख्य अभियंता जगदीश कुमार अरोड़ा ने एनकेजी इन्फ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड नामक कंपनी को डीजेबी का ठेका देने के बाद रिश्वत की रकम नकद और बैंक खातों में प्राप्त की थी और उन्होंने इस पैसे को डीजेबी के मामलों का प्रबंधन करने वाले विभिन्न व्यक्तियों और आप से जुड़े लोगों को भी दिया। ईडी ने दावा किया, रिश्वत की रकम आप को चुनावी कोष के तौर पर भी दी गई।

रेलवे ने विदेशी आपूर्तिकर्ता को किया 6.85 करोड़ का अनियमित भुगतान

नईदिल्ली, एजेंसी। भारतीय रेलवे के बनारस लोकोमोटिव व?र्क्स (बीएलडब्ल्यू) ने डीजल इंजनों के लिए 2017 में एक विदेशी विक्रेता से 6.85 करोड़ रुपये के उपकरण खरीदे, जिनका उत्पादन पहले ही बंद हो चुका था। लोक लेखा समिति (पीएसी) ने अपनी रिपोर्ट में यह जानकारी दी है। समिति ने बुधवार को लोकसभा में अपनी यह रिपोर्ट पेश की। उसने आश्चर्य व्यक्त किया कि विक्रेता ने खरीद समझौते का उल्लंघन करते हुए इन उपकरणों की डिलीवरी तय समय के बाद की जबकि बीएलडब्ल्यू को इन्हें अस्वीकार करना चाहिए था। रेलवे बोर्ड ने मई 2016 में बीएलडब्यू में इलेक्ट्रिक इंजन बनाने का फैसला किया रिपोर्ट में कहा गया है कि हालांकि वह लगभग 36 प्रतिशत रियायती मूल्य पर खरीदने पर सहमत हुआ था। यह मामला डीजल इंजनों के निर्माण के लिए 660 चैनल एयर बाक्स की खरीद से संबंधित है। रिपोर्ट के मुताबिक रूटों के बढ़ते विद्युतीकरण को देखते हुए रेलवे बोर्ड ने मई 2016 में बीएलडब्ल्यू में इलेक्ट्रिक इंजन बनाने का फैसला किया और इसकी शुरुआत फरवरी 2017 से की गई। समिति ने डिलीवरी अवधि को बढ़ाया 2019-20 से बीएलडब्ल्यू में डीजल इंजनों का उत्पादन पूरी तरह से बंद कर दिया गया।

अमेरिका में भारतीय छात्रों की मौत का रहस्य गहराया

न्यूयॉर्क एजेंसी। इंडियाना राज्य में स्थित प्रतिष्ठित पर्ड्यू विश्वविद्यालय में डॉक्टरेट की पढ़ाई कर रहा एक भारतीय छात्र इस हफ्ते मृत पाया गया था। इस मामले में अधिकारियों ने बताया कि छात्र ने खुद को गोली मारकर आत्महत्या की है। उसके सिर में गोली लगी है। पर्ड्यू विश्वविद्यालय की एक समाचार एजेंसी के अनुसार, समीर कामथ को पांच फरवरी की शाम करीब पांच बजे मृत पाया गया था। उनका शव विश्वविद्यालय के क्रो ग्रोव में हृढ्ढष्ठ॥श्वस्भूमि ट्रस्ट पर मिला था, जो एक प्रकृति संरक्षित क्षेत्र है। वॉरेन काउंटी के कोरोनर जस्टिन ब्रुमेट ने बुधवार को बताया था कि इंडियाना के क्रॉफर्ड्सविले में छह फरवरी को कामथ का फोरेंसिक पोस्टमार्टम किया गया था। ब्रुमेट के कार्यालय ने एक प्रेस विज्ञप्ति जारी कर बताया कि कामथ की मौत सिर में गोली लगने की वजह से हुई है। यह आत्महत्या का मामला है। उसने खुद को गोली मारी है। हालांकि, एक रिपोर्ट इस मामले में अभी और सामने आनी है। विज्ञप्ति में कहा गया है, कई अन्य स्थानीय और संघीय एजेंसियों के साथ मिलकर जांच की गई है। इससे मौत का कारण साफ है।

अतीक अहमद की ग्रेटर नोएडा वाली कोठी मन्नत कुर्क, ढोल बजाकर कार्रवाई

पांच करोड़ है मकान की कीमत

नईदिल्ली, एजेंसी।
कुख्यात माफिया अतीक अहमद का ग्रेटर नोएडा पुलिस ने सेक्टर-36 में बना मकान कुर्क कर लिया। तीन मंजिला इस मकान की कीमत करीब पांच करोड़ बताई गई है। प्रयागराज कमिश्नरेट में दस्तावेजों की जांच और सुनवाई के बाद अतीक अहमद के मन्नत नामक इस घर को अटैच करने का आदेश पुलिस कमिश्नर रमित शर्मा ने दिया था। इसके बाद ग्रेटर नोएडा पुलिस ने कुर्की की कार्रवाई की है। दरअसल, उमेश पाल हत्याकांड के बाद कुख्यात माफिया अतीक अहमद की ग्रेटर नोएडा में संपत्ति होने की बात सामने आई थी। इसके बाद पुलिस ने इस मकान को अपने कब्जे में लिया था।

प्रयागराज पुलिस कई बार ग्रेटर नोएडा आकर जांच करने के साथ दस्तावेज खंगाले थे। इसके बाद

ग्रेटर नोएडा विकास प्राधिकरण से रिपोर्ट मांगी गई थी। विक्रेता, गवाहों से दस्तावेज, बैंक खातों की डिटेल ली गई थी। इसके बाद पता चला कि मन्नत नाम का यह मकान अतीक अहमद के नाम है। इसके बाद इस मकान को कुर्क करने के आदेश जारी हुए। प्रयागराज पुलिस आयुक्त न्यायालय के आदेश पर ग्रेटर नोएडा पुलिस ने बुधवार को सेक्टर 36 स्थित माफिया के मकान को एडीसीपी अशोक कुमार और एसीपी रामकृष्ण तिवारी की अगुवाई में ढोल बजाकर कुर्क करने की कार्रवाई की गई। बहुचर्चित उमेश पाल हत्याकांड के बाद अतीक का बेटा असद और शूटर गुलाम कानपुर होते हुए ग्रेटर नोएडा पहुंचे थे। पुलिस जांच से साफ हुआ कि असद और गुलाम कुछ मिनट के लिए अतीक के मन्नत नाम के इस मकान में पहुंचे थे।

पुलिस ने शक जाहिर किया था कि यहां पहले से कैश छिपाया गया था, जिसे लेने के लिए दोनों घर के अंदर गए थे। 90 वर्ग मीटर का प्लॉट अतीक अहमद को 9 मार्च 1994 में अलॉट किया गया था, जिसकी अलॉटमेंट आईडी उ-13018 है। इस मकान में एक राजमिस्त्री पप्पू का परिवार रहता था। पप्पू ने पुलिस को बताया था कि छह साल पहले उसे एक व्यक्ति ने घर का रखरखाव करने के लिए रखा था। उसके बाद से वह वापस नहीं आया। अतीक के बेटे ने यहां रहकर ग्रेटर नोएडा के एक नामी कॉलेज से पढ़ाई की थी। बताया गया था अतीक अहमद कभी-कभी यहां पर आता था। और इसी मकान पर अतीक को रंगदारी और वसूली की रकम अदा की जाती थी।

ट्रेवल एजेंसी की आड़ में चला रहे थे कबूतरबाजी, तीन गिरफ्तार

नईदिल्ली, एजेंसी। आईजीआई एयरपोर्ट पुलिस ने कबूतरबाजी के एक मामले में तीन दिनों के भीतर तीन एजेंट गिरफ्तार किए हैं। इनमें ट्रेवल एजेंसी चलाने वाला शख्स और एक अधिवक्ता शामिल है। पुलिस ने बीते रविवार को उदित मोगा, सोमवार को सागर डबास और मंगलवार को केवल सिंह को गिरफ्तार किया। आरोपियों ने एक यात्री को नवंबर 2022 में गुयाना का फर्जी वीजा देकर इस्तानबुल भेज दिया था। डीसीपी उषा रंगनानी के अनुसार 19 नवंबर 2022 को गुरमीत सिंह, साहिल कुमार और विक्रम सिंह को इस्तानबुल से डिपोर्ट कर आईजीआई एयरपोर्ट भेजा गया था। उनके दस्तावेजों से पता चला कि एयरपोर्ट से गुरप्रीत सिंह सात नवंबर को जबकि, जयपुर एयरपोर्ट से साहिल कुमार 16 नवंबर और विक्रम सिंह 14 नवंबर को बाकू (अजरबैजान) गए थे। वहां से तीनों 18 नवंबर को इस्तानबुल पहुंचे, जहां फर्जी वीजा होने के चलते उन्हें प्रवेश नहीं मिला। इसके बाद मामला दर्ज कर एयरपोर्ट पुलिस ने तीनों यात्रियों को गिरफ्तार कर लिया था। साहिल ने बताया कि केवल सिंह, मोगा सिंह और सागर डबास ने उसे गुयाना का फर्जी वीजा दिया था। 20 लाख रुपये में उनका सौदा तय हुआ। उसने दो लाख रुपये पहले दिए थे, जबकि बकाया वहां पहुंचने के बाद देना था। उसकी गिरफ्तारी के बाद से यह एजेंट लगातार फरार चल रहे थे। इस दौरान पता चला कि उदित मोगा दिल्ली में ही छिपा हुआ है। इस पर एसएचओ विजेन्द्र राणा की देखरेख में एसआई सरोज की टीम ने छापा मारकर उसे गिरफ्तार कर लिया। आरोपी ने बताया कि वह महिपालपुर में ट्रेवल एजेंसी चलाता है। वह पहले टिकट और मनी एक्सचेंज का काम करता था। इस दौरान उसकी दोस्ती केवल सिंह और सागर डबास से हुई। तीनों मिलकर लोगों को विदेश भेजने के नाम पर फर्जीवाड़ा करने लगे। उसकी निशानदेही पर पुलिस ने लाडपुर गांव से सागर डबास को गिरफ्तार कर लिया।

नौकरी लगवाने के नाम पर ठगी? फर्जी आईडी से नॉर्थ ब्लॉक में घुसने की कोशिश; पुलिस के हत्थे चढ़ा युवक

नईदिल्ली, एजेंसी।
दिल्ली पुलिस ने फर्जी पहचान पत्र से नॉर्थ ब्लॉक स्थित गृह मंत्रालय के ऑफिस में घुसने की कोशिश करने वाले युवक को मंगलवार को गिरफ्तार किया है। आरोपी का नाम आदित्य प्रताप सिंह है। वह किस मकसद से फर्जी आईडी पर अंदर घुस रहा था, फिलहाल इसकी जांच की जा रही है। प्रारंभिक जांच में मामला जालसाजी के तहत अंदर घुसने का माना जा रहा है। बहरहाल जांच एजेंसियां आरोपी से पूछताछ कर रही हैं।

माना जा रहा है कि आदित्य किसी से जालसाजी करने के इरादे से अंदर घुसा था। हालांकि, जांच एजेंसियां इसकी गिरफ्तारी की पुष्टि तो कर रही हैं, लेकिन अभी कारणों को लेकर कोई स्पष्ट बयान नहीं दिया है। आरोपी को जब पकड़ा गया तो शक के आधार पर उससे स्पेशल सेल और आईबी ने पूछताछ की, लेकिन जब मामला जालसाजी का निकला तो उसे स्थानीय पुलिस के हवाले कर दिया गया।

आरोपी आदित्य अयोध्या के पास के किसी गांव का रहने वाला है। इसका खुलासा तब हुआ, जब वह नॉर्थ ब्लॉक में घुसने की कोशिश कर रहा था। दरअसल वहां मौजूद सुरक्षाकर्मियों ने उसके द्वारा दिए गए पहचान पत्र की जांच की तो वह फर्जी पाया गया। इसके बाद घटना की जानकारी पुलिस को दी गई। वह सरकारी विभाग में स्टेनो के पद पर काम करता है।

आरोपी पर ठग होने का शक है। अब तक की जांच में पता चला है कि वह मंत्रालय में नौकरी की पेशकश

के नाम पर लोगों से ठगी करने में जुटा रहता था। खुद को गृह मंत्रालय का वरिष्ठ अधिकारी बताता था। उसने खुलासा किया कि वह खुद भी नौकरी के नाम पर ठगा जा चुका है। उसने पवन कुमार मिश्रा नाम के एक व्यक्ति का नाम लिया, जिसने खुद को गृह मंत्रालय का एक वरिष्ठ अधिकारी बताया और स्टेनोग्राफर की नौकरी के नाम पर उससे 4 लाख रुपये लिए थे। पवन ने ही उसे निजी सचिव का फर्जी आईडी कार्ड दिया था।

3 छात्रों ने सुलझा दी 2000 साल पुरानी गुत्थी, मिला 5 करोड़ का ईनाम

न्यूयार्क/स्विट्जरलैंड, एजेंसी।
पुरातत्व विभाग हमेशा दुनिया के इतिहास को जानने की कोशिश में लगा रहता है। पुरातत्व विभाग को कई जगह जमीन की गहराई में ऐसी भाषा में हजारों साल पुराने टेक्स्ट मिले हैं कि उन्हें समझना लगभग नामुमकिन है लेकिन हाल में ऐसे ही एक 2000 साल पुराने टेक्स्ट को 3 छात्रों ने डीकोड कर 5.8 करोड़ का ईनाम जीत लिया है।

इन 3 छात्रों ने 79 ई. में माउंट वेसुवियस के विस्फोट में दफन होने के दौरान आंशिक रूप से संरक्षित किए गए एक रोमन स्क्रॉल को आर्टिफीशियल इंटैलिजेंस का उपयोग करके वस्तुतः खोल दिया गया है और डिकोड किया है। अमेरिका, स्विट्जरलैंड और मिस्र के इन तीनों छात्रों ने आर्टिफीशियल इंटैलिजेंस के जरिए सुवियस विस्फोट के दौरान जले एक प्राचीन रोमन स्क्रॉल के हिस्से को डीकोड करके दिखाया है। छात्रों ने यह काम मार्च 2023 में लॉन्च किए गए जिसमें

ज्वालामुखी विस्फोट की राख में खोई हुई प्राचीन लिपियों को डिकोड करने वाली टीम को ,700,000 (5.8 करोड़ रुपए) दिए जाने का ऐलान किया गया था। वेसुवियस चैलेंज जीतने वाली सबमिशन टीम के प्रमुख यूसुफ नादेर ने कहा तीनों छात्रों ने टेक्स्ट के 15 से अधिक कॉलम को डिकोड किया, जो कि एक स्क्रॉल का लगभग 5त्न है। नादेर ने कहा, ÷मेरा मानना ??है कि टारगेट यह है कि अंततः हमारे पास ऐसे मॉडल हों जो किसी भी प्रकार के स्क्रॉल पर काम करते हों, भले ही वो किसी स्थिति में हों.÷ वेसुवियस चैलेंज इस साल एक नए भव्य पुरस्कार के साथ जारी है। इसमें,द्ब का उपयोग करके बाकी स्क्रॉल पढ़ना है। जो स्क्रॉल डिकोड किया गया वह सैकड़ों में से एक है। विजेता टीम ने जिस स्क्रोल को डीकोड किया है वह 2000 साल पुराना है और इसके टेक्स्ट में म्यूजिक और खाने पर एपिकुरियन फिलोस्फी थी कि कैसे इन दो चीजों ने लोगों को खुशी दी। नादेर ने कहा ÷यह ऐतिहासिक पुरावशेषों के एक विशाल भंडार का प्रतिनिधित्व करता है कि यदि हम इन सभी प्राचीन चीजों को रिकवर कर सकें, तो यह प्राचीन इक्विटी से प्राप्त इतिहास को और स्पष्ट कर देगा।

जॉर्डन हमले का बदला ले रहा यूएस, ईरान समर्थक कताएब हिजबुल्लाह के कमांडर को अमेरिकी सेना ने किया ढेर

वॉशिंगटन एजेंसी। अमेरिका ने ईरान समर्थक सशस्त्र समूह के एक कमांडर को हवाई हमले में मौत के घाट उतार दिया। कुछ दिनों पहले हुए अमेरिकी सेना पर हुए हमले में इस संगठन की भी भूमिका थी। सेना के सेंट्रल कमांड ने सोशल मीडिया पर कहा, यह अमेरिकी सेना के खिलाफ जॉर्डन - सीरियाई सीमा पर अमेरिकी सैन्य ठिकानों पर किए गए हमलों के जवाब है। अमेरिकी सुरक्षा बलों पर हमलों की सीधे योजना बनाने और इसमें भाग लेने के लिए जिम्मेदार एक कातेब हिजबुल्लाह कमांडर को मार गिराया गया। अमेरिकी प्रशासन की ओर से आगे जानकारी दी गई कि इस हमले में किसी निर्दोष को नुकसान नहीं पहुंचा है। बता दें कि कुछ दिनों पहले जॉर्डन - सीरियाई सीमा पर स्थित अमेरिकी सैन्य ठिकाने पर ड्रोन हमले हुए थे। इस हमले में तीन अमेरिकी सैनिक मारे गए थे। वहीं कई घायल हो गए थे। अमेरिका ने इस हमले के लिए 'ईरान समर्थित चरमपंथी समूह' को जिम्मेदार बताया था। वहीं, राष्ट्रपति जो बाइडन ने हमलावरों को चेतावनी दी थी कि अमेरिका जवाब जरूर देगा। इसके बाद अमेरिकी सेना ने जॉर्डन हमले का जवाब देते हुए इराक और सीरिया में 85 से अधिक ठिकानों पर एयर स्ट्राइक की। इस कार्रवाई में मिलिशिया समूह के छह लड़ाके मारे गए।

मुद्रक तथा प्रकाशक रंजीत राय द्वारा स्वामी आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, प्लॉट नं. सी-16 एवं 17, रोड नं. 9, पाटलिपुत्रा इंडस्ट्रीयल एरिया, पटना-800013 के पक्ष में आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड प्रेस से मुद्रित एवं सी-20, एस.के. पुरी, नियर बसावन पार्क, पटना, बिहार-800013 से प्रकाशित संपादक- देवन प्रसाद
(नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा पटना न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. BIHHIN/2013/ 49676, Email: news@pratahkiran.com, patna@ pratahkiran.com, 9212228045, 8130691216, 9971557129